राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

विश्व विजेता टाइम्स

तापमान
अधिकतम 22°C
न्यूनतम 09°C

वर्ष : 22 | अंक : 150 | लखनऊ, रविवार, 7 फरवरी, 2021 | मूल्य : 2 रुपये | पृष्ठ - 8 | www.vishwavijetatimes.com

राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने प्रादेशिक फल, शाकभाजी एवं पुष्प प्रदर्शनी का किया शुभारम्भ

जैविक खेती को बढ़ावा देना समय की मांगः योगी

लखनऊ ।

उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आज राज भवन में तीन दिवसीय प्रादेशिक फल, शाकभाजी एवं पुष्प प्रदर्शनी-2021 का शुभारम्भ किया। यह प्रदर्शनी 06 से 08 फरवरी तक आयोजित की गयी है। मुख्यमंत्री ने राजभवन में इस प्रदर्शनी के आयोजन के लिए राज्यपाल का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि जैविक खेती में अपार सम्भावनाएं मौजूद हैं। इसे बढ़ावा देना वर्तमान समय की मांग है। जैविक खेती अपनाने से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के किसानों की आय को दोगुना करने के सपने को पूरा किया जा सकता है। केन्द्र एवं राज्य सरकार किसानों की आय दोगुनी करने के लिए लगातार प्रयास कर रही हैं। किसानों को डेढ़ गुना एम0एस0पी0 दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि 04 वर्ष पूर्व जब वे अपने कार्यकाल की प्रथम प्रदर्शनी में राज भवन आए थे, तब किसानों, पुष्प उत्पादकों इत्यादि ने उस समय की आवश्यकताओं के अनुसार अच्छा प्रदर्शन किया था। 04 वर्ष के दौरान अब आवश्यकताओं के साथ-साथ प्राथमिकताएं भी बदली हैं। आज की प्रदर्शनी में पारम्परिक फल, सब्जी, पुष्प फसलों के प्रदर्शन के अलावा जैविक फल, सब्जी, पुष्प का भी प्रदर्शन किया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों की आय बढ़ाने बढ़ाने में कृषि की लागत कम करते हुए उत्पादन में बढ़ोत्तरी तथा कृषि विविधीकरण की महत्वपूर्ण भूमिका है। इससे किसानों की आय तेजी से बढेगी। उन्होंने कहा कि जनपद झांसी की एक छात्रा बुन्देलखण्ड क्षेत्र में स्ट्रॉबेरी की खेती को बढ़ावा दे रही है। गत माह वहां स्ट्रॉबेरी महोत्सव आयोजित किया गया। बुन्देलखण्ड की धरती पर स्ट्रॉबेरी महोत्सव का आयोजन देश व प्रदेश के लिए नया सन्देश है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में बुन्देलखण्ड में स्ट्रॉबेरी की सफलतापूर्वक खेती के लिए झांसी की इसी छात्रा कु0 गुरलीन चावला के प्रयासों की सराहना की है। एक अन्य किसान का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि उसने डेढ़ एकड़ क्षेत्र में स्ट्रॉबेरी की फसल उगाई, जिसमें उसकी

लागत 06 लाख रुपए आयी, जबकि फसल 40 लाख रुपए में बिकी। इस प्रकार विविधीकरण के माध्यम से उस किसान को 34 लाख रुपए की आय हुई। किसान इस प्रकार के नए प्रयोगों और कृषि विविधीकरण से अपनी आय में उल्लेखनीय बढ़ोत्तरी कर सकते हैं। उन्होंने ड्रैगन फ्रूट और ब्लैक राइस उगाने वाले किसानों का भी उल्लेख किया। ब्लैक राइस उगाने वाले किसानों को उनकी उपज का मूल्य 700 रुपए प्रति किलो मिल रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश के किसान बेहद मेहनती हैं। उन्होंने कोरोना काल के दौरान भी मेहनत में कोई कमी नहीं की। किसानों की मेहनत से आज देश और प्रदेश में अनाज का प्रचुर भण्डार मौजूद है। प्रधानमंत्री के 'आत्म निर्भर भारत' अभियान में किसान अपना भरपूर योगदान दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि कोरोना काल के दौरान प्रदेश में 119 चीनी मिलों का संचालन किया गया। गन्ना किसानों की मेहनत से आज भारत प्रचुर मात्रा में चीनी का निर्यात कर रहा है। इसमें उत्तर प्रदेश के गन्ना किसानों का भी बड़ा योगदान है। इस अवसर पर राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री ने स्मारिका का विमोचन किया। उन्होंने प्रदर्शनी में लगाए गए फल, शाकभाजी एवं पुष्प स्टॉलों का अवलोकन भी किया। कार्यक्रम के दौरान उद्यान राज्य मंत्री श्रीराम चौहान, मुख्य सचिव आर0के0 तिवारी, कृषि उत्पादन आयुक्त आलोक सिन्हा, अपर मुख्य सचिव गृह श्री अवनीश कुमार अवस्थी, अपर मुख्य सचिव राज्यपाल महेश कुमार गुप्ता, अपर मुख्य सचिव उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण मनोज सिंह सहित वरिष्ठ अधिकारीगण एवं अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। ज्ञातव्य है कि बागवानी फसलों की विविधता को एक स्थान पर जनसाधारण को दिखाए जाने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष यह प्रदर्शनी आयोजित की जाती है। यह प्रदर्शनी उत्तर भारत की सबसे पुरानी, समृद्ध एवं अनूठी प्रदर्शनी है। इस प्रदर्शनी में मुख्य रूप से उत्तर रेलवे, पूर्वोत्तर रेलवे, राजभवन, एच0ए0एल0, अधीक्षक राजकीय उद्यान, लखनऊ नगर निगम, लखनऊ विकास प्राधिकरण, उत्तर प्रदेश मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन तथा प्रदेश के विभिन्न अंचलों के किसानों द्वारा प्रतिभाग किया जा रहा है। जेल में उत्पादित शाकभाजी तथा व्यक्तिगत वर्ग के तहत गमलों में उगायी गयी सब्जियों तथा सजीव फूलों से बनी आकृतियों का प्रदर्शन इस आयोजन के प्रमुख आकर्षणों में सम्मिलित है।

यूपी के सभी विधायक खरीदेंगे टेबलेटः सीएम

उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने कागज रहित बजट सत्र के लिए विधानसभा एवं विधानपरिषद के सदस्यों को टैबलेट खरीदने को कहा है। उत्तर प्रदेश के डिप्टी सीएम दिनेश शर्मा ने बताया कि, राज्य के सभी विधायकों और विधान परिषद सदस्यों को आईपैड दिए जाएंगे। हर आईपैड की कीमत तकरीबन 50,000 रुपये होगी, आईपैड खरीद सकते हैं, उन्हें इसका भुगतान किया जाएगा। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार के मंत्रियों ने इस बारे में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा लिया है और विधायकों तथा विधान परिषद सदस्यों को बजट सत्र से पहले इसकी ट्रेनिंग दी जाएगी। दो फरवरी को, उत्तर प्रदेश के सीएम योगी आदित्यनाथ ने निर्देश दिया था कि राज्य कैबिनेट अगली बार एक आनलाइन बैठक आयोजित करेगा जिसके लिए मंत्रियों को उचित ट्रेनिंग दी जाना चाहिए। सीएम योगी ने कहा था कि, ॐआधुनिक तकनीक विभिन्न कार्यों को जल्दी और पारदर्शी तरीके से करने में काफी मददगार है। सीएम योगी ने कहा था कि विधान मंडल सत्र से पहले सभी सदस्यों (विधायकों) को भी टैबलेट मुहैया कराये जाएं और टैबलेट के प्रभावी इस्तेमाल के लिए विधायकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किया जाए। योगी ने कहा था कि , आधुनिक तकनीक विभिन्न कार्यों के जल्द एवं पारदर्शी संपादन में बेहद मददगार है और राज्य सरकार ई-ऑफिस व्यवस्था को प्रभावी बनाने के लिए निरंतर काम कर रही है

एक नजर

भारत में सबसे तेजी से 50 लाख लोगों का टीकाकरण करने वाला देश बना

नई दिल्ली, । भारत ने केवल 21 दिनों में 50 लाख लोगों का कोरोना टीकाकरण कर सबसे तेजी से यह उपलब्धि हासिल करने वाले देशों में सुमार हो गया है। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने शनिवार को एक बयान में कहा कि भारत के बाद अमेरिका ने 24 दिनों में और ब्रिटेन और इजराइल ने 45 दिनों में 50 लाख लोगों को टीकाकरण करने में यह कामयाबी हासिल की थी। मंत्रालय के मुताबिक भारत ने कोरोना के कुल परीक्षण के मामले में भी एक अभूतपूर्व रिकॉर्ड बनाया है। देश में आज तक कोराना परीक्षण का 20 करोड़ से पार पहुंच गया, जिसमें पिछले 24 घंटों के दौरान 7,40,794 नमूनों का परीक्षण किया गया है। देश भर में 1214 सरकारी और 1155 निजी प्रयोगशालाओं समेत कुल 2369 जांच प्रयोगशालाओं से रोजना इसके परीक्षण की क्षमता को बढ़ाया जा रहा है। मंत्रालय ने बताया कि देश में सक्रिय मामले डेढ़ लाख से भी कम हो गए हैं जो आठ महीनों में सबसे कम है। अब तक 54 लाख से अधिक स्वास्थ्य कर्मचारियों का टीकाकरण किया गया है। देश में संक्रमण दर अब 1.37 प्रतिशत है।

सुब्रह्मण्यन बनें राष्ट्रीय संरक्षा परिषद के अध्यक्ष

नई दिल्ली । निर्माण क्षेत्र की निजी कंपनी एलएंडटी लिमिटेड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी और प्रबंध निदेशक, एस. एन. सुब्रह्मण्यन को तीन साल की अवधि के लिए राष्ट्रीय संरक्षा परिषद का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। केंद्रीय श्रम और रोजगार मंत्रालय ने शनिवार को यहां यह जानकारी देते हुए बताया कि श्री सुब्रह्मण्यन के अनुभव से राष्ट्रीय संरक्षा परिषद का मार्गदर्शन मिलने की संभावना है, जो नई व्यावसायिक सुरक्षा स्वास्थ्य और कार्य शर्तों, 2020, के तहत कार्य स्थानों में सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक प्रमुख भूमिका निभाएगी। सुब्रह्मण्यन एक प्रतिष्ठित इंजीनियर हैं, जिन्होंने कई वर्षों तक एलएंडटी के बुनियादी ढांचे के कारोबार को गति दी है और यह देश का सबसे बड़ा निर्माण संगठन है और दुनिया में 14वें स्थान पर है। एलएंडटी देश की सबसे बड़ी इंजीनियरिंग कंपनियों में से एक है, जो भारी इंजीनियरिंग, रक्षा, जहाज, बिल्डिंग आदि का निर्माण

गाजीपुर से गिरफ्तार हुआ छत्तीसगढ़ कांस्टेबल, हैंड ग्रेनेड व प्रतिबंधित पिस्टल के साथ धराया

रायपुर। छत्तीसगढ़ पुलिस में कांस्टेबल और उसके साथी को गाजीपुर पुलिस ने प्रतिबंधित पिस्टल और हैंडग्रेनेड के साथ अरेस्ट किया है। यूपी पुलिस ने बिहार से बारा के जरिए यूपी में प्रवेश करते व?त एक गुप्त सूचना के आधार पर दोनों को बारा सीमा में रोका और फिर तलाशी में कई आपत्तिजनक वस्तुएं बरामद हुई हैं। उनके कब्जे से तमंचा, पिस्टल, कारतूस के साथ हैंडग्रेनेड बरामद होने पर पुलिस थाने लाया गया और सख्ती से पूछताछ की गई। लगातार सीमा क्षेत्र में मूवमेंट और गतिविधियों के संबंध में भी पूछताछ की। पुलिस ने दोनों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करके अदालत में पेश किया, जहां से अपराधियों को जेल भेज दिया गया। गहमर थाना क्षेत्र में सोमवार की रात पुलिस ने स्वॉट के साथ मिलकर कांस्टेबल और उसके साथी को पकड़ा है। पुलिस अधीक्षक ग्रामीण अनिल कुमार झा ने बताया कि गहमर थाना अंतर्गत टीम वाहनों की तलाशी ले रही थी तभी दंगल वीर बाबा मंदिर बारा के पास बक्सर की ओर से आ रहे दो युवकों को पुलिस ने रोक लिया।

उनकी तलाशी ली गयी, तो उनके पास से एक अदद रिवाल्वर 32 बोर, तीन जिंदा कारतूस 32 बोर, एक अदद पिस्तौल 9 एमएम, दो अदद जिंदा कारतूस व एक अदद हैंड ग्रेनेड मिले, जिसके बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

समय पर न्याय देने देश में विश्व स्तर की न्यायिक प्रणाली की जरूरत :पीएम मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को कहा कि सरकार और न्यायपालिका की जिम्मेदारी है कि वे विश्व स्तर की न्यायिक प्रणाली विकसित करें, ताकि समाज के अंतिम व्यक्ति को न्याय आसानी से और समय पर मिल सके। गुजरात हाई कोर्ट के हीरक जयंती समारोह को ऑनलाइन संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि वकीलों और मुकदमे करने वालों को एक क्लिक पर मामले की सभी जानकारी उपलब्ध होने से न्याय में आसानी हुई है। उन्होंने कहा, ÷इस बात से विदेशी निवेशकों के बीच विश्वास बढ़ा है कि भारत में उनके न्यायिक अधिकार सुरक्षित हैं। 2018 में वर्ल्ड बैंक ने अपनी व्यापार रिपोर्ट में इस सहजता की और नेशनल ज्यूडिशियल डेटा ग्रिड की प्रशंसा की है। उन्होंने यह भी कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का उपयोग न्यायिक प्रणाली को भविष्य के लिए तैयार करने की प्रक्रिया का हिस्सा बनाने के लिए किया जा रहा है। एआई से न्यायपालिका की दक्षता और गति बढ़ेगी। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, ÷देश में डिजिटल तौर पर हुए विभाजन को खत्म करने और आम लोगों की मदद करने के लिए, हाई कोर्ट और जिला अदालतों में ई-सेवा केंद्र खोले गए हैं। महामारी के चलते ऑनलाइन और ई-लोक अदालत अब न्यू नॉर्मल हो गया है। गुजरात की जूनागढ़ ई-कोर्ट अदालत में पहली लोक अदालत का आयोजन हुआ। उन्होंने आगे कहा, ई-लोक अदालत आसानी के साथ समय पर न्याय दिलाने का माध्यम बन गया है। देश के 24 राज्यों में कई लाख मामले ई-लोक अदालतों में आ रहे हैं और सुलझ रहे हैं। हमारी न्यायिक प्रणाली में भी ऐसी ही गति, सुविधा और विश्वास की जरूरत है।

गुजरात हाई कोर्ट के 60वें स्थापना दिवस पर पीएम ने जारी किया डाक टिकट

अहमदाबाद। आज गुजरात उच्च न्यायालय का हीरक जयंती समारोह मनाया जा रहा हैं. गुजरात उच्च न्यायालय का आज 60वां स्थापना दिवस हैं. इस अवसर पर गुजरात का डाक टिकट भी जारी किया गया हैं. पीएम मोदी ने समारोह को संबोधित करते हुए गुजरात हाईकोर्ट की डायमंड जुबली के मौके पर सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं दी. गत वर्षों में अपनी कानूनी समझ, अपनी विद्वत्ता और बौद्धिकता से गुजरात उच्च न्यायालय और बार ने एक विशिष्ट पहचान बनाई है. पीएम मोदी ने कहा कि गुजरात ने सत्य और इन्साफ के लिए जिस कर्तव्य और निष्ठा से काम किया है, अपने संवैधानिक कर्तव्यों के लिए जो तत्परता दिखाई है, उसने भारतीय न्याय व्यवस्था और भारत के लोकतंत्र दोनों को ही मजबूती देने का काम किया है. हमारे संविधान में कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका को सौंपी गई जिम्मेदारी, हमारे संविधान के लिए प्राणवायु की तरह है. पीएम मोदी ने कहा कि हमारी न्यायपालिका ने संविधान की प्राणवायु की सुरक्षा करने का दायित्व पूरी ईमानदारी से निभाया है. भारतीय समाज में रूल ऑफ लॉ, सदियों से सभ्यता और सामाजिक ताने-बाने की बुनियाद रहा है. हमारे प्राचीन ग्रंथों में कहा गया है- न्यायमूलं सुराज्यं स्यात. यानी, सुराज्य की जड़ ही न्याय में है. न्यायपालिका के प्रति भरोसे ने सामान्य नागरिक के मन में एक आत्मविश्वास पैदा किया है. सच्चाई के लिए खड़े होने की उसे ताकत दी है

शांतिपूर्ण तरीके से खत्म हुआ चक्का जाम, राकेश टिकैत बोले-

सरकार कृषि क़ानूनों को वापस ले नहीं तो आंदोलन जारी रहेगा

गाजीपुर बॉर्डर।

केंद्र सरकार द्वारा बनाए गए नये कृषि कानूनों के खिलाफ किसानों ने आज देशभर में चक्का जाम किया। उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड को छोड़कर देश के बाकी राज्यों में दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक ये चक्का जाम रहा। इस दौरान किसानों ने सड़कों पर जाम लगाया तो कई जगह सड़कों पर सन्नाटा छाया रहा। 3 बजे बाद किसान नेताओं ने देशव्यापी चक्का जाम खत्म किया वहीं किसान युनियन के नेता राकेश टिकैत ने कहा, सरकार कृषि क़ानूनों को वापस ले और स्र्स्क पर क़ानून

बनाए नहीं तो आंदोलन जारी रहेगा। हम पूरे देश में यात्राएं करेंगे और पूरे देश में आंदोलन होगा। किसान संगठनों द्वारा आज देशभर में चक्का जाम के आह्वान पर किसानों ने शाहजहांपुर (राजस्थान-हरियाणा) बॉर्डर के पास राष्ट्रीय राजमार्ग पर चक्का जाम किया।

कई मेट्रो स्टेशन अस्थाई रूप से बंद

तीन नये कृषि कानूनों को वापस लेने की मांग को लेकर आंदोलनरत किसानों के शनिवार को चक्का जाम के आह्वान के मद्देनजर दिल्ली मेट्रो के कई स्टेशनों को अस्थाई रूप से बंद कर दिया गया। चक्का जाम के परिप्रेक्ष्य में विश्वविद्यालय, लाल किला, जामा मस्जिद , जनपथ, केंद्रीय सचिवालय, खान मार्केट और नेहरू प्लेस मेट्रो स्टेशनों पर प्रवेश/निकास द्वारों को बंद कर दिया गया है। दिल्ली मेट्रो रेल कारपोरेशन(डीएमआरसी) ने ट्वीट कर कहा, '' अस्थाई रूप से प्रवेश/निकास के लिए बंद मेट्रो स्टेशनों पर इंटरचेंज की सुविधा रहेगी। दिल्ली पुलिस के अधिकारियों ने शुक्रवार को डीएमआरसी के अधिकारियों से स्थिति के मद्देनजर आज कुछ मेट्रो स्टेशनों को बंद रखने के लिए कहा था। दिल्ली पुलिस ने चक्का जाम के दौरान किसी प्रकार की हिंसक स्थिति से निपटने के लिए दिल्ली की सीमास्थलों पर सुरक्षा के लिए सख्त कदम उठाए हैं।

चीन के साथ बातचीत का नहीं दिखा कोई असर : जयशंकर

नई दिल्ली।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि भारत और चीन की आर्मी के शीर्ष कमांडर पूर्वी लद्दाख में सैनिकों को पीछे हटाने की प्रक्रिया को लेकर नौ दौर की बातचीत कर चुके हैं और भविष्य में भी ऐसी बातचीत की जाती रहेंगी। जयशंकर ने विजयवाड़ा में शनिवार को कहा कि अब तक हुई बातचीतों का जमीन पर कोई असर दिखाई नहीं दिया है। उन्होंने कहा कि, सैनिकों के पीछे हटने का मुद्दा बहुत पेचीदा है। यह सेनाओं पर निर्भर करता है। आपको अपनी (भौगोलिक) स्थिति और घटनाक्रम के संबंध में पता होना चाहिये। सैन्य कमांडर इस पर काम कर रहे हैं। दरअसल, जयशंकर से जब

सवाल किया गया था कि क्या भारत और चीन के सैनिकों के बीच हुई झड़पों को लेकर दोनों देशों के बीच मंत्रिस्तरीय बातचीत हो सकती है। इस प्रश्न पर विदेश मंत्री ने यह जवाब दिया। जयशंकर ने कहा कि, सेना के कमांडर अब तक नौ दौर की बातचीत कर चुके हैं। हमें लगता है कि कुछ प्रगति हुई है, मगर इसे निराकरण के तौर पर नहीं देखा जा सकता। जमीन पर इन वार्ताओं का असर दिखाई नहीं दिया है। विदेश मंत्री ने कहा कि उन्होंने और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने गत वर्ष अपने-अपने समकक्षों से बात की थी और इस बात पर सहमति बनी थी कि कुछ इलाकों में सैनिकों को पीछे हटना चाहिए। बता दें कि भारत और चीन के बीच गत वर्ष पांच मई से पूर्वी लद्दाख में सैन्य गतिरोध चल रहा है। तनाव खत्म करने लिये दोनों देशों के बीच कई दौर की सैन्य और राजनयिक स्तर की बातचीत हो चुकी हैं, लेकिन अब तक कोई समाधान नहीं निकल पाया है।

अगले महीने से शुरू हो जाएगा 50 साल के ऊपर वाले लोगों का वैक्सीनेशन

नई दिल्ली।

राजधानी दिल्ली में वैक्सीन लगवाने वालों का आंकड़ा शुक्रवार शाम एक लाख को पार कर गया है और यह दिल्ली के लिए राहत की बात है लेकिन अभी आम लोगों का नंबर आने में थोड़ा लंबा इंतजार करना पड़ सकता है। हालांकि, आगामी कुछ ही दिनों में 50 साल से ज्यादा और ऐसे लोगों को वैक्सीन लगनी शुरू हो जाएगी जो किसी ना किसी बीमारी का शिकार हैं लेकिन युवाओं व अन्य लोगों को वैक्सीन लगवाने में थोड़ा समय लगेगा।

दरअसल दिल्ली में कोरोना वैक्सीनेशन के पहले फेज में करीब 51 लाख लोगों को वैक्सीन लगाई जानी है। इसमें करीब ढाई लाख हेल्थकेयर वर्कर्स, 6 लाख फ्रंटलाइन वर्कर्स और 42 लाख ऐसे लोग शामिल हैं जिनकी उम्र 50 साल से ज्यादा है या फिर वह लोग जो पहले से किसी बीमारी से जूझ रहे हैं।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन की ओर से भी कहा गया है कि मार्च से 50 साल से ज्यादा उम्र व पहले से किसी बीमारी के शिकार लोगों को वैक्सीन लगना शुरू हो जाएगी। ऐसे में अन्य आयु वर्ग के लोगों के मन में यह सवाल बार-बार आ रहा है कि आखिर उनका नंबर कब आएगा। दिल्ली स्वास्थ्य विभाग से मिली जानकारी के मुताबिक अप्रैल तक अन्य लोगों का नंबर वैक्सीनेशन के लिए आ सकता है। सरकार अपनी तरफ से वैक्सीनेशन में तेजी लाने के लिए सभी संभव प्रयास कर रही है। बता दें कि फिलहाल दिल्ली में एक लाख वैक्सीनेशन का टारगेट ही पूरा हुआ है। यह दिल्ली सरकार की ओर से तय किए गए टारगेट से कम है। हालांकि दिल्ली सरकार का मानना है कि चूंकि फ्रंटलाइन वर्कर्स की वैक्सीनेशन शुरू हो गई है, इसलिए अब इसमें और तेजी आएगी ।

किसानों के चक्का जाम को राहुल गांधी का समर्थन, बोले-देशहित में है यह सत्याग्रह

नई दिल्ली।

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने किसान संगठनों की ओर से आहूत 'चक्का जाम' का समर्थन करते हुए शनिवार को कहा कि अन्नदाताओं का सत्याग्रह देश हित में है और तीनों कृषि कानून राष्ट्र के लिए घातक हैं। उन्होंने ट्वीट किया, ''अन्नदाता का शांतिपूर्ण सत्याग्रह देशहित में है , ये तीन कानून सिर्फ किसान-मजदूर के लिए ही नहीं, जनता व देश के लिए भी घातक हैं। पूर्ण समर्थन!'' उल्लेखनीय है कि किसान संगठनों ने शनिवार को 'चक्का जाम' का आह्वान किया है। किसान नेताओं ने सोमवार को कहा था कि वे छह फरवरी की दोपहर 12 बजे से अपराह्न तीन बजे तक सड़कों को अवरुद्ध करेंगे। राहुल गांधी ने पेट्रोल-डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी को लेकर भी केंद्र सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया, ''मोदी सरकार ने देश और घर, दोनों का बजट बिगाड़ दिया है। पंजाब और हरियाणा में नए केन्द्रीय कृषि कानूनों और अन्य मुद्दों को लेकर प्रदर्शन कर रहे किसानों ने कई जगह सड़कें अवरुद्ध कर दीं। किसान यूनियनों ने सोमवार को घोषणा की थी प्रदर्शन स्थलों के आसपास के इलाकों में इंटरनेट पर पाबंदी लगाने, अधिकारियों द्वारा कथित रूप से प्रताड़ित किये जाने और अन्य मुद्दों को लेकर वह छह फरवरी दोपहर 12 बजे से तीन बजे तक देशव्यापी चक्का जाम के दौरान विरोधस्वरूप राष्ट्रीय और राजकीय राजमार्ग अवरुद्ध करेंगे। अधिकारियों ने कहा कि पुलिस ने सुरक्षा बढ़ा दी है और यातायात का मार्ग बदलने के लिये सभी प्रबंध कर लिये हैं।

विभिन्न किसान निकायों से जुड़े प्रदर्शनकारी किसानों ने शनिवार को विभिन्न स्थानों पर राजकीय और राष्ट्रीय राजमार्गों को अवरुद्ध कर दिया, जिसके कारण यात्रियों को असुविधा का सामना करना पड़ा। भारती किसान यूनियन (एकता उग्रहां) के महासचिव सुखदेव सिंह कोकरिकलां ने कहा कि वे पंजाब के संगरूर, बरनाला और बठिंडा समेत 15 जिलों के 33 स्थानों पर सड़कें अवरुद्ध कर रहे हैं। इससे पहले सुबह के समय किसानों ने दोनों राज्यों में चक्का जाम के लिये प्रदर्शन स्थलों पर एकत्रित होना शुरू कर दिया। अंबाला के निकट शंभू में पंजाब-हरियाणा सीमा पर एक प्रदर्शनकारी ने कहा, ॐबुजुर्ग और युवा चक्का जाम में हिस्सा लेने के लिये यहां एकत्रित हुए हैं। केंद्रीय कृषि कानूनों के खिलाफ आंदोलन कर रहीं किसान यूनियनों के समर्थन में किसानों ने राजस्थान में शनिवार को अनेक जगह श्चक्का जाम किया।

काबुल विस्फोट में 4 नागरिक हुए घायल

काबुल । सरकार और आतंकवादी समूह के बीच शांति वार्ता के दौरान अफगानिस्तान में आतंकी हमले की सूचना दी जा रही है। एक नए हमले में शनिवार सुबह काबुल में एक दुकान में हुए विस्फोट में चार नागरिक घायल हो गए। खबर के मुताबिक, ब्लास्ट काबुल के पीडी 1 जिले में बाग़-ए-क़ाज़ी इलाके में एक दुकान पर हुआ था। विस्फोट का प्रकार अभी तक स्पष्ट नहीं है। तालिबान सहित हमले की जिम्मेदारी अभी तक किसी ने नहीं ली है। अधिक जानकारी की प्रतीक्षा है। शांति के लिए चल रहे प्रयासों के बावजूद देश में हिंसा में तेजी से वृद्धि के बीच हमला हुआ। इससे पहले सोमवार को काबुल के पीडी 7 में एक सेना के वाहन पर हुए विस्फोट में एक नागरिक और सुरक्षा बल का एक सदस्य मारा गया था। काबुल पुलिस ने पुष्टि की थी कि काबुल के पीडी 7 में सेना के वाहन पर हुए विस्फोट में एक नागरिक और एक सुरक्षा बल का एक सदस्य मारा गया था और सुरक्षा बल का एक अन्य सदस्य घायल

प्रथम व तृतीय शनिवार व रविवार को आयोजित होगा विद्युत उपभोक्ता शिकायत निवारण महाकैम्प

देवरिया

विद्युत उपभोक्ताओं के समस्याओं और शिकायतों के त्वरित समाधान के लिए जिलाधिकारी अमित किशोर ने एक अभिनव पहल की है। इसके द्वारा संपूर्ण समाधान दिवस, तहसील एवं थाना दिवस की भांति माह के प्रथम एवं तृतीय शनिवार व रविवार को सभी विद्युत उपखंड कार्यालयों पर एक प्रशासनिक अधिकारी एवं विद्युत विभाग के अधिकारी को नोडल अधिकारी नामित किया है तथा उन्हें निर्देश दिया है कि वे अपने तैनाती के कार्य स्थलो पर उपस्थित रहकर विद्युत विभाग के उपभोक्ताओं के शिकायतों का त्वरित निस्तारण मौके पर ही सुनिश्चित कराएंगे।इस महा कैंप का आयोजन पूर्वाहन 11 बजे से अपराह्न 3 बजे तक सुनिश्चित होगा तथा निस्तारण की आख्या अगले दिन अपरान्ह 12 बजे तक उसकी सूचना भी अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराएंगे।

जिलाधिकारी श्री किशोर ने उपभोक्ता शिकायत निवारण महाकैंप के आयोजन के इस पहल के संबंध में बताया है कि संपूर्ण समाधान दिवस में विद्युत विभाग से संबंधित अत्याधिक शिकायतें प्राप्त होती रहती है,जिनका समाधान तकनीकी कारणों से मौके पर नहीं हो पाता है,इसके दृष्टिगत उपभोक्ताओं के समस्याओं का त्वरित निस्तारण हो इसके लिए संपूर्ण समाधान दिवस की भांति प्रत्येक विद्युत उपखंड कार्यालयों पर माह के प्रथम व तृतीय शनिवार व रविवार को नामित नोडल अधिकारियों की अध्यक्षता में विद्युत समाधान दिवस का आयोजन होगा। इसके लिए विद्युत उपखंडवार टीम भी गठित किया गया है। उन्होंने सभी नामित अधिकारियों और टीम में जुड़े अवर अभियंताओं को इस निर्देश का कड़ाई से पालन किए जाने एवं विद्युत उपकेंद्र पर उपभोक्ताओं के समस्याओं का समाधान मौके पर ही प्राथमिकता के साथ सुनिश्चित कराए जाने का निर्देश दिया है।

जिलाधिकारी ने माह फरवरी के प्रथम शनिवार एवं रविवार 7 फरवरी के नामित नोडल अधिकारियों के विवरण में बताया कि स्वयं मेरे एवं अधीक्षण अभियंता जीसी यादव द्वारा गौरी बाजार विद्युत उपकेंद्र पर इस समाधान दिवस में उपस्थित रहकर समस्याओं का निस्तारण किया जाएगा। 7 फरवरी को ही रामलीला मैदान विद्युत उप केंद्र पर मुख्य विकास अधिकारी शिव शरणप्पा जीएन एवं अधिशासी अभियंता विद्युत वितरण खंड देवरिया रामसेवक राम, सलेमपुर विद्युत उपकेंद्र पर अपर जिलाधिकारी प्रशासन कुंवर पंकज एवं अधिशासी अभियंता विद्युत वितरण खंड सलेमपुर बृजभान सिंह, बरहज विद्युत उपकेंद्र पर अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व उमेश कुमार मंगला एवं अधिशासी अभियंता विद्युत वितरण खंड बरहज सचिन कुमार सिन्हा, बैतालपुर विद्युत उपकेंद्र पर मुख्य राजस्व अधिकारी अमृत लाल बिंद एवं अधिशासी अभियंता विद्युत वितरण खंड गौरी बाजार बृजेश कुमार, बघौचघाट विद्युत उपकेंद्र पर उप जिलाधिकारी सदर सौरभ सिंह व अधिशासी अभियंता विद्युत परीक्षण खंड देवरिया राजू चतुर्वेदी, बरहज ग्रामीण विद्युत उपकेंद्र पर उप जिलाधिकारी बरहज व एसडीओ-1 विद्युत बरहज गणेश मिश्रा, सलेमपुर ग्रामीण विद्युत उपकेंद्र पर उप जिलाधिकारी सलेमपुर व एसडीओ-1 विद्युत सलेमपुर विवेक कुमार, रुद्रपुर विद्युत उपकेंद्र पर उप जिलाधिकारी रुद्रपुर एवं एसडीओ-2 विद्युत रुद्रपुर अनिल कुमार पाल, भाटपाररानी विद्युत उपकेंद्र पर उप जिलाधिकारी भाटपाररानी एवं एसडीओ-2 विद्युत भाटपाररानी कामतानाथ पांडेय, देसही देवरिया विद्युत उप केंद्र पर तहसीलदार रुद्रपुर एवं एसडीओ-1 विद्युत गौरी बाजार योगेश सिंह यादव, उपखंड कार्यालय प्रथम विद्युत उपकेंद्र पर तहसीलदार सदर एवं एसडीओ-1 विद्युत देवरिया नवदीप कुमार सिंह, उसरा बाजार विद्युत उप केंद्र पर अपर उप जिलाधिकारी एवं एसडीओ 2 विद्युत देवरिया विजय कुमार जायसवाल, सतराव विद्युत उपकेंद्र पर उप जिलाधिकारी न्यायिक बरहज एवं एसडीओ 2 विद्युत बरहज बी पी सिंह, पथरदेवा विद्युत उपकेंद्र पर तहसीलदार भाटपाररानी एवं एइ(एम) विद्युत परीक्षण खंड देवरिया प्रत्यूष बल्लभ, गजडवा विद्युत उपकेंद्र पर तहसीलदार सलेमपुर एवं एइ(एम)विद्युत परीक्षण खंड सलेमपुर रोहित पांडेय तथा तेलिया कला विद्युत उपकेंद्र पर तहसीलदार बरहज एवं एइ(एम) विद्युत परीक्षण खंड बरहज अशोक भारती इस समाधान दिवस में उपस्थित रहकर समस्याओं का निस्तारण करेंगे। इस प्रकार जनपद के कुल 17 विद्युत उपकेंद्र हेतु इस आयोजन के लिए नोडल अधिकारियों की टीम गठित की गई है।

सैनिक के खेत में जबरन प्रधान करवा रहा शौचालय निर्माण

दबंगई

- विरोध करने पर परिवार को मिल रही है जान माल की धमकी

सहजनवा-गोरखपुर ।

सहजनवा गोरखपुररू. एक तरफ जहा फौजी देश की जमीन के साथ ही साथ पूरे देश की सुरक्षा करता है और उसी की ही जमीन दबंगो से सुरक्षित नही रह पा रही है।

ताजा मामला सहजनवा तहसील क्षेत्र का है। मुख्यमंत्री के गृह जनपद गोरखपुर जिले के गीडा थाना अंतर्गत आने वाले ग्राम साथीपार का जहां पर हो रहा एक फौजी के साथ अन्याय वहाँ के प्रधान के द्वारा अपनी दबंगई दिखाई जा रही है। जहा एक सैनिक देश की सुरक्षा तन और मन दोनों से करता है वो हंसते हंसते देश के ऊपर अपने आप को भी बलिदान कर देता है ये सोचकर कि वो रहे या न रहे देश सुरक्षित रहना चाहिए और जब उस सैनिक को ये पता चलता है कि उसका स्वयं का घर और जमीन नही सुरक्षित है तो उस पर क्या बीतेगी प्रधान के द्वारा उसके भाई एवं पूरे परिवार को जान माल की धमकी दी जा रही है तो ऐसे में वो क्या करे वह स्थानीय प्रशासन से सहयोग की उम्मीद करता है मगर वहाँ से भी उसे निराशा ही हाथ लगती है ।

हम बात कर रहे है गोरखपुर के सहजनवां तहसील के पिपरौली ब्लाक के ग्राम पंचायत साथीपार गांव की जहाँ प्रमोद सिंह जो कि बीएसएफ के जवान है और इस समय पश्चिम बंगाल में सेवा दे रहे है उन्होंने आरोप लगाया कि उनके खेत जिसमे उनका परिवार कृषि करता है उस खेत मे जबरन ग्राम प्रधान सामुदायिक शौचालय का निर्माण करवा रहा है और जब इनका परिवार विरोध करता है तो प्रधान द्वारा जान माल की धमकी दी जाती है जिससे पूरे परिवार में भय व्याप्त है मीडिया से बात करते हुवे सैनिक ने बताया कि इस जमीन पर न्यायालय के द्वारा निर्माण पर रोक भी लगाया गया है इसके बावजूद प्रधान अधिकारियों के मिलीभगत से निर्माण करवा रहा है।

जब परिवार की सुरक्षा हेतु सैनिक ने स्थानीय थाना गीडा से बात किया तो वँहा भी उसे आश्वासन के अलावा कुछ ना मिला ।इसी क्रम में सैनिक ने जब उपजिलाधिकारी सहजनवा सुरेश राय से बात किया तो उनके आदेश पर शौचालय निर्माण को रोक लगवा दिया गया लेकिन बाद में फिर से निर्माण शुरू हो गया।सवाल प्रशासन पर ये उठता है कि जब मामला संज्ञान में था तो निर्माण कैसे शुरू हो गया यहाँ ये कहना अतिश्योक्ति नही होगी कि सब कुछ अधिकारियों के मिलीभगत से ही हो रहा है। और जब इस मामले के संबंध में जिम्मेदार से जानकारी लेना चाहा तो उच्च अधिकारी जानकारी देने से कतराते नजर आए।

समाजवादी मजदूर सभा की जिला कार्यकारिणी घोषित

गठन

- जिला महासचिव हिमांशु खरकया व जिला कोषाध्यक्ष बने संजय

उरई(जालौन) ।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के निर्देश पर समाजवादी मजदूर सभा के प्रदेश अध्यक्ष रामगोपाल पुरी की अनुमति पर समाजवादी पार्टी के नगर अध्यक्ष वेदप्रकाश यादव की अध्यक्षता में आज समाजवादी पार्टी जिला कार्यालय में समाजवादी मजदूर सभा की जिला कार्यकारिणी का गठन कर दिया गया। जिसमें समाजवादी मजदूर सभा का जिला महासचिव हिमांशु खरकया को मनोनीत किया गया। वहीं संजय सिंह जाटव को जिला कोषाध्यक्ष और शिवम ओझा को जिला प्रवक्ता बनाया गया है।

समाजवादी मजदूर सभा के जिलाध्यक्ष अजय गौतम महाराज ने नवनियुक्त पदाधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आपसी मतभेद भुलाकर एकजुटता से काम करे और ज्यादा से ज्यादा लोगों को समाजवादी पार्टी में जोड़कर मजबूत बनाए। इस मौके पर नवनियुक्त पदाधिकारियों में उपाध्यक्ष अनूप बाल्मीकि, राजीव पटेल, अभय कुमार सिंह, नरेन्द्र यादव, जयंत राठौर, सचिव अरविन्द्र पाल, मनोज बाल्मीकि, जुबेर बेग, राहुल पाल, नवनीत कुमार, श्याम दोहरे, आशीष दोहरे, आशीष कुमार अपने, शैलेन्द्र सिंह ठाकुर, मुकुल शर्मा, आशीष श्रीवास, सदस्य अंशु चौधरी, आलोक गौतम, अजय वर्मा आदि को मनोनीत किया गया।

लम्बित वादों का शीघ्र निस्तारण करें: डीएम

सीतापुर। जिलाधिकारी विशाल भारद्वाज की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में अभियोजन कार्यों की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुयी। बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने निर्देश दिये कि लम्बित वादों का शीघ्र निस्तारण कराया जाये तथा दोषियों को दण्ड अवश्य मिले, इसके लिये प्रयास किया जाये। जिलाधिकारी ने कहा कि अपील योग्य मामलों में अपील का प्रस्ताव समय से कर दिया जाये।आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों के विरूद्ध दायर वादों में नियमित रूप से पैरवी करते हुये कड़ी सजा दिलायी जाये। जिलाधिकारी ने महिला संबंधी वादों, एससी/एसटी एक्ट/जघन्य अपराधों एवं संगठित अपराधों के मामलों में पुलिस एवं अन्य सभी संबंधित विभागों से समन्वय बनाते हुये तेजी कार्यवाही कराने के निर्देश दिये, जिससे सफलता की दर में वृद्धि हो सके तथा तत्परता से वादों को निस्तारण हो सके।

एल 2 हास्पिटल खैराबाद में न बनाये जाने के लिए अध्यक्ष ने दिया ज्ञापन

परेशानी

- सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में हॉस्पिटल होन पर लोगों को हो रही दिक्कत

सीतापुर ।

खैराबाद नगर पालिका अध्यक्ष हाजी जलीस अहमद अंसारी ने क्षेत्रीय सभासदो सहित डीएम को दिया ज्ञापन कहा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र को दोबारा एल 2 कोरोना अस्पताल बनाया जा रहा है जहा घनी आबादी का क्षेत्र है जहां पर 60 प्रतिशत आबादी गरीबों बुनकरों की है इसके अलावा 25 प्रतिशत गरीब एवं अन्य समाज के मजदूरी करने वाले लोग रहते हैं जिनका इलाज समय-समय पर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र खैराबाद पर होता है गर्भवती महिलाओं का इलाज टीका प्रसव आदि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र खैराबाद में ही होता है इससे पूर्व मे लॉकडाउन के समय खैराबाद की जनता को बड़ी परेशानी उठानी पड़ी थी और लगभग 3 माह खैराबाद हॉटस्पॉट पूरा कस्बा रहा था जहा राजकीय बालिका इंटर कॉलेज खैराबाद व कोचिंग सेंटर है काफी दिक्कत होती है इसलिए खैराबाद एल 2 हॉस्पिटल बाहर किसी अन्य स्थल पर बनाया जाए ताकि हम लोगों की जिंदगी सुचारू रूप से चल सके छात्र-छात्राएं सुरक्षित शिक्षा ग्रहण कर सकें उन्होने कहा कि समस्त सभासद व नगर के लोग जिलाधिकारी से अपील के साथ ज्ञापन दिया।

वहीं पर उपस्थित सुमन हाजी अहमद जुबेर अहमद मो0 वारिस अवध बिहारी मिश्रा बाबूराम सालिघ परवीन उमेश जायसवाल कुरैशा आदि लोग उपस्थित रहे।

रात के अंधेरे में चोरों ने चटकाये ताले

कोंच(जालौन)। रात के अंधेरे में चोरों ने एक घर के ताले चटकाकर नगदी सहित सोने चांदी के जेवर पार कर दिये।प्राप्त जानकारी के अनुसार नगर के मुहल्ला जवाहर नगर निवासी दीपक राठौर पुत्र राजेश गुरुवार, शुक्रवार की रात अपने परिजनों के साथ घर के अन्दर कमरे में सो रहा था तभी अज्ञात चोरों ने अलमारी, बख्शे के ताले चटकाकर नगदी समेत सोने चांदी के जेवर पार कर दिये और सो रहे परिजनों को इसकी आहट तक नहीं सुनाई दी।वहीं सुबह नींद से जागे परिजनो ने कमरे में सामान अस्त व्यस्त पड़ा हुआ और अलमारी, बख्शे खुले देखे तो उनके होश उड़ गये।उक्त घटना की सूचना मिलने पर प्रभारी निरीक्षक इमरान खान व सागर चौकी प्रभारी संजीव कटियार ने मौके पर पहुंचकर जांच पड़ताल की और परिजनों सहित आसपास के लोगों से घटना की जानकारी ली।

संक्षिप्त समाचार

तमंचे व कारतूस संग मेघदूत गिरफ्तार

गाजीपुर। सदर कोतवाली पुलिस ने गुरुवार की शाम कैथवलिया के पास से एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया। गिरफ्तार अभियुक्त के पास से तमंचा और कारतूस बरामद किया गया। इस सम्बंध में सदर कोतवाल विमल मिश्रा ने बताया कि पुलिस अधीक्षक डा. ओमप्रकाश सिंह के निर्देशन में अपराध एवं अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के क्रम में उपनिरीक्षक सुनील कुमार तिवारी, कांस्टेबल अमित पासवान एवं खुदाईपुरा चौकी प्रभारी सुनील शर्मा आलमपट्टी पर वाहनों की चेकिंग कर रहे थे। इसी बीच शाम को करीब छह बजे मुखबिर की सूचना पर कैथवलिया ओवरब्रिज के पास से एक युवक को गिरफ्तार कर लिया गया। तलाशी लेने पर उसके पास से 315 बोर का एक तमंचा और दो कारतूस बरामद किया गया। गिरफ्त में आए कोतवाली क्षेत्र के गोड़ा देहाती निवासी मयंक कुमार उर्फ मेघदूत का संबंधित धाराओं में चालान कर दिया गया

उरुवा क्षेत्र में युवक का शव मिलने से सनसनी

गोरखपुर। सिकरीगंज थाना के अन्तर्गत श्री राम रेखा सिंह इंटर कालेज उरुवा बाजार के खेल के मैदान के समीप गेहूं के खेत में 25 वर्षीय युवक का शव मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। टहलने गए किसी ग्रामीण ने जब शव देखा तो इसकी सूचना गांव के लोगों को हुई।ग्रामीणों की सूचना पर मौके पर पहुंची उरुवा पुलिस ने शव का शिनाख्त करवाकर उसे पीएम के लिए मेडिकल कालेज भेज दिया। शव का पहचान बृजेश गुप्ता पुत्र रामधनी गुप्ता ग्रामसभा टाड़ी के रूप में हुआ। इस संबंध में पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत का कारण का पता चल पाएगा।

छेड़खानी की शिकायत पर युवक को पकड़ा

कोंच(जालौन)। शुक्रवार को नगर के मुहल्ला गांधी नगर में आये एक बाहरी युवक से तंग आ कर पीड़ित युवती ने डॉयल 112 पर मामले की शिकायत कर दी। वहीं मौके पर पहुंची पीआरबी ने उक्त युवक को पकड़ लिया और उसे अपने साथ कोतवाली ले आयी।विदित हो कि बीते कुछ दिनों से गांधी नगर की रहने वाली एक युवती के घर के पास में ही रहने वाला एक बाहरी युवक युवती के साथ छेड़खानी कर रहा था, शुक्रवार को युवती ने डॉयल 112 पर अपनी शिकायत दर्ज करा दी जिसके बाद पीआरबी 3633 मौके पर पहुंची और छेड़खानी करने वाले युवक को पकड़ कर कोतवाली ले आयी।उक्त मामले को लेकर कोतवाल इमरान खान का कहना है कि मामले की जांच की जा रही है और पीड़ित युवती द्वारा तहरीर दी जाती है तो कार्यवाही की जाएगी।

भक्तिभाव के साथ निकली कलश यात्रा

कोंच(जालौन)। कोंच तहसील क्षेत्र के ग्राम भदेवरा में स्थित हनुमान मंदिर में ग्रामीणों द्वारा आयोजित श्रीमद्भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ का शुभारंभ शनिवार को कलश यात्रा के साथ हो गया। तदुपरांत कथा स्थल पर पूजन आदि के पश्चात कथावाचक ऊष्मा किशोरी बृन्दावन धाम ने उपस्थित श्रोताओं को संगीतमयी कथा का श्रवण कराया।कलश यात्रा में सबसे आगे पारीक्षत वेदप्रकाश सिर पर भागवत पुराण रखकर चल रहे थे जबकि पुरुष श्रद्धालु बैंड बाजों पर बज रहे भक्तिभाव गीतों पर हरि नाम का उच्चारण कर साथ चल रहे थे। महिलाएं आम्रपत्तों से सुसज्जित कलश सिर पर धारण कर व युवा नृत्य करते हुए कलश यात्रा में शामिल रहे।कलश यात्रा में भाजपा जिला उपाध्यक्ष वीरेन्द्र चमरसेना, भाजयुमो प्रदेश मंत्री प्रशांत द्विवेदी, विकास पटेल धनौरा, मंडल अध्यक्ष दशरथ पटेल, अखिलेश निरंजन, हरिओम निरंजन, प्रेमनारायण, बाबूराम पाल, लव पटेल आदि शामिल रहे।

शतचंडी महायज्ञ की तैयारियां पूर्ण

जालौन (उई)। मां वनखंडी सेवादल के तत्वावधान में आयोजित शतचंडी महायज्ञ की तैयारियां के लिए कार्यकर्ता मेहनत से जुटे हैं। यज्ञ को सफल बनाने के लिए कार्यकर्ता पूरे नगर में घर घर जाकर चावलों से सुसज्जित आमंत्रण पत्र दे रहे हैं।

मोहल्ला चुर्खीबाल में स्थापित दक्षिणमुखी हनुमानजी के मंदिर में शतचंडी महायज्ञ का आयोजन आगामी 12 फरवरी से होने जा रहा है। मंदिर परिसर में आयोजित शतचंडी महायज्ञ के दौरान श्रीमद्भागवत कथा, वृदांवन के कलाकरों द्वारा रात्रि के समय रासलीला एवं मानस प्रवचन का भी आयोजन होगा। कार्यक्रम स्थल पर यज्ञशाला को अंतिम रूप दिया जा रहा है। टैंट एवं लाईट की व्यवस्थाओं की भी तैयारियां चल रही हैं। वहीं, कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए कार्यकर्ता रोली मिश्रित चावल से सजे आमंत्रण पत्र को पूरे नगर में घर घर जाकर बांटकर उनसे कार्यक्रम में पहुंचने की अपील कर रहे हैं। इस संदर्भ में कार्यक्रम के संरक्षक मां वनखंडी देवी शक्ति पीठ कालपी धाम के महंत जमुनादासजी महाराज ने बताया कि 12 फरवरी से शुरू होने वाले मां शतचंडी महायज्ञ का समापन 21 फरवरी को विशाल भंडारे के साथ होगा।

जिला पेयजल एवं स्वच्छता मिशन की बैठक 08 फरवरी को

देवरिया। ग्रामीण पेयजल के प्रभावी क्रियान्वन हेतु मिशन के कार्य एवं दायित्व के अनुसार जनपद स्तर पर गठित जिला पेयजल एवं स्वच्छता मिशन की बैठक जिलाधिकारी अमित किशोर की अध्यक्षता में 8 फरवरी को अपरान्ह 5-00 बजे गांधी सभागार कक्ष में आहूत है। यह जानकारी मुख्य विकास अधिकारी शिवशरणप्पा जीएन ने देते हुए सभी संबंधित इस बैठक में स्वयं प्रतिभाग करने की अनिवार्यता की है।

वृहद रोजगार मेले में 24 कंपनियों ने किया 2240 अभ्यर्थियों को चयनित

सीतापुर, ।

सीतापुर मिशन रोजगार के अंतर्गत वृहद रोजगार मेले का आयोजन राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान सीतापुर के परिसर में किया गया। मेले का शुभारंभ जिलाधिकारी विशाल भारद्वाज एवं माननीय विधायक लहरपुर सुनील वर्मा ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। मेले में टेलीकम्यूनिकेशन, सिक्यूरिटी, मार्केटिंग, इंजीनियरिंग सहित विभिन्न क्षेत्रों की 24 कम्पनियों द्वारा 2240 अभ्यर्थियों को चयनित किया गया। सफल अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र भी वितरित किये गए।कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुये जिलाधिकारी विशाल भारद्वाज ने कहा कि रोजगार मेले के माध्यम से बेरोजगारों को रोजगार प्राप्त करने का अवसर दिया जा रहा है। उन्होंने सभी को सेवायोजन पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन कराने के लिये प्रेरित करते हुये कहा कि आउटसोर्सिंग के माध्यम से रोजगार देने वाली संस्थाओं का भी सेवायोजन पोर्टल में पंजीकरण अनिवार्य कर दिया गया है। इससे सेवायोजन पोर्टल में पंजीकृत आवेदकों को नियोजन के बेहतर अवसर मिल सकेंगे। उन्होंने तकनीकी शिक्षा के लिये प्रेरित करते हुये कहा कि तकनीकी रूप से दक्ष अभ्यर्थियों की निरंतर मांग अधिक रहती है।

जिलाधिकारी ने सभी को क्षमता के अनुरूप प्रयास करते हुये निरंतर आगे बढ़ने के लिये प्रेरित किया।विधायक लहरपुर सुनील वर्मा ने कहा कि मा0 मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में युवाओं को रोजगार के बेहतर अवसर लगातार उपलब्ध कराए जा रहे हैं। उद्योगों को प्रोत्साहन देने की नीति से प्रदेश में औद्योगीकरण के नए युग की शुरुआत हो रही है और प्रदेश निरंतर आगे बढ़ रहा है। बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर उत्पन्न हो रहे हैं। भ्रष्टाचार को समाप्त करते हुये मेधावी छात्र छात्राओं को निरंतर नौकरी दी जा रही हैं।

उन्होंने सभी के उज्जवल भविष्य की कामना भी की।कार्यक्रम के दौरान जिला विकास अधिकारी राकेश कुमार पांडेय, प्राचार्य आईटीआई योगेश कुमार, जिला सेवायोजन अधिकारी अमित कुमार सहित सम्बंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

कर-करेत्तर की समीक्षा बैठक सम्पन्न

सीतापुर। जिलाधिकारी विशाल भारद्वाज की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में कर-करेतर की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुयी। बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने वाणिज्यकर, आबकारी, परिवहन, स्टाम्प एवं रजिस्ट्रेशन, विद्युत देय, खनन एवं मण्डियों द्वारा आर्जित किये गये कर-करेत्तर राजस्व की समीक्षा करते हुए निर्देश दिये के वसूली बढ़ायी जाये। उन्होनें कहा कि वार्षिक लक्ष्य समय से पूर्ण करें।प्रवर्तन कार्यवाही बढ़ाये जाने के भी जिलाधिकारी ने निर्देश दिये। उन्होंने वाणिज्यकर विभाग के अधिकारियों को कड़े निर्देश देते हुये कहा कि कर अपवंचन करने वाली संस्थाओं के विरूद्ध नियमानुसार जांच एवं कार्यवाही की जाये। साथ ही समय से रिर्टन दाखिल कराना, मानिटरिंग करना एवं प्रवर्तन कार्यवाही करना भी सुनिश्चित किया जाये। एआरटीओ को निर्देश दिये कि ओवरलोड करने वाले वाहनों के विरूद्ध कार्यवाही करें। जिलाधिकारी ने कहा कि वार्षिक लक्ष्य को पूर्ण करना सुनिश्चित किया जाये। स्टाम्प एवं रजिस्ट्रेशन विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिये कि लक्ष्य प्राप्ति के लिये

क्रिकेट के फाइनल मैच में झांसी टीम ने छानी को दी पटखनी

खेल

- विजेता टीम को शील्ड व पुरस्कार देकर किया सम्मानित

जालौन (उई) ।

जय कारसदेव अंतरजनपदीय क्रिकेट टूर्नामेंट के छानी व झांसी के बीच खेले गए रोचक फाइनल मुकाबले में झांसी की टीम ने 28 रन से मैच को जीता। विजेता टीम को मुख्य अतिथि ने शील्ड व पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

जय कारसदेव अंतरजनपदीय क्रिकेट टूर्नामेंट के तत्वावधान में कोंच चौराहे के पास 8 दिवसीय क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। जिसमें जालौन, छानी, झांसी, मोंठ, राठ समेत एक दर्जन क्रिकेट टीमों ने भाग लिया। लीग व सेमीफानल मुकाबलों के बाद इंडिया इलेवन झांसी व छानी टाइगर छानी की टीम फाइनल में पहुंची। फाइनल मुकाबले में झांसी की टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर के मैच में 7 विकेट पर 192 रन बनाए। टीम के खिलाड़ियों द्वारा चौके, छक्कों की बारिश से दर्शकों का भरपूर मनोरंजन हुआ। वहीं, दूसरी पारी में खेलने उतरी छानी की टीम छानी टाइगर की टीम 154 रन पर धराशाई हो गई। जिसके बाद इंडिया इलेवन झांसी की टीम को 24 रन से विजेता घोषित किया गया। जिसमें झांसी के टीम पारी में अर्धशतक जमाकर दर्शकों को अपने खेल से प्रभावित करने वाले कुलदीप को मैन ऑफ द मैच घोषित किया गया। वहीं, मैन ऑफ द सीरीज छानी की टीम के खिलाड़ी राजवीर रहे। अंत में मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद पूर्व सपा नगर अध्यक्ष चंद्रप्रकाश उर्फ थोपन यादव एवं सुरेशराव डेंगरे उर्फ गुड्डु ने फाइनल मैच जीतने वाली टीम को शील्ड व पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इस मौके पर मानवेंद्र यादव, संजू यादव, मनीष, प्रशांत, गजेंद्र, धर्मपाल, अखलेंद्र, शिवा, हेमंत, दीपू राजावत, कल्लू भइया, अशोक यादव, आशुतोष, बीटू, अमित सरारा आदि मौजूद रहे।

जिलाबदर समेत दस अपराधी गिरफ्तार

एटा ।

देहात थाना पुलिस और स्वाट टीम ने संयुक्त रूप से कार्रवाई करते हुए गांजा, अल्कोहल की तस्करी तथा लूट की योजना बना रहे एक जिला बदर समेत 10 पेशेवर लोगों को नगला जसराम के समीप मुठभेड़ के दौरान गिरफ्तार कर लिया।

गिरफ्तार किए राहुल पुत्र तारकेश्वर निवासी रक्सौल मोतिहारी बिहार, आशु पुत्र रवीश कुमार निवासी दरिगपुर थाना पिलुआ, विकास पुत्र रूपनारायण, सुजीत पुत्र रामप्रसाद निवासी विशंभरा, मझौलिया, बिहार, वंश पुत्र रमेश निवासी सेक्टर 22 सहादतपुर, नोएडा, पुष्पेंद्र पुत्र अनिल निवासी सौगरा थाना पिलुआ, दीपक पुत्र पवन निवासी वर्मा नगर थाना कोतवाली नगर, टिंकू पुत्र प्रमोद निवासी दरिगपुर थाना पिलुआ, सोनू उर्फ दीपक पुत्र विजेंद्र निवासी कचहरी रोड आवागढ़ हाउस थाना कोतवाली नगर, जितेंद्र पुत्र महिपाल निवासी अंबेडकर नगर थाना कोतवाली नगर के पास से 6 तमंचा, 12 कारतूस, 6 खोखा कारतूस, 2 किलो गांजा, 80 लीटर अल्कोहल, एक कार, एक मोटरसाइकिल, एक स्कूटी, 9 मोबाइल फोन, दो चैन, एक अंगूठी, तीन घड़ी बरामद की गई है।

मारहरा पुलिस ने दस जुआरी पकड़े

एटा। मारहरा थाना पुलिस द्वारा मुखबिर की सूचना पर नगला भीम चरण सिंह के बाग में हारजीत की बाजी लगाकर जुआ खेल रहे 10 लोगों को गिरफ्तार कर 10330 रुपए बरामद किए हैं। मारहरा थाना क्षेत्र के ग्राम नगला भीम निवासी गोवर्धन पुत्र नेनसुख, राजकुमार पुत्र शेरसिंह, शेषपाल पुत्र हरदयाल, हरदयाल पुत्र रुपराम, भगवानदास पुत्र नेनसुख, सौदान सिहं पुत्र धर्मजीत, मारहरा थाना क्षेत्र के ग्राम हमीरगढ़ निवासी नरेश पुत्र श्यामलाल, रामनिवास पुत्र दीपचन्द्र, ढोलना थाना क्षेत्र के ग्राम करसरी उदयसिहं पुत्र चुन्नीलाल, भोजराज पुत्र विजयपाल को गिरफ्तार कर लिया गया।पुलिस टीम में एसआई उ0नि0 मनोज कुमार, उ0नि0 अभिमन्यू शर्मा, सिपाही जगवीर सिंह, अनिल, शुभम, सत्यम, सचिन अत्री शामिल थे।

ईंट भट्ठा उद्यमियों के साथ पुलिस/प्रशासनिक अधिकारियों की हुई बैठक

देवरिया ।

अपर जिलाधिकारी (राजस्व) एवं अपर पुलिस अधीक्षक देवरिया की अध्यक्षता में पुलिस लाइन देवरिया के सभागार कक्ष में जनपद देवरिया के ईंट भट्ठा मालिकों के साथ गोष्ठी आहूत करते हुए ईंट भट्ठों पर सीसीटीवी कैमरों का व्यवस्थापन कराये जाने, ईंट भट्ठों पर अवैध मदिरा के निश्कर्षण पर पूर्णतया प्रतिबंध लगाने के संबन्ध में पुलिस व प्रशासनिक स्तर से कार्यवाही के संबन्ध में चर्चा, ईंट भट्ठों पर कैश सुरक्षा व्यवस्थापन हेतु भट्ठों पर उनके स्वामियों द्वारा प्राइवेट गार्ड रखे जाने तथा यदि शस्त्र लेना चाहते हैं तो उसके लिए आवेदन करें, जिसपर नियमानुसार विचार करते हुए प्राथमिकता पर उन्हें शस्त्र हेतु लाइसेंस निर्गत किये जायेंगे, ईंट भाठ्ठों पर कार्यरत दूसरे राज्यों के मजदूरों के संपूर्ण व्यक्तिगत विवरण अभिलेखों को हमेशा अपडेट रख जाये, ईंट भट्ठों पर कार्यरत स्थानीय कर्मचारियों के भी संपूर्ण विवरण अभिलेख अपडेट रखे जायें, ईंट भट्ठों पर सुरक्षा मानकों के आधार पर भट्ठों की चाहरदिवारी करायी जाये, ईंट भट्ठों पर अग्निशमन यंत्रों को रखा जाये, जिससे किसी भी आकस्मिक स्थिति पर काबू पाया जा सके। इसके अतिरिक्त ईंट भट्ठा उद्यमियों की समस्याओं पर चर्चा किया गया। इस अवसर पर ज्वाइंट मजिस्ट्रेट देवरिया, उपजिलाधिकारी सदर, उप जिलाधिकारी रूद्रपुर, उप जिलाधिकारी सलेमपुर, क्षेत्राधिकारी सलेमपुर, क्षेत्राधिकारी बरहज, क्षेत्राधिकारी रूद्रपुर एवं समस्त प्रभारी निरीक्षक/थानाध्यक्ष जनपद देवरिया उपस्थित रहे।

मांगों को लेकर प्राथमिक शिक्षक संघ ने सौंपा ज्ञापन

एटा। उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ ने प्रदेश के परिषदीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के न्यायोचित लंबित समस्याओं को निस्तारण करने के संबंध में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के नाम प्रशासनिक अधिकारी को ज्ञापन दिया।

शिक्षण योगदान अंक निर्धारित को वापस लिया जाए, 17140 व 15150 वेतन लागू किया जाए, परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों का स्थानान्तरण करने, जनपदीय स्थानान्तरण प्रक्रिया को बहाल करने, शिक्षकों को टेबलेट उपलब्ध कराने, चिकित्सा सुविधा प्रदान करने, विद्यालयों में सफाई कर्मचारी नियुक्त करने, 30 ईएल सुविधा प्रदान करने, बीमा राशि 10 लाख करने समेत आदि मांगें शामिल थीं।

प्रदेश में अब तक कुल 2,85,78,777 सैम्पल की जांच की गयी

लखनऊ ।

उत्तर प्रदेश के अपर मुख्य सचिव चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अमित मोहन प्रसाद ने लोक भवन में प्रेस प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए बताया कि प्रदेश में कल एक दिन में कुल 1,25,670 सैम्पल की जांच की गयी। प्रदेश में अब तक कुल 2,85,78,777 सैम्पल की जांच की गयी है।

उन्होंने बताया कि प्रदेश में पिछले 24 घंटे में कोरोना से संक्रमित 145 नये मामले आये हैं। प्रदेश में 4,438 कोरोना के एक्टिव मामले हैं। प्रदेश में ई-संजीवनी के माध्यम से 24 घंटे में 4,369 लोगों ने तथा अब तक कुल 4,84,784 लोगों ने चिकित्सीय परामर्श लिया। उन्होंने बताया कि प्रदेश में विगत 24 घण्टों में 164 तथा अब तक कुल 5,88,148 लोग कोविड-19 से ठीक होकर डिस्चार्ज हो चुके हैं। प्रदेश में रिकवरी रेट 97.82 प्रतिशत है। प्रदेश में सर्विलांस टीम के माध्यम से 1,84,833 क्षेत्रों में 5,10,722 टीम दिवस के माध्यम से 3,14,33,786 घरों के

15,26,66,776 जनसंख्या का सर्वेक्षण किया गया है। श्री प्रसाद ने बताया कि कल प्रदेश में कोविड वैक्सीनेशन का कार्य किया गया था स्वास्थ्य कर्मियों के साथ-साथ फ्रंट लाइन कर्मियों के भी टीकाकरण का कार्य किया गया था। स्वास्थ्य कर्मियों के कोविड वैक्सीनेशन का प्रथम चरण कल पूरा हो गया। जिन स्वास्थ्य कर्मियों का किसी कारणवश कोविड वैक्सीनेशन का टीकाकरण नहीं हो पाया है उनको एक बार और 15 फरवरी को कोविड वैक्सीनेशन का कार्य किया जायेगा।

उन्होंने बताया कल स्वास्थ्य कर्मियों तथा फ्रंट लाइन कर्मचारियों को कुल 84,109 कोविड वैक्सीनेशन का टीकाकरण किया गया, जिसमें से 47,714 स्वास्थ्य कर्मी 36,395 फ्रंट लाइन कर्मचारी थे। अब तक कुल प्रदेश में 6,73,210 से अधिक स्वास्थ्य कर्मी व फ्रंट लाइन कर्मियों को कोविड वैक्सीन की प्रथम डोज लगायी जा चुकी है, जो किसी भी राज्य की तुलना में देश में सर्वाधिक है। उन्होंने बताया कि फ्रंट लाइन कर्मचारियों को 11, 12 और 18 फरवरी को कोविड वैक्सीनेशन का कार्य किया जायेगा। किसी प्रकार का कोविड लक्षण आने पर तत्काल जांच कराएं। सरकार की ओर से जांच और ईलाज निःशुल्क है। उन्होंने सभी नागरिकों से अपील की है कि स्कूल-कॉलेज खुल रहे हैं इसलिए कोविड-19 के प्रोटोकाल का पालन अवश्य करें।

एमएसपी को लेकर कुछ लोग किसानों के मन में संदेह पैदा कर रहे हैं: शेखावत

लखनऊ ।

केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने शनिवार को कहा कि एमएसपी (न्यूनतम समर्थन मूल्य) को लेकर कुछ लोग किसानों के मन में संदेह पैदा कर रहे हैं लेकिन सच यह है कि एमएसपी में डेढ़ गुना वृद्धि की गई है। शनिवार को यहां भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश मुख्यालय में पत्रकारों से बातचीत में केंद्रीय जल शक्ति मंत्री ने केंद्रीय कृषि कानूनों की पुरजोर वकालत करते हुए कहा, कृषि कानूनों को काला कानून बताने वाले जो लोग कृषि के क्षेत्र के जानकार हैं, वे आकर बताएं कि इसमें काला क्या है। शेखावत ने कहा, ऐसी राजनीतिक पार्टियां जिन्हें जनता ने नकार दिया है या जिन्हें भविष्य में नकारे जाने का डर है, वही लोग इसे मुद्दा बना रहे हैं और संशोधित नागरिकता कानून की तरह इसको लेकर भी भ्रम फैला रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार किसानों के कल्याण एवं उनकी आय को दोगुना करने के

लिए कटिबद्ध है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा प्रस्तुत 2021-22 के बजट की सराहना करते हुए जल शक्ति मंत्री ने कहा, देश को आात्मनिर्भर बनाने की दृष्टि से यह बजट पेश किया गया है और जब भी आात्मनिर्भर भारत का इतिहास लिखा जाएगा तो यह बजट मील का पत्थर साबित होगा। केंद्रीय बजट पर केंद्रित पत्रकार वार्ता में शेखावत ने कहा, भारत की अर्थव्यवस्था ने दुनिया में नया आदर्श प्रस्तुत किया है और आपदा को अवसर में बदलने तथा आत्मनिर्भर भारत के संकल्प के साथ वित्त मंत्री ने बजट प्रस्तुत किया है। उन्होंने दावा किया कि देश की सरकार ने विपरीत परिस्थितियों में साहसिक बजट पेश किया और किसी उपभोक्ता पर एक रुपये का नया कर नहीं लगाया। बजट में प्रस्तुत योजनाओं को सिलसिलेवार गिनाते हुए केंद्रीय मंत्री ने कहा कि इस बजट के जरिये गांव, गरीब, किसान, महिला, मजदूर, दलित, शोषित और पीड़ित के हित को महत्व दिया गया है। कोरोना काल में केंद्र सरकार की उपलब्धियों को गिनाते हुए शेखावत ने कहा कि आम बजट में उत्तर प्रदेश को विशेष लाभ दिया गया है। उन्होंने अनुसूचित जनजाति बहुल इलाकों में एकलव्य विद्यालय खोले जाने की चर्चा करते हुए बताया कि केंद्र सरकार ने उत्तर प्रदेश के लखनऊ, बिजनौर, सोनभद्र और श्रावस्ती में चार नये एकलव्य विद्यालय खोलने का फैसला किया है और पहाड़ी इलाकों में इसके लिए 48 करोड़ रूपये और मैदानी इलाकों में 38 करोड़ रुपये का बजट निर्धारित किया है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने बजट में जल जीवन मिशन (शहरी) भी आरंभ किया है जिसका फायदा सबसे ज्यादा उत्तर प्रदेश को मिलेगा।

काले कृषि कानूनों पर देश को गुमराह कर रही मोदी सरकार

कृषि कानूनों की वापसी के लिए आइपीएफ कार्यकर्ताओं ने पीएम को भेजा पत्रक

लखनऊ

संयुक्त किसान मोर्चा के आवाहन पर आज किसानों के समर्थनमें आल इंडिया पीपुल्स फ्रंट, जय किसान आंदोलन से जुड़े मजदूर किसान मंच केकार्यकर्ताओं ने पूरे प्रदेश में काले कृषि कानूनों को वापस करने, न्यूनतमसमर्थन मूल्य पर कानून बनाने और किसान आंदोलन का दमन बंद करने व किसानों परलगाए सभी मुकदमे वापस लेने की मांग पर प्रधानमंत्री को ज्ञापन भेजा।

आज प्रेस को जारी बयान में आइपीएफके राष्ट्रीय प्रवक्ता एस. आर. दारापुरी वमजदूर किसान मंच के महासचिव डा. बृज बिहारी ने यह जानकारी दी। उन्होंनेबताया कि आगरा व सीतापुर में किसान नेताओं व किसानों को प्रशासन द्वारा दीगई लाखों रूपए की शातिभंग में पाबंद करने की नोटिसों की दमनात्मककार्यवाही की कड़ी कार्यकर्ताओं ने कहा कि केन्द्र की मोदी सरकार इन कानूनों के बारे मेंलगातार देश को गुमराह कर रही है कि इनमें काला क्या है। जबकि सभी लोग बखूबीजानते है कि ये कानून देशी विदेशी कारपोरेट घरानों के लाभ के लिए हीबनाएगए है और इनसे हमारी देश की आर्थिक सम्प्रभुता तहस नहस हो जायेगी और खेतीकिसानी बर्बाद हो जायेगी।

जमाखोरी की छूट, जमीन व किसान की उपज की लूट हीइन कानूनों का मकसद है जिसे कई दौरों की वार्ता में किसान संगठन सरकार कोबता चुके हैं। बावजूद इसके सरकार इसे वापस लेने को तैयार नहीं है। एक तरफप्रधानमंत्री किसानों से वार्ता के लिए एक फोन काल की दूरी की बात करते हैंवहींदूसरी तरफ किसान आंदोलन के विरूद्ध सरकार ने युद्ध छेड़ा हुआ है। हर तरह सेसरकार किसान आंदोलन पर दमन, उसकी घेराबंदी, दुष्प्रचार करने में लगी हुईहै।

सरकार की किसान आंदोलन को अलगाव में डालने की हर कोशिशों के बावजूदकिसान आंदोलन का दायरा और समर्थन लगातार बढ़ता जा रहा है। आज केकार्यक्रमों का नेतृत्व लखीमपुर खीरी में एआईपीएफके प्रदेश अध्यक्ष डा.बी. आर. गौतम, सीतापुर में मजदूर किसान मंच नेता सुनीला रावत, युवा मंच केनागेश गौतम, अभिलाष गौतम, सोनभद्र में प्रदेश उपाध्यक्ष कांता कोल, कृपाशंकर पनिका, मंगरू प्रसाद गोंड़, ज्ञानदास गोंड़, सूरज कोल, श्रीकांतसिंह, रामदास गोंड़, शिव प्रसाद गोंड़, महावीर गोंड, आगरा में आइपीएफमहासचिव इंजीनियर दुर्गा प्रसाद, चंदौली में अजय राय, आलोक राजभर, रामेश्वरप्रसाद, इलाहाबाद में युवा मंच संयोजक राजेश सचान, इंजीनियर राम बहादुरपटेल, मऊ में बुनकर वाहनी के अध्यक्ष इकबाल अहमद अंसारी, बलिया में मास्टर कन्हैयाप्रसाद, बस्ती में एडवोकेट राजनारायण मिश्र, श्याम मनोहर जायसवाल, गोण्डामें साबिर अजीजी, आरिफ़ लखनऊ में वर्कर्स फ्रंट अध्यक्ष उपाध्यक्ष उमाकांतश्रीवास्तव, एडवोकेट कमलेश सिंह, वाराणसी में प्रदेश उपाध्यक्ष योगीराजपटेल ने किया।

देश को हिन्दू राष्ट्र बनाना या पेशवाई शासन की ओर ले जाना क्या यही राष्ट्रवाद है: पीसी कुरील

लखनऊ । आज गाँधी भवन कैंसर बाघ लखनऊ में हमारा समय राष्ट्र और राष्ट्रवाद के तहत एक परिचर्चा का आयोजन किया गया जिसमे राष्ट्रीय भागीदारी आंदोलन के संयोजक पी सी कुरील,ने कहा कि मै राष्ट्र और राष्ट्रवाद का अभिप्राय समझ रहा हूँ। हमारी कोशिश है कि देश को मजबूती देने के लिए दोनों का समन्वय किया जाये। वस्तुतः हमारा संविधान और लोकतंत्र सभी को प्रतिनिधित्व अर्थात भागीदारी को स्थापित करता है। लेकिन हमारी वर्तमान सरकारें साम्प्रदायिकता एवं पूंजीवाद का सहारा लेकर राष्ट्रवाद की बात करती हैं। लेकिन उसे राष्ट्रवाद कैसे कहा जाए जिनमे किसी को भागीदारी नहीं मिलती और जिसकी मुख्यधारा में अनु0 जाति-जन जाति,पिछड़ा वर्ग महिलाओं एवं अल्पसंख्यकों समाज शामिल नहीं है और उक्त वर्गों को राष्ट्रीय मुख्यधारा में जोड़ने का भी दिली प्रयास नहीं किया जा रहा है। उसे सही राष्ट्रवाद कैसे माना जाए, जिनमे सिर्फ आधी आबादी को साम्प्रदायिकता के आधार पर विभाजित करके सत्ता प्राप्ति के कुत्सित प्रयास किये जाते हों। यदि हम वर्तमान केंद्र सरकार के वर्ष 2014 के आम चुनावों पर नजर डालते हैं तो स्पष्ट हो जाता है कि उसने सौ दिन में विदेश से काला धन लाकर हर मतदाता के खाते में पंद्रह-पंद्रह लाख रुपया देने, प्रति वर्ष दो करोड़ लोगों को सरकारी रोजगार देने एवं सबका साथ सबका विकास कराने के वादे किये थे जबकि सरकार बनने के बाद एक वरिष्ठ नेता ने कहा था कि उक्त वादे तो सिर्फचुनावी जुमले थे बाद में इसी सरकार से नोटबंदी, जीएसटी, नागरिकता बिल लाकर एवं एससी, एसटी को रिवर्ट करना आदि काम किये और अब किसान आंदोलन के प्रति सरकार के रवैया क्या यही राष्ट्रवाद है? इधर सरकार की कार्यविधियों-देश को हिन्दू राष्ट्र बनाना या पेशवाई शासन की ओर ले जाना यह भी राष्ट्रवाद नहीं हो सकता,उल्लेखनीय है कि 1818 में पेशवाई राज्य में अध्यादेश द्वारा मानवता विरोधी व्यवस्था के विरूद्ध 500 महारों ने 28 हजार पेशवा सेना को धूल चटाई थी। लगता है कि देश को पुनः उसी दिशा में ले जाया जा रहा है।

एक नज़र में

राजधानी में धारा-144 लागू

लखनऊ । संयुक्त पुलिस आयुक्त, कानून एवं व्यवस्था नवीन अरोरा ने बताया कि विभिन्न राजनैतिक दलों, छात्र संगठनों,भारतीय किसान संगठनों द्वारा कमिश्नरेट राजधानी लखनऊ क्षेत्र में किसान आन्दोलन, धरना प्रदर्शन करने की प्रबल सम्भावना है जिससे शांति व्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। कोविड-19 वैश्विक महामारी का प्रभाव जन जीवन को व्यापाक रूप से प्रभावित कर रहा है। दिनांक 15.02.2021 को बसन्त पंचमी, दिनांक 19.02.2021 को ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती अजमेरी गरीब नवाज, दिनांक 24.02.2021 को हजरत अली का जन्म दिवस, दिनांक 27.02.2021 को सन्त रविदास जयन्ती के अवसर पर भी असामाजिक तत्वों द्वारा शान्ति व्यवस्था भंग की जा सकती है, जिससे कटुता बढ़ने व लोक प्रशान्ति विक्षुब्ध होने की प्रबल आशंका हैं। जिसको रोकने तथा कार्यक्रमों में व्यवस्था भंग होने से बचाने के उद्देश्य से दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा-144 के अन्तर्गत प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए प्रतिबन्धात्मक आदेश पारित किये है। उन्होंने बताया कि कन्टेनमेन्ट जोन के बाहर समस्त सामाजिक,शैक्षिक,खेल, मनोरंजन,सांस्कृतिक,धार्मिक, राजनीतिक कार्यक्रमों एवं अन्य सामूहिक गतिविधियों की अनुमति निम्न प्रतिबन्धों के अधीन होगी। किसी भी बन्द स्थान, हाल,कमरे की निर्धारित क्षमता का 50 प्रतिशत किन्तु एक समय में अधिकतम 200 व्यक्तियों तक तथा किसी खुले स्थान, मैदान पर ऐसे स्थानों के क्षेत्रफल के अनुसार फेस-मास्क का प्रयोग, सोशल-डिस्टेन्सिंग का अनुपालन तथा थर्मल स्कैनिंग और हाथ धोने, सेनेटाइजर की व्यवस्था करना अनिवार्य होगा। उन्होने बताया कि कोई भी व्यक्ति पुलिस आयुक्त लखनऊ या संयुक्त पुलिस आयुक्त या पुलिस उपायुक्तों की पूर्व अनुमति प्राप्त किये बिना न तो 5 या इससे अधिक व्यक्तियों का किसी प्रकार का कोई जुलूस निकालेगा न ही सार्वजनिक स्थान पर 5 या इससे अधिक व्यक्तियों का समूह बनायेगा और न ही किसी समूह में सम्मिलित होगा। (विवाह, उत्सव व शव यात्रा सम्बन्धी जुलूस तथा उ0प्र0 शासन के विभिन्न विभागों के प्रबान्धाधीन प्रेक्षाग्रहों के अन्दर आयोजित सांस्कृतिक व एकेडमिक कार्यक्रम प्रतिबन्ध से मुक्त रहेगें। उन्होंने बताया कि कोई भी दुकानदार न तो ऐसे धातु के तार का विक्रय करेगा और न ही कोई व्यक्ति ऐसे तार में पतंग बांधकर उड़ायेगा जिससे ट्रांसफॉर्मर जल जाने अथवा तार सर्किट की सम्भावना हो। उन्होने बताया कि कोई भी व्यक्ति जिला मैजिस्ट्रेट, अधोहस्ताक्षरी या क्षेत्रीय कार्यकारी मैजिस्ट्रेट की पूर्वानुमति के बिना लाउडस्पीकर अथवा अन्य किसी प्रकार के ध्वनिवर्धक यन्त्रों,साधनों का प्रयोग किसी भी कार्य के लिए नही करेगा। किसी धार्मिक स्थल, सार्वजनिक स्थल,जुलूसों, अन्य आयोजनों पर लाउड-स्पीकर की ध्वनि की तीव्रता के सम्बन्ध में ध्वनि-प्रदूषण(विनियम और नियंत्रण), नियम-2000 यथा संशोधित के प्राविधानों का अनुपालन आवश्यक होगा।

इटौंजा मे हुई 25 हजार के इनामी दुर्दान्त अपराधी से पुलिस की मुठभेड़

साहसिक मुठभेड़ मे शातिर लुटेरा अनिल हसंह हाडा गिरफ्तार एक फरार

लखनऊ ।

आईजी रेन्ज की सर्विलांस टीम और इटौंजा पुलिस की संयुक्त टीम को बीती रात लखनऊ ग्रामीण क्षेत्र के इटौंजा इलाके मे एक बड़ी सफलता हाथ लगी है। आईजी रेंज की सर्विलांस टीम के इन्चार्ज इन्स्पेक्टर अमर सिंह रघुवंशी को मुखबिर से सूचना मिली की मध्य प्रदेश का खूंखार अपराधी 25 हजार का इनामी अनिल सिंह हांडा अपने साथी के साथ किसी वारदात को अन्जाम देने की फिराक मे लखनऊ सीतापुर रोड से गुजरने वाला है। इन्स्पेक्टर अमर सिंह

रघुवंशी ने मुखबिर की सूचना को गम्भीरता से लेते हुए अपनी टीम के सदस्यो उपनिरीक्षक सर्वेश पाल मुख्य आरक्षी आनन्द सिरोही कास्टेबिल संदीप कुटियाल, अजीत सिंह, और इन्स्पेक्टर इटौंजा अवनीश कुमार इटौजां थाने पर तैनात उपनिरीक्षक प्रभात कुमार शुक्ला कास्टेबिल देवी सिंह और अर्पित विश्नोई के साथ इलाके की घेरा बन्दी कर ली।

कुछ देर बाद एक मोटर साईकिल पर सवार होकर दुर्दान्त अपराधी अनिल सिंह हांडा अपने एक अन्य साथी के साथ आता नजर आया पहले से मुस्तैद टीम के सदस्य आनन्द सिरोही द्वारा साहस का परिचय देते हुए उसे रोकने की कोशिश की गई तो अपराधी अनिल सिंह हाडा द्वारा पुलिस की टीम पर गोली चला दी गई लेकिन पुलिस की टीम ने गोली चला रहे 25 हजार रूपए के इनामी बदमाश अनिल सिंह हाडा को दबोच लिया जबकि उसका साथी पुलिस से बच कर भागने मे सफल हो गया।

फरार हुए बदमाश का नाम राज कुमार बताया जा रहा है। साहसिक मुठभेड़ के दौरान गिरफ्तार किए गए अनिल सिंह हाडा के कब्जे से पुलिस ने 315 बोर का एक तमन्चा और मोटर साईकिल बरामद की है। पुलिस के अनुसार साल 2020 मे अनिल सिंह हाडा ने अपने साथियों के साथ मिल कर सिगरेट से लदे एक कन्टेनर के चालक और क्लीनर को बन्धक बना कर कन्टेनर मे लदी करीब एक करोड़ रूपए कीमत की सिगरेट लूटी थी इसके अलावा भी अनिल सिंह हाडा द्वारा लूट की अनेक वारदातो को अन्जाम देने की बात सामने आई है। गिरफ्तार किया गया लुटेरा अनिल सिंह हाडा अक्सर उन कन्टेनरो को निशाना बनाता था जिन कन्टेनरो पर एजेन्सियों का लाख रूपए का माल लदा हुआ होता था। साहसिक मुठभेड़ मे गिरफ्तार किए गए दुर्दान्त अपराधी अनिल सिंह हाडा के खिलाफ इटौंजा थाने पर ही डकैती और प्राण घातक हमला करने सहित तीन मुकदमे दर्ज है।

राष्ट्रीय अन्नदाता यूनियन ने कृषि सुधार कानूनों का समर्थन किया

लखनऊ ।

राष्ट्रीय अन्नदाता यूनियन ने केन्द्र सरकार द्वारा लागू तीनों कृषि सुधार कानूनों (बिलों) का समर्थन करते हुए कृषि बिलों को यथावत रखने की मांग की है, राजधानी लखनऊ के होटल चरण में आयोजित प्रेसवार्ता में राष्ट्रीय अन्नदाता यूनियन के नेताओं ने एक स्वर में कृषि कानूनों को लेकर भ्रामक विवाद की कड़े शब्दो में निंदा की एवं केन्द्र सरकार से तथाकथित किसान संगठनों एवं उनके नेताओं पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग की। प्रेसवार्ता को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय अन्नदाता यूनियन के राष्ट्रीय अध्यक्ष राम निवास यादव ने कहा कि अराजकतावादी तथाकथित किसान संगठन व उनके नेता किसानों के नाम पर कृषि बिलों के खिलाफ लगातार दुशप्रचार कर देश में अराजकता फैलाने का काम कर रहे है, राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली की सीमाओं पर जबरन कब्जा कर,

26जनवरी गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रध्वज तिरंगे का अपमान कर, सुरक्षाबलों पर हिंसक हमले कर, चक्का जाम कर ये हिंसक अराजकतावादी किन किसानों का भला करना चाहते है समझ से परे है। किसान के नाम पर राजनीति चमकाने वालों के खिलाफदेश का अन्नदाता उठ खड़ा हुआ है। कृषि सुधार कानूनों (बिलों) से मिलने वाले फायदों को लेकर देश का अन्नदाता उत्साहित है। अन्नदाता इन तीनों कृषि सुधार कानूनों (बिलों) की अपनी वास्तविक आजादी का प्रतीक मान रहा है। आजादी के 70वर्षों में पहली बार यदि केन्द्र की किसी सरकार ने खेत, खिलहान, किसान को केन्द्र बिन्दु मान कर योजनाएं बनाई है, तो केवल नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने बनाई। दुर्भाग्य से देश के कुछ विपक्षी राजनेता और दल भी इस तथाकथित किसान आंदोलन के बहाने खोई राजनैतिक जमीन को तलाशने में लगे है और अराजकतावादियों के मनोबल को बढाने का काम कर रहे है। इस तथाकथित किसान आंदोलन की आड़ में भारत के खिलाफदेश के दुश्मनों द्वारा षडयंत्र रचे जा रहे है।

शरीफने कबूतर बाजी में मारी बाजी, 23 कबूतर पकड़कर करी जीत हासिल,

लखनऊ ।

राजधानी नवाबों की नगरी के नाम से मशहूर लखनऊ जहाँ कबूतर बाजी, तीतर बाजी,बटेर बाजी,पतंग बाजी जैसे खेलों में माहिर लोग, अपनी अपनी बाजियों को जीतने के लिये अपना पसीना ही नही खून तक बहाने में गुरेज नहीं करते, इसी जूनून के तहत मशकगंज निवासी मोहम्मद शरीफने कबूतर बाजी में रिकार्ड कायम कर अपने आपको किंग ही नही अपितु लखनवी परम्परा को भी रौशन कर नवाबीने लखनऊ की यादों को जिन्दा रखने का काम किया। मालूम हो कि मोहम्मद सलमान निवासी मौलवी अनवर बाग ने चौलेंज दिया था, 7 दिन लगातार 151 कबूतर लड़ा कर दिखाओ, इस चुनौती को मोहम्मद शरीफने स्वीकार किया, और कबूतरों की तैयारी में जुट गए, लगभग 9 दिन के बाद कबूतर लड़ने थे, और यह कबूतर 7 दिन तक लड़ेंगे, जिसको कबूतर बाजो की भाषा में साज कहा जाता है। कबूतर लड़ाने का समय दोपहर 2.00 बजे से 3.30 बजे तक लड़ते रहे हैं, 1 दिन में 10 हवा कबूतर लड़ने के बाद सातवें दिन मोहम्मद शरीफने सलमान के 23 कबूतर पकड़ लिए, और सलमान के हाथ केवल चार कबूतर लगे, शरीफके आगे घुटने टेक दिए, शरीफके कबूतर मशकगंज से उड़ते थे, और सलमान के मौलवी अनवर बाग से उड़ते थे, इन दोनों के कबूतरों पर निशानी के तौर पर कलर लगाया गया था, सलमान के कबूतरों में रंग हरे वे शरीफके कबूतरों का रंग फिरोजी था, जिसमें शरीफ ने 23 कबूतर पकड़ कर एक बड़ी जीत हासिल की, शरीफको तोहफे में 11 किलो लड्डू वे हार फूल देकर बधाइयां दी गई, शहर के कबूतर बाजो ने शरीफ को मुबारकबाद दी।

केशव मौर्या पर कौशाम्बी में 05 मुकदमे कोर्ट में विचाराधीन

लखनऊ । एसपी कौशाम्बी कार्यालय द्वारा एक्टिविस्ट डॉ नूतन ठाकुर को दी गयी सूचना के अनुसार उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्या के विरुद्ध कौशाम्बी जिले में कुल 8 आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं। इन मुकदमों में गुंडा एक्ट का 1 मुकदमा खारिज हो चुका है जबकि हत्या के 1 मुकदमे में अंतिम रिपोर्ट लगा व 1 अन्य मुकदमे में श्री मौर्या दोषमुक्त हो चुके हैं। श्री मौर्या के खिलाफ कौशाम्बी जिले में वर्तमान में 5 मुकदमे विचाराधीन न्यायालय हैं. इन मुकदमों में धार्मिक विद्वेष फैलाने, सरकारी काम में बाधा डालने, ठगी एवं कूटरचित अभिलेख बनाने, सरकारी आदेशों की अवज्ञा करने जैसे अपराध शामिल हैं।

सोशल मीडिया पर वायरल हुआ काकोरी मे पेट्रोल पम्प कर्मचारी से लूट

एसीपी ने कहा घटना संदिग्ध इन्स्पेक्टर बोले उनके क्षेत्र मे नही हुई घटना

लखनऊ

शनिवार को सोशल मीडिया पर वायरल हुए लूट के मैसेज से काकोरी पुलिस की मुसतैदी कुछ देर के लिए सवालो के घेरे मे आ गई लेकिन घटनाक्रम स्पष्ट होते होते लूट की घटना संदिग्ध प्रतीत होने लगी। सोशल मीडिया पर वायरल हुए मैसेज के अनुसार पुलिस से बेखौफ बदमाशो द्वारा काकोरी के दुबग्गा के पास बीती रात एक पेट्रोल पम्प के कर्मचारी की पिटाई कर उसका मोबाईल और 6 हजार रूपए की नकदी लूट ली गई ।

बदमाशो द्वारा पेट्रेल पम्प कर्मी को जम कर पीटा भी गया। हैरत की बात ये है कि घटना शुक्रवार रात करीब साढ़े नौ जबे की बताई गई जबकि घटना के करीब 18 घंटे बीत जाने के बाद भी पीड़ित ने पुलिस से सम्पर्क नही किया। शृक्रवार की रात काकोरी के दुबग्गा के पास हुई लूट की घटना के सम्बन्ध में इन्स्पेक्टर काकोरी का कहना है कि लूट की कोई घटना काकोरी क्षेत्र मे नही हुई बल्कि पीड़ित के साथ घटना सीतापुर रोड पर हुई है। जानकारी के अनुसार दुबग्गा काकोरी के रहने वाले रिटायर होमगार्ड राम गोपाल तिवारी का 26 वर्षीय पुत्र तारा चन्द्र तिवारी ट्रान्सपोर्ट नगर स्थित श्री0 फिलिंगं स्टेशन पर काम करता है। तारा चन्द के अनुसार वो शुक्रवार की रात पेट्रोल पम्प से छुटटी होने के बाद बस मे सवार होकर आया था। बस से उतरने के बाद वो पैदल अपने घर जा रहा था तारा चन्द्र के अनुसार उसे रास्ते मे चार युवक मिले जिन्होने तारा चन्द से फोन करने के लिए उसका मोबाईल मांगा तारा चन्द ने मोबाईल जेब से निकाला तो साथ मे रूपए भी निकल आए रूपए देखते ही बदमाशों द्वारा उसकी जम कर पिटाई की गई और बदमाशों ने उसका मोबाईल और 6 हजार रूपए की नकदी लूट ली।

तारा चन्द के अनुसार बदमाशों का विरोध करने पर बदमाशों ने उसका गला दबाने का प्रयास किया और मारा पीटा जिससे उसके शरीर पर चोटे भी आई है। इस सम्बन्ध में इन्स्पेक्टर काकोरी कुलदीप सिंह गौर का कहना है कि लूट की कोई भी घटना काकोरी क्षेत्र मे हुई ही नही है उनका कहना था कि घटना सीतापुर रोड की हो सकती है। इस सम्बन्ध में एसीपी काकोरी डाक्टर अर्चना सिंह का कहना है कि न तो थाने पर कोई शिकायत लेकर गया और न ही उनके पास ही कोई शिकायत लेकर आया है उनका कहना है कि लूट जैसी घटना होने के बाद कोई शिकायत लेकर न आए तो इसे विडम्बना ही कहा जा सकता है जबकि घटना शुक्रवार की रात की बताई जा रही है और अभी तक पीड़ित पुलिस से मिला ही नही इससे अन्दाजा लगाया जा सकता है कि घटना संदिग्ध है। एसीपी काकोरी की बात मे दम इस लिए भी लगता है क्यूकि अगर पेट्रोल पम्प कर्मचारी से रात के समय मारपीट और लूट की घटना घटित हुई तो उसने लूट की सूचना पुलिस को क्यूं नही दी । तारा चन्द के द्वारा न तो थाने आकर सूचना दी गई और न ही काल कर पुलिस को जानकारी दी गई। पीड़ित तारा चन्द तिवारी के रिश्तेदार विध्या प्रसाद तिवारी ने शनिवार शाम करीब 4 बजे बताया कि वो शिकायत लेकर पुलिस के पास जा रहे है विध्या प्रसाद के अनुसार 4 बदमाशो ने उनके रिश्तेदार तारा चन्द से उसका मोबाईल और 6 हजार रूपए लूटे है उनके अनुसार बदमाशों द्वारा की गई पिटाई से तारा चन्द को चोटे भी आई है।

संपादकीय

खाई में गिरता लोकतंत्र

लोकतंत्र सूचकांक की 2020 की वैश्विक रैंकिंग में भारत अब 6.61 अंकों के साथ दो पायदान लुढ़कते हुए 53वें स्थान पर पहुंच गया है। भारत दुनिया के उन 52 देशों में शुमार है, जहां इस सूचकांक के हिसाब से त्रुटिपूर्ण लोकतंत्र है। अगर लोकतंत्र में भूल-चूक पहली बार दिखलाई गई होती तो उम्मीद बचती कि शायद इसमें अगले साल कोई सुधार होगा। लेकिन भारत में लोकतंत्र लगातार कमजोर ही हो रहा है। पिछले साल जम्मू-कश्मीर में लिया गया फैसला, सीएए, एनआरसी आदि के कारण देश में जो माहौल बना, उस वजह से इस सूचकांक में भारत के लोकतंत्र को महज 6.90 अंक मिले थे। तब हम 51वें स्थान पर थे। 2018 में भारत के पास 7.23 अंक थे। इन आंकड़ों से साफ दिखाई दे रहा है कि लोकतंत्र को संभाल पाने में केंद्र सरकार नाकाम साबित हो रही है। देश में लोकतंत्र है, हम सबसे बड़ा लोकतंत्र हैं, ऐसी बातें बार-बार कहने से हालात नहीं बदलेंगे, बल्कि उनके लिए उन खामियों को दूर करना होगा, जिनकी वजह से हमारे लोकतंत्र को त्रुटिपूर्ण बताया जा रहा है। पिछला पूरा साल आंदोलन की भेंट चढ़ गया और रही-सही कसर कोरोना ने पूरी कर दी, जिसमें लॉकडाउन की सख्ती के नाम पर नागरिक अधिकारों को हाशिए पर धकेला गया। दो गज की दूरी का नियम लोगों को एकजुट होने से रोकता रहा, जबकि उसी दौरान राजनैतिक रैलियां और सभाएं पूर्ववत चलती रहीं। जम्मू-कश्मीर में विशेष स्थिति ही खत्म नहीं हुई, मौलिक अधिकार भी दांव पर लग गए। लंबे वक्त तक इंटरनेट पाबंदी, मीडिया पर लगाम, विपक्ष पर कार्रवाई जैसे कार्यों से लोकतंत्र को बाधित किया जाता रहा। अब देश की राजधानी दिल्ली में दो माह से वैसे ही हालात बन गए हैं। सरकार एक ओर किसानों से वार्ता की बात करती है, दूसरी ओर उनके दमन के लिए अपनी शक्ति का बेजा इस्तेमाल कर रही है।

बैरिकेडिंग, कील ठुकवाना, सड़क खुदवाना, सीमाओं पर दुश्मन को रोकने के लिए काम आने वाली कंटीली बाड़ लगवाने जैसे काम किसी नजरिए से लोकतांत्रिक नहीं कहे जा सकते। लोकतंत्र अपने नागरिकों को शांतिपूर्ण प्रदर्शन का अधिकार देता है और किसान दो माह से यही कर रहे हैं। जब इस तरह के कदमों की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आलोचना हुई तो विदेश मंत्रालय सफाई देने के लिए आगे आया। गोदी मीडिया के बाद अब गोदी कलाकारों और खिलाड़ियों की फौज भी सरकार के लिए तैयार हो गई है। ये फौज ट्विटर पर उन अंतरराष्ट्रीय हस्तियों का विरोध कर रही है, जो किसान आंदोलन के समर्थन में आवाज उठा रहे हैं। इसे भारत का आंतरिक मसला बताया जा रहा है, देश को एकजुट रहने की अपील की जा रही है। क्या वाकई हम इतने कमजोर देश हैं कि कुछ लोगों के ट्वीट से हमारी एकजुटता पर खतरा हो सकता है।कभी किसी फिल्म या फिल्म के शीर्षक या वेबसीरीज या पोस्टर से हमारे धर्म को खतरा होने लगता है, कभी विदेशी हस्तियों की टिप्पणियों से हम असुरक्षित महसूस करने लगते हैं, कभी किसी लेखक, कलाकार या पत्रकार की कही बात से देश की सुरक्षा खतरे में पड़ जाती है। कभी घरेलू महिलाओं के सड़क पर बैठ जाने से कभी किसानों के जमावड़े से सत्तातंत्र को डर लगने लगता है। अगर इतनी सारी कमजोरियां हमें एक साथ भयभीत कर रही हैं, तो फिर आत्ममंथन की जरूरत है कि आखिर ये कैसा नया भारत हमने बना लिया है। केंद्र सरकार के कुछ फैसले और कार्रवाइयां लोकतंत्र के लिए घातक साबित हो रही हैं, वहीं अब बिहार सरकार ने यह फरमान जारी कर दिया है कि अगर आपका नाम किसी विरोध प्रदर्शन में शामिल होने के कारण पुलिस की चार्जशीट में आता है, तो न सरकारी नौकरी मिलेगी, न सरकारी ठेका।इससे पहले नीतीश सरकार ने सोशल मीडिया पर सरकार विरोधी टिप्पणी को अपराध की श्रेणी में डाला था। अब उत्तराखंड में भी सोशल मीडिया पर एंटी सोशल या एंटी नेशनल टिप्पणी करने वालों के लिए पासपोर्ट या अन्य सरकारी सेवाओं तक पहुंच मुश्किल हो सकती है। सत्ता की सुरक्षा के नाम पर किए जा रहे ऐसे तमाम फैसले अंततरू भारत के लोकतंत्र को कैसे खाई में गिरा रहे हैं, यह वक्त इसका साक्षी है।

हाइड्रोजन इकॉनमी

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने हाल में पेश बजट में हाइड्रोजन इकॉनमी पर खासा ध्यान दिया है। इस संबंध में उन्होंने न केवल ग्रीन हाइड्रोजन पर काम करने के लिए गठित नैशनल हाइड्रोजन एनर्जी मिशन का जिक्र किया, बल्कि इस मद में ढाई हजार करोड़ रुपये का प्रावधान भी किया है। हाइड्रोजन इकॉनमी आने वाले दौर की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता के रूप में उभर रही है।

इसका मतलब ऐसी अर्थव्यवस्था से है जो पेट्रोल, डीजल और प्राकृतिक गैस जैसे प्रदूषणकारी ईंधनों के बजाय हाइड्रोजन जैसे जीरो पल्यूशन फ्यूल पर चलती हो। वैसे तो इस पर काम काफी पहले से चल रहा है, पर दो-तीन ऐसी दिक्कतें अभी कायम हैं जिनकी वजह से हाइड्रोजन को व्यावहारिक विकल्प के रूप में स्वीकार करना संभव नहीं हो पा रहा। पहली दिक्कत सुरक्षा की है। अत्यधिक ज्वलनशील होने की वजह से हाइड्रोजन अपने साथ हमेशा अत्यधिक खतरनाक का टैग लिए चलती है। इससे चलने वाले किसी भी वाहन को सुरक्षित नहीं माना जा सकता।

ज्वलनशीलता और बहुत कम ताप पर रखे जाने की मजबूरी के चलते इसकी सेफ सप्लाई और भंडारण आज भी एक मुश्किल काम बना हुआ है। इसके अलावा उत्पादन लागत का सवाल भी है। पेट्रो पदार्थों की तुलना में हाइड्रोजन की प्रॉडक्शन कास्ट भी अभी काफी ज्यादा है। इन परेशानियों के बावजूद वैज्ञानिक लगातार लगे हुए हैं और नए-नए प्रयोग कर रहे हैं। ताजा मामला चीन और ऑस्ट्रेलिया की एक रिसर्च टीम का है जिसने एक नए कैटलिस्ट के जरिए सोलर एनर्जी का इस्तेमाल करके समुद्री जल से हाइड्रोजन बनाकर दिखाया है। खर्चे और हाइड्रोजन की क्वांटिटी, दोनों ही लिहाज से इसको अब तक का सबसे अच्छा तरीका माना जा रहा है। हालांकि समुद्री पानी से हाइड्रोजन बनाने का काम कोई पहली बार नहीं हुआ नहीं है।

दो साल पहले की एक स्टडी में तब तक की खोजों के आधार पर अनुमान लगाया गया था कि दुनिया की तात्कालिक तेल जरूरतें पूरी करने भर की हाइड्रोजन पैदा करने के लिए सोलर फ्यूल रिग्स को 63,000 वर्ग मील (लगभग बिहार जितना) समुद्री क्षेत्र कवर करना होगा। बहरहाल, ग्रीन एनर्जी को लेकर ग्लोबल आग्रह कितना ज्यादा है, इसका अंदाजा आला अमेरिकी कार कंपनी जनरल मोटर्स की इस घोषणा से लगाया जा सकता है कि 2035 तक वह पेट्रो पदार्थों से चलने वाली गाड़ियों का उत्पादन पूरी तरह बंद कर देगी। जाहिर है, भारतीय वैज्ञानिकों के सामने कोई ऐसी राह निकालने की चुनौती है जिससे इस युगांतरकारी तकनीकी बदलाव में हम आत्मनिर्भर रह सकें। यह तभी होगा जब अपने प्रयासों का दायरा हम बजट में निर्धारित छोटी-सी राशि के आधार पर न तय करें, बल्कि अपने प्रयासों से यह सुनिश्चित करें कि बड़ी जरूरतों को देखते हुए उनके आधार पर बजट राशि आवंटित की जाने लगे।

आज का शुभ विचार

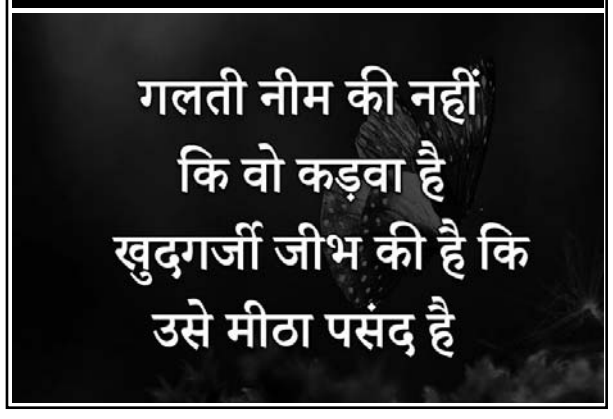

किसानों के लिए क्या मायने रखता है, ताजा बजट

- सुधीर कुमार सुथार

प्रजा के विरोध के बावजूद, जबरन उसकी कथित भलाई के कदम उठाने का यह मॉडल, किसी महाराजाधिराज और उसकी प्रजा के रिश्ते का ही मॉडल है, जिसे मोदी भक्तों को छोड़कर देश में भी कोई जनतंत्र का मॉडल मानने को शायद ही तैयार होगा और बाकी दुनिया में तो सवाल ही नहीं है। नतीजा यह कि पॉप गायिका रियाना से लेकर पर्यावरणीय कार्यकर्ता ग्रेटा थम्बर्ग तक, किसान आंदोलन पर चिंता जता रहे हैं और मोदी सरकार का विदेश मंत्रालय आधिकारिक रूप से इस पर नाराजगी जताकर और दिल्ली पुलिस मुकद्दमा कायम कर, दुनिया भर में भारत की और ज्यादा हंसी उड़वा रहे हैं।

वित्तमंत्री निर्मला सीतारमन ने 2021-22 का आम बजट निश्चित ही कठिन परिस्थितियों में प्रस्तुत किया, परन्तु ये परिस्थितियां उन किसानों के संघर्ष से अधिक विकट नहीं हैं जो पिछले सवा दो महीने से दिल्ली की सड़कों पर तीन सरकारी कानूनों का विरोध कर रहे हैं। इस बजट में कृषि क्षेत्र के लिए क्या प्रावधान हैं और उन किसानों के लिए इस बजट के क्या मायने हैं जो सरकारी नीतियों का विरोध करते हुए सड़कों पर हैं? वित्तमंत्री ने अपने भाषण में उन किसानों या उनके विरोध प्रदर्शनों का उल्लेख भी नहीं किया। वहीं दूसरी ओर उनका प्रमुख प्रयास अपनी सरकार की इस उपलब्धि को गिनाने में रहा कि किस प्रकार पिछले छ वर्षों में विभिन फसलों के खरीद-मूल्य में बढ़ोतरी हुई है और खरीद बढ़ी भी है, खास तौर पर उन्होंने गेहूं और कपास का उल्लेख किया।

वैसे तो बजट में उन सभी सरकारी नीतियों पर ध्यान था जो मोदी सरकार ने पिछले कुछ वर्षों में कृषि क्षेत्र में आरम्भ की हैं, परन्तु इनके साथ कुछ नई नीतियों पर भी ध्यान दिया गया। मसलन- एग्रीकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर फण्ड के नाम से एक नए फण्ड को बनाने की बात रखी गई है। इस फण्ड के निर्माण की घोषणा पिछले वर्ष वित्तमंत्री ने की थी। इस वर्ष इस फंड के लिए 900 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा गया है। इसी प्रकार प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में पिछले वर्ष जहां 12,639 करोड़ रुपयों का प्रावधान था, वहीं अब इसे बढ़ाकर 16,000 करोड़ रुपए कर दिया गया है। इसी प्रकार एक और योजना, श्किसान उत्पादन संगठन या एफपीओ पर भाजपा सरकार का अत्यधिक बल रहा है। इस योजना के तहत देश भर में 10,000 एफपीओ बनाने का लक्ष्य रखा गया है। पिछले वर्ष, जहां इसके लिए 208 रोड़ रुपये का प्रावधान था, इस वर्ष इसे बढ़ाकर 900 करोड़ रुपये कर दिया गया है। अगर अलग-अलग योजनाओं को देखें तो वित्तमंत्री अपने प्रत्येक बजट में कृषि सम्बंधित कोई-न-कोई नई घोषणा करती आई हैं। सर्वप्रथम इसमें प्राकृतिक या जैविक कृषि की बात 2015 में की गई थी, परन्तु अब धीरे-धीरे इस योजना को ठंडे बस्ते में डाल दिया गया है। इसी प्रकार सॉइल हेल्थ कार्ड की नीति को भी काफी जोर-शोर से लागू किया गया था। एफपीओ की नई योजना भी इसी प्रकार अत्यंत आकर्षक रूप में लांच की गई थी, परन्तु इन सब घोषणाओं और इनके वास्तविक क्रियान्वयन में जमीन-आसमान का अंतर है। ऐसा प्रतीत होता है कि ये सभी बजट घोषणाएं एक बार वाह-वाही बटोरने के लिए की जाती हैं और धीरे-धीरे किसी और नई नीति को आरोपित करने हेतु उन्हें पीछे छोड़ दिया जाता है। ऐसे में बजट, बजाय एक व्यावहारिक नीतिगत दस्तावेज के, आर्थिक समीक्षा का एक लेखा-जोखा भर बनकर रह जाता है। वित्तमंत्री द्वारा प्रस्तुत बजट की भी शायद यही स्थिति है। बजट के ही एक दूसरे स्लोगन मिनिमम गवर्नमेंट, मैक्सिमम गवर्नेंस अर्थात न्यूनतम सरकार, अधिकतम प्रशासन के बिना भी अधिकतम शासन को इसी परिप्रेक्ष्य में देखने की आवश्यकता है। यद्यपि ये स्लोगन बजट-भाषण के अंत में है, परन्तु अगर वास्तविक नीतिगत क्रियान्वयन की बात करें तो यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि बजट और अन्य सभी घोषणाओं पर यही स्लोगन भारी है। कम सरकार के साथ अधिकतम शासन केवल तभी संभव है जब बाजारू शक्तियों के हाथों में नीतियों और शासन की बागडोर सौंप दी जाए, भले ही उसके परिणाम कितने भी घातक क्यों न हों। अभी तक की अधिकांश सरकारी नीतियों का क्रियान्वयन इसी को दिखाता है। मिसाल के तौर पर, मार्च 2020 में हमने अरुणाचल प्रदेश में एफपीओ की नीति पर एक अध्ययन किया था। अरुणाचल प्रदेश के पासी घाट शहर में, (जिसे ईस्ट-सियांग जिला कहते हैं) हमने कृषि विभाग के अधिकारियों और कुछ ऐसे किसानों से बातचीत की जो इस योजना से जुड़े हुए थे। केंद्र सरकार पूर्वोत्तर के राज्यों में आर्गेनिक फार्मिंग को लेकर काफी उत्साहित है और इसी कड़ी में पूर्वोत्तर, विशेष तौर पर अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम में एफपीओ योजना को प्रोत्साहित करना चाहती है। इस अध्ययन के दौरान हमने पाया कि इस पूरे जिले में केवल कुछ ही किसान एफपीओ के बारे में जानते हैं। वह भी केवल बड़े किसान हैं जो बड़े पैमाने पर खेती करते हैं। एफपीओ योजना का उद्देश्य किसानों को अपने उत्पादन का बेहतर दाम प्राप्त करने, बाजार के अनुसार बेहतरीन प्रक्रिया अपनाने और जानकारी देने का काम करना है। इस हेतु सरकार ने कुछ कंपनियों को ये जिम्मा दिया है कि वे किसानों को इस बाबत ट्रेनिंग प्रदान करें। कंपनियों को इस ट्रेनिंग का पेमेंट सम्बंधित राज्य का कृषि विभाग करता है। पासी घाट में ये जिम्मा गुजरात की एक कंपनी को दिया गया था जो कि सिक्किम में किसी प्रोजेक्ट में पहले से शामिल थी। हमें बातचीत के दौरान पता चला कि इस कंपनी ने अपनी ट्रेनिंग के दौरान किसानों को मक्का के एक ऐसे बीज के इस्तेमाल की सलाह दी जिसे वे उत्तर भारत से लाये थे। उनका कहना था कि मक्का के इस बीज का उत्पादन बाजार में बेचने हेतु अधिक उपयुक्त है। वहीं पासी घाट के किसानों का कहना था कि हमारा स्थानीय बीज कहीं अच्छी पैदावार देता है और उसका उत्पादन भी अधिक है। परन्तु ट्रेनिंग कंपनी लगातार उत्तर भारत के बीज को खरीदने का दबाव किसानों पर बनाए हुए थी। इस सब में स्थानीय प्रशासन का कहना था कि एफपीओ के नाम पर स्थानीय कृषि को लगातार दबाने का प्रयास हो रहा है। चूंकि इसके लिए पैसा केंद्र सरकार से आता है, इसलिए राज्य सरकार इसे गंभीरता से नहीं ले रही। दूसरी ओर, वास्तव में इसका प्रमुख उद्देश्य, ट्रेनिंग के नाम पर कुछ कंपनियों को प्रोत्साहित करना है। ऐसी कंपनियों को स्थानीय परिस्थितियों की कोई जानकारी नहीं होती।

ये एक उदाहरण मात्र है कि किस प्रकार बजट की घोषणाओं और जमीन पर शासन की वास्तविकताओं में कितना अंतर है। कमोबेश यही स्थिति श्प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की भी है, परन्तु सरकार इन तथ्यों को मानने को तैयार नहीं है। एग्रीकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर फण्ड में भी इसी प्रकार पीपीपी (पब्लिक-प्राइवेट प्रोजेक्ट) मॉडल की बात की गई है, परन्तु धीरे-धीरे इस मॉडल के कॉर्पोरेट के पक्ष में तब्दील होने की सम्भावना से इंकार नहीं किया जा सकता।

बौखलाई सरकार की बदहवास हरकतें

- राजेन्द्र शर्मा

मोदी सरकार ने यह समझा था कि 26 जनवरी की ट्रैक्टर रैली के दौरान, एक छोटे से तथा अलग-थलग ग्रुप से जुड़ी चंद घटनाओं को, मीडिया व प्रचार के साधनों पर अपने लगभग मुकम्मल नियंत्रण के जरिए अनुपातहीन तरीके से फुलाकर, वह किसानों के दुनिया के संभवतरू सबसे बड़े प्रदर्शन को लोगों की नजरों से छुपाने कामयाब हो जाएगी। वह अपने प्रचार हमले के जरिए किसानों के समूचे आंदोलन की ही वैधता, उसके हिंसक होने के नाम पर खत्म करने में तथा जनता को उसके खिलाफ खड़ा करने में भी सफल हो जाएगी। यहां से आगे, शासन की दमनकारी ताकत का इस्तेमाल कर आंदोलन को कुचलना, उसके लिए एक ही कदम दूर रह जाता था। आखिरकार, यह ऐसा आजमूदा तरीका है, जिसे मोदी-शाह की सरकार इससे पहले, सीएए-एनआरसी के खिलाफऐसे ही देशव्यापी, बहुत हद तक स्वतरूस्फूर्त, अभूतपूर्व जनांदोलन को दबाने के लिए, आजमा कर देख भी चुकी थी। सभी ने देखा कि किस तरह, लाल किले पर हिंसा तथा तिरंगे के अपमान के अतिरंजित तथा अर्द्ध-सत्यों के सहारे खड़े किए गए आख्यान के प्रचार अंधड़ के बीच, न सिर्फ हिंसा के सिलसिले में अंधाधुंध गिरफ्तारियों और अधिकांश महत्वपूर्ण किसान नेताओं को एफआईआर में नामजद करने के जरिए, आंदोलन के नेतृत्व को छिन्न-भिन्न करने की कोशिश की गई, बल्कि करीब दो महीने से राजधानी के विभिन्न बार्डरों पर लगे विशाल सत्याग्रह जमावड़ों को जोर-जबर्दस्ती से हटाने की भी कोशिश की गई। पुनरू इसके लिए भी एक तो श्स्थानीयश् लोगों के नाम पर, संघ-नियंत्रित लम्पट समूहों को, श्जवाबी प्रदर्शनश् के नाम पर, सत्याग्रह पर बैठे आंदोलनकारियों को डराने और चोट पहुंचाने के लिए भी, जाहिर है कि पुलिस के पूरे संरक्षण में, एक-एक कर इन बार्डरों पर भेजा गया। गोली मारो सालों को और जय श्रीराम के नारे लगाती ऐसी कथित रूप से विक्षोभ से उग्र भीड़, सबसे पहले यानी 28 गाजीपुर बार्डर पर पहुंची। इस भीड़ को भाजपा का लोनी का विधायक उकसा रहा था और खासतौर पर सिख सत्याग्रहियों के खिलाफ हिंसा कर के, जबर्दस्ती धरना हटाने की धमकियां दे रहा था। इसके पूरक के रूप में, उत्तर प्रदेश की आदित्यनाथ सरकार ने पुलिस व प्रशासन को राज्य भर में तमाम किसान धरनास्थल आधी रात तक खाली कराने के मौखिक आदेश भी दे दिए थे। इसी आदेश के साथ, हमले के सारे साज-सामान से लैस हजारों पुलिस वाले गाजीपुर बार्डर पर बैठे सत्याग्रहियों को घेर चुके थे और गोदी मीडिया के गिद्ध, जाहिर है कि सरकारी सूत्रों से इशारा पाकर, आंदोलन का डेरा उठने की सबसे पहले, सबसे तेज कवरेज करने के लिए मंडराने भी लगे थे।

लेकिन, तभी कुछ ऐसा हुआ, जिसकी किसी ने भी कल्पना नहीं की थी, न किसान आंदोलनकारियों ने और आंदोलन को दबाने पर तुली मोदी सरकार ने। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसान नेता राकेश टिकैत, जिनके पिता महेंद्र सिंह टिकैत, चौधरी चरणसिंह के बाद, पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सबसे बड़े किसान नेता थे, शासन और सत्ताधारी दल के हिंसा के इरादों के सामने, शांतिपूर्ण सत्याग्रह दे रहे किसानों की लाचारी देखकर, रो पड़े। और सोशल मीडिया की प्रभावी उपस्थिति के इस जमाने में, उनके रो पड़ने का वीडियो वाइरल हो गया। फिर क्या था, अधेड़ किसान नेता के आंसुओं से जैसे तूफान उठ खड़ा हुआ। यह किसान के आत्मसम्मान के लिए चुनौती थी। किसान को इतना लाचार कौन बना सकता है? कुछ ही घंटों में, जाहिर है कि पहले सोशल मीडिया पर ही इसकी खबरें आने लगी थीं कि अगले ही दिन, मुजफ्फरनगर में किसानों की महापंचायत बुलाई गई है। फिर खबर आई कि हरियाणा में एक से ज्यादा जगहों पर किसानों ने सरकार के दमनकारी हथकंडों के खिलाफ राजमार्ग रोकने शुरू कर दिए थे। फिर खबर आई कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में और हरियाणा में जगह-जगह गांवों में किसानों ने रात में ही आपात बैठकें कर के, गाजीपुर बार्डर की ओर वाहनों से कूच करना शुरू कर दिया था। इसके बाद, कहां तो आधी रात तक आंदोलन के तंबू उखड़ने थे और कहां रात के ग्यारह बजे तक न्यूज चौनलों तक पर इसकी ब्रेकिंग न्यूज आनी शुरू हो गई कि गाजीपुर में लगाई गई अतिरिक्त पुलिस, वापस लौटनी शुरू हो गई है। रात साढ़े ग्यारह-बारह बजते-बजते, गोदी चौनलों के गिद्ध निराशा के साथ अपने डैने समेट कर उड़ चले थे। फिर भी सीएए-एनआरसी फार्मूले की आजमाइश बंद नहीं हुई। अगले ही दिन, ये स्थानीय विक्षुब्ध, बाकायदा पुलिस के मिलीभगत से सिंधू बार्डर पर सत्याग्रहियों से इलाका खाली करने की मांग करने पहुंच गए। लाठी-डंडों से लैस इन लोगों को, सत्याग्रहियों के कैंपों पर तोड़-फोड़ करने, तंबुओं को गिराने और वहां मौजूद हजारों सत्याग्रहियों को गालियां देकर भड़काने और रोकने के लिए आए कुछ नौजवान किसानों से भिड़ने का भी मौका दिया गया। लेकिन, जब किसान आंदोलनकारियों ने इन हमलावर गिरोहों को रोकने की कोशिश की, पुलिस ने उन पर ही डंडे बरसाना शुरू कर दिया। दर्जनों किसान आंदोलनकारियों के चोटें भी आईं और उनमें से अनेक को गिरफ्तार भी किया गया, लेकिन हमलावर उपद्रवियों में से किसी को भी पुलिस ने नहीं पकड़ा। बाद में, ऐसे ही श्क्षिुब्ध स्थानीयश् टीकरी बॉर्डर पर भी पहुंचे। लेकिन, इस बीच 26 जनवरी की ट्रैक्टर परेड के बाद, इन धरनास्थलों पर आंदोलनकारी किसानों की संख्या में अगर कोई कमी आई भी थी, तो वह प्रक्रिया एकदम पलट चुकी थी और आंदोलनकारी किसानों की संख्या तेजी से बढ़ गई थी। इसलिए, टीकरी बार्डर पर ये श्प्रदर्शनकारीश् सिर्फ प्रदर्शन कर के ही लौट गए। बाद में टीकरी बॉर्डर से करीब एक हजार किसान आंदोलनकारियों को सिंधू बार्डर शिफ्ट भी किया गया, ताकि वहां आंदोलनकारियों की अपनी सुरक्षा व्यवस्था को पुख्ता किया जा सके। लेकिन, भाजपाई राज के दुर्भाग्य से इस बीच हवा पलट चुकी थी। मुजफ्फरनगर से शुरू हुआ किसान महापंचायतों का सिलसिला, पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ ही केंद्रों से होते हुए, जल्द ही एक ओर हरियाणा में और दूसरी ओर राजस्थान में पहुंच गया। नतीजा यह हुआ कि उत्तर प्रदेश में बड़ौत में और हरियाणा-उत्तरप्रदेश की सीमा पर पलवल में और कुछ अन्य जगहों पर भी पुलिस ने कथित स्थानीय लोगों यानी संघ गिरोह को साथ लेकर, जो सत्याग्रह स्थल खाली करा लिए थे, सत्याग्रहियों के लिए चल रहे लंगर बंद करा दिए थे और किसान आंदोलनकारियों द्वारा राजमार्गों पर बंद कराए गए टोला प्लाजा, जबरन खुलवा लिए थे, वहां तेजी से 26 जनवरी से पहले की स्थिति बहाल होने लगी। सत्याग्रह स्थलों पर हमले की एक तरह से आखिरी घटना, भाजपा-शासित ग्वालियर में हुई, जहां संघी उपद्रवियों ने धरने पर बैठे लोगों से, जिनमें महिलाएं भी थीं, मार-पीट की। लेकिन, दो-दिन बाद ही न सिर्फ ग्वालियर का धरना और जोरदार तरीके से दोबारा चालू हो गया, बल्कि खुद कृषि मंत्री के अपने क्षेत्र, डबरा में किसानों की विशाल सभा ने तीनों काले कृषि कानून वापस लेने की जोरदार मांग उठाई। यह दूसरी बात है कि इस सबके बावजूद, झूठ को सच बनाकर चलाने में असीम विश्वास करने वाली मोदी सरकार के कृषि मंत्री को, राज्यसभा में यह दावा करने में हिचक नहीं हुई कि श्सिर्फ एक राज्य के कुछ किसानों कोश् विवादित कृषि कानूनों से दिक्कत है! इस तरह, अब जबकि तीन नये कृषि कानूनों को वापस कराने की मांग को लेकर, दिल्ली की सीमाओं पर डटे किसानों का धरनाध् सत्याग्रह अपने पिचहत्तरवें दिन के करीब पहुंच रहा है, एक बात बिल्कुल साफ साफ देखी जा सकती है। इस अभूतपूर्व किसान आंदोलन को दबाने की, लाल किला प्रकरण को हथियार बनाने समेत मोदी राज की सारी कोशिशें न सिर्फ विफल हो गई हैं बल्कि वास्तव में उल्टी ही पड़ रही हैं। इन कृषि कानूनों के खिलाफ किसान पंचायतों के जरिए, किसानों की जैसी जबर्दस्त गोलबंदी 26 जनवरी के बाद से हुई है, वैसी कम से कम हरियाणा, राजस्थान तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश में इससे पहले नहीं हुई थी। इसके अलावा इन कानूनों के खिलाफ बिहार समेत लगभग पूरे देश में किसानों की जैसी व्यापक गोलबंदियां हुई हैं, खासतौर पर महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल तथा बंगाल में जैसे विशाल प्रदर्शन हुए हैं, उन्हें भी मोदी सरकार के अंधभक्तों के सिवा और कोई अनदेखा नहीं कर सकता है। उधर, किसान आंदोलन के श्अराजनीतिकश् दिखाई देने के अतिरिक्त आग्रह से, एक तरह की दुविधा में रहीं विपक्षी राजनीतिक पार्टियों ने भी, विपक्ष की अपनी भूमिका खोज ली है और संसद के चालू सत्र में एकजुट होकर और लगातार, किसान आंदोलन के मुद्दे पर मोदी सरकार को घेर रही हैं। संक्षेप में यह कि मोदी सरकार को साफ नजर आ रहा है कि इस मामले में पांव पीछे खींचने के सिवा उसके लिए दूसरा कोई रास्ता नहीं है। लेकिन, अपने दूसरे कार्यकाल में मोदी सरकार जैसे हवाई घोड़े पर सवार हैं और जैसे सबसे बढ़कर मोदी को देवता के रूप में स्थापित करने में लगी है, वह पांव पीछे खींचती कैसे दिखाई दे सकती है? देश भर के किसान कहें तब भी वह कृषि कानूनों को वापस लेकर, उनके सामने झुकती हुई कैसे दिखाई दे सकती है? और इसका कोई बीच का रास्ता अब है नहीं कि किसान आंदोलन भी वापस ले लें और मोदी सरकार झुकती हुई भी दिखाई नहीं दे। इसीलिए, यह सरकार अब हताशा में अंधाधुंध कार्रवाइयां कर रही है। सुरक्षा सुनिश्चित करने के नाम पर दिल्ली में तीन सबसे बड़े आंदोलनकारी बार्डरोंकृसिंधू, टीकरी तथा गाजीपुरकृपर कंटीले तारों से लेकर, सड़क पर स्थायी रूप से बहुत बड़ी-बड़ी कीलें गाड़ने तथा खाइयां खोदने व सड़कें काटनेध् बंद करने तक के जरिए, ऐसे प्रबंध किए गए हैं जिनसे ये बार्डर, अंतरराष्ट्रीय सीमाओं से भी ज्यादा खतरे वाले लगने लगे हैं। और इन सुरक्षा प्रबंधों की आड़ में, न सिर्फ धरना स्थलों तक दिल्ली से लोगों का आना-जाना बहुत-बहुत मुश्किल बना दिया गया है बल्कि धरना स्थलों की बिजली, पानी की आपूर्ति बंद करने से आगे, उनकी शौचालयों आदि तक पहुंच को भी बहुत मुश्किल कर दिया गया है। एक भिन्न स्तर पर आंदोलनकारियों का टिकना मुश्किल बनाने का ऐसा ही काम, इन सभी इलाकों में और खासतौर पर हरियाणा में दूसरी अनेक जगहों पर भी, इंटरनैट बंद कराने के जरिए भी किया गया है।

आज का राशि फल

मेषः- कुछ आर्थिक प्रगति के लिए मन में नई-नई युक्तियां उत्पन्न होंगी। कुछ नई सफलताएं सुखों का आगाज करेंगी। योजनाओं के फलीभूत होने से मन प्रसन्न होगा। शिक्षा में किया गया परिश्रम तीव्र होगा।

बृषभः- नैतिक-अनैतिक आदि के बारे में सोचने वाला मन भौतिक परिवेश के साथ तालमेल बिठाने में असमर्थ होगा। नाजुक संबंधों में भावनात्मक तालमेल बिठाने का प्रयत्न करें। आलस्य कतई न करें।

मिथुनः- दूसरों की सफलता से अपने अंदर हीनता न आने दें। नौकरी का वातावरण थोड़ा अरुचिकर होगा तथा स्थान परिवर्तन का योग है। पारिवारिक संबंधों में कटुता जैसी स्थिति उत्पन्न न होने दें।

कर्क :- रोजगार में कुछ आकस्मिक सफलता का योग है। पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति में व्यय संभव। अपनी क्षमताओं व गुणवत्ता पर भरोसा रखें क्योंकि आगे बहुत सारी सफलताएं मिलेंगी।

सिंहः- रोजगार क्षेत्र में नये अवसर उत्साह का संचार करेंगे। आवेश में लिये गये निर्णय से हानि संभव। असीम प्रतिभाओं के बावजूद भी हीन मन प्रतिभाओं के लाभ से वंचित करेगा। घर में खुशहाली रहेगी।

कन्याः- आपकी सारी समस्याएं खुद ब खुद सुलझ जाएंगी। आप धैर्य से समय का इंतजार करें। दूसरों की आलोचना का असर अपने मनोबल पर न पड़ने दें। ग्रहों की अनुकूलता अच्छे अवसर प्रदान करेगी।

तुलाः- कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेने में मन दुविधाग्रस्त होगा। विरोधियों की प्रबलता से कार्यक्षेत्र में कठिनाइयां संभव। जीविका क्षेत्र में नये आयाम उत्साहित करेंगे। कल्पनाओं में जीना छोड़ वर्तमान में जियें।

वृश्चिकः- बीती बातों को भूल वर्तमान में जीने का प्रयास करें। नये कायरें के क्रियान्वयन हेतु प्रयत्न तीव्र होगा। कुछ नये उत्साह व कार्य क्षमता की अनुभूति करेंगे। कल्पनाएं सार्थकता हेतु उद्वेलित करेंगी।

धनुः- दूसरों की बात इधर से उधर करना आपका शोभा नहीं देता है। किसी सहकर्मी के खराब व्यवहार से कष्ट संभव। कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेने में मन दुविधाग्रस्त होगा। जीवन साथी के साथ मधुरता कायम रखें।

मकरः- प्रयासरत कोई महत्वपूर्ण कार्य हल होने से मन प्रसन्न होगा। कार्यक्षेत्र में अपनी क्षमताओं का भरपूर लाभ उठाएंगे। किसी विपरीतलिंगी संबंध के प्रति आकर्षण बढ़ेगा। रोजगार में समस्याएं आएंगी।

कुंभः- राजनीतिक सरगर्मियों से व्यस्तता बढ़ेंगी। मित्रवत संबंधों का लाभ प्राप्त होगा। अच्छी भावनात्मक अभिव्यक्ति से संबंध मधुर बनेंगे। रोजगार की समस्याओं को लेकर मन चिंतित होगा।

मीनः- किसी नयी दिशा में सकारात्मक सोच अवश्य रंग लायेगी। पुरानी घटनाओं के स्मरण से मन को कष्ट संभव। कोई महत्वपूर्ण आकांक्षा अपनी सार्थकता हेतु आपको उद्वेलित करेगी। घर में प्रसन्नता रहेगी।

प्रधानमंत्री किसान समाधान दिवस का आयोजन

उन्नाव ।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजनान्तर्गत आधारकार्ड के अनुसार नाम और संख्या में संशोधन के लिये प्रधानमंत्री किसान समाधान दिवस का आयोजन जनपद के सभी 16 विकास खण्ड के राजकीय कृषि बीज भण्डारों पर जिलाधिकारी रवीन्द्र कुमार के निर्देशानुसार किया गया।

समाधान दिवस में कृषि विभाग, राजस्व विभाग, ग्राम्य विकास विभाग, पशुपालन विभाग के अधिकारियों ने उपस्थित रहकर किसानों की समस्याओं का समाधान कराया। समाधान दिवस में आधार कार्ड के अनुसार 5445 कृषकों का नाम संशोधन होना था जिसमे से 106 कृषकों ने अपना संशोधन कराया। आधारकार्ड से नम्बर में संशोधन का कार्य 13690 कृषकों का होना था जिसमे से 234 कृषकों

ने संशोधन कराया। ओपेन सोर्स से पंजीकृत 1572 किसानों में से 215 किसानों के अभिलेख जमा किये गये जिनका अप्रूवल किया गया। इसके अलावा अन्य कारणों से समाधान हेतु 522 किसानों के आवेदन पत्र जमा किये गये।

प्रधानमंत्री किसान समाधान दिवस का आयोजन कल भी किया जायेगा जिसमें विकास खण्ड के किसान भाई योजनान्तर्गत अपने संशोधन हेतु राजकीय कृषि बीज भण्डारों पर बैंक पासबुक आधारकार्ड खतौनी की छायाप्रति मूल के साथ ले जाये।

दीवार काटकर ट्रैवल्स के दुकान से हजारों की चोरी

उन्नाव। थाना आसीवन क्षेत्र में चोर दुकान के पीछे से ईंट निकालकर अंदर पहुंचे और कम्प्यूटर प्रिंटर तथा काउंटर से चार हजार रुपये की नगदी सहित पचास हजार रूपए का सामान पार कर दिया। सुबह पीड़ित दुकान खोलने पहुंचा तो घटना की जानकारी हुई। जिसने अज्ञात चोरों के विरूद्ध पुलिस को तहरीर दी है।

मियागंज कस्बा निवासी अल्ताफ खान लखनऊ-बांगरमऊ मार्ग पर अस्पताल के सामने टूर एंड ट्रैवल्स की दुकान चलाता है। बीतीरात चोरों ने दुकान के पीछे एसी के होल की ईट निकालकर अंदर रखा कम्प्यूटर, प्रिंटर, सीपीओ, दो मानीटर, फिंगर मशीन व एम्पलीफायर सहित पचास हजार रुपए का सामान पार कर दिया। इस सम्बन्ध में थाना प्रभारी राजेश कुमार सिंह ने बताया कि तहरीर मिली है जांच की जा रही है।

जिलाधिकारी ने फ्रंटलाइन वर्कर्स के तहत कोविड वैक्सीन का टीका लगवाया

उन्नाव ।

जिलाधिकारी रवीन्द्र कुमार ने आज फ्रंटलाइन वकर्स के तहत कोविड वैक्सीन का टीका लगवाया। वैक्सीन लगवाने के उपरान्त जिलाधिकारी ने उपस्थित मीडिया एवं स्वास्थ्य कर्मियों से अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि जनपद में फ्रंटलाइन वकर्स को पांच सेशन में वैक्सीन का टीका लगाये जाने का कार्यक्रम निर्धारित किया गया था।

जो बहुत ही सफलता पूर्वक चल रहा है। देश के वैज्ञानिकों की प्रंशसा करते हुये कहा कि वैक्सीन देश की उपलब्धि है और पूरी तरह से उपयोगी है। जिलाधिकारी ने वैक्सीन का टीका लगवाने के उपरान्त बताया कि इस वैक्सीन से किसी भी प्रकार का साइड इफैक्ट नही है। उन्होंने अपील की कि सभी लोग अपनी सुविधानुसार बिना सन्देह किये वैक्सीन अवश्य लगवाये। अफवाहों पर ध्यान न दे। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी डा0 राजेश कुमार प्रजापति, अपर जिलाधिकारी राकेश कुमार सिंह, राकेश गुप्ता, नगर मजिस्ट्रेट चंदन कुमार पटेल, उपजिलाधिकारी अंकित शुक्ला सहित राजस्व विभाग से जुड़े अधिकारी/कर्मचारियों ने भी कोविड वैक्सीन का टीका लगवाया।

खबरें एक नजर में

44 राजस्वकर्मियों का हुआ टीकाकरण

सफीपुर-उन्नाव। कोरोना टीकाकरण के दूसरे राउंड में फ्रंट लाइन वर्कर्स का गुरुवार को टीकाकरण शुरू हुआ। एसडीएम सहित 44 राजस्व कर्मियों ने टीका लगवाया। कोरोना से लड़ाई में स्वास्थ्य कर्मियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करने वाले राजस्व कर्मियों को शुक्रवार से शुरू हुए दूसरे राउंड में टीकाकरण शुरू किया गया। सीएचसी सफीपुर में लगे टीकाकरण कैम्प में प्रभारी चिकित्साधिकारी डॉक्टर शरद वैश्य की देखरेख में एसडीएम सत्यप्रिय सिंह सहित 44 राजस्व कर्मियों को वैक्सीन लगाई गई। डॉक्टर वैश्य ने बताया आज के टीकाकरण में 51 लोगो को चिन्हित किया गया था जिसमें 42 राजस्व व दो स्वास्थ्य कर्मियों को टीका लगाया गया।

श्री भक्तमाल कथा का आयोजन 9 से

शुक्लागंज-उन्नाव। नगर में श्री राधाकृष्ण दुर्गा मंदिर पोनीरोड में आगामी 9 फरवरी को कथा भक्तमाल का शुभारंभ किया जा रहा है। कथा के पूर्व कलश शोभायात्रा निकाली जाएगी। वही कथा व्यास पं0 शिवकुमार दीक्षित के द्वारा होगी तथा दोपहर 1 बजे से शाम 5 बजे तक कथा होगी। इस नवम वार्षिक उत्सव के उपलक्ष में संरक्षक वीरेंद्र शुक्ला ने एक आयोजित प्रेसवार्ता में श्री भक्तमाल की कथा के आयोजन में धर्मप्रीत भक्तों से अपील की है कि इस पावन अवसर पर कथा में उपस्थित होकर पुण्य अर्जित कर अपने को कृतार्थ करें। इस दौरान कमल दोसर, मीना दोसर, संजय तिवारी, उत्तम गुप्ता, विनय मिश्रा, पवन गुप्ता, प्रसून दोसर रामलखन गुप्ता सुशील गुप्ता आजाद शुक्ला गोपाल दोसर रवि गुप्ता महेंद्र तिवारी नयन गुप्ता अनुज दोसर आदि उपस्थित रहे।

क्षेत्राधिकारी सदर ने की जंगलों में पीएसी बल के साथ सघन काम्बिंग

सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक सोनभद्र के निर्देशानुसार जनपद में नक्सली संचरण पर प्रभावी रोकथाम हेतु आज क्षेत्राधिकारी सदर द्वारा थाना पन्नूगंज पुलिस के साथ ग्राम सिलहट के जंगलों मेंए थाना हाथीनाला पुलिस द्वारा ग्राम बहराडोल व डाला पीपल के जंगलों में तथा थाना बभनी पुलिस द्वारा ग्राम टेकुआरी व ग्राम बरवाटोला के जंगलों में पीएसी बल के साथ संघन काम्बिंग की गयी।

अवैध गांजे के साथ युवक गिरफ्तार

सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक सोनभद्र द्वारा मादक पदार्थो की अवैध बिक्रि के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक सोनभद्र व क्षेत्राधिकारी घोरावल सोनभद्र के नेतृत्वध् मार्गदर्शन से थाना करमा पुलिस द्वारा मुखबिर की सूचना पर 05ण्02ण्2021 को समय 05ण्45 बजे केकराही रेलवे क्रासिंग के पास से 02 अभियुक्तगण क्रमश संजय सिंह पुत्र बब्बन सिंह निवासी ग्राम बसवा थाना करमा जिला सोनभद्रए सोनू पुत्र इन्द्रबहादुर सिंह निवासी ग्राम करकी माइनर थाना करमा जिला सोनभद्र को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से 01.01 किलोग्राम नाजायज गांजा बरामद कर माननीय न्यायालय भेजा गया। गिरफ्तार अभियुक्तगण का नाम व पता संजय सिंह पुत्र बब्बन सिंह निवासी ग्राम बसवा थाना करमा सोनभद्र उम्र 30 वर्षए सोनू पुत्र इन्द्रबहादुर सिंह निवासी ग्राम करकी माइनर थाना करमा सोनभद्र उम्र करीब 20 वर्ष बरामदगी का विवरण अभियुक्तगण के कब्जे से कुल 02 किलोग्राम नाजायज गांजाए एक अदद मोटरसाईकिल नंण् न्च् 65 ठॅ 6506 गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम का विवरण उ0नि0 रवीन्द्र प्रसाद थाना करमा सोनभद्र, उ0नि0 राजेश कुमार पाण्डेय थाना करमा सोनभद्र, हे0का0 बृजेश यादव थाना करमा सोनभद्रए का0 शशिकान्त थाना करमा सोनभद्र, का0 जितेन्द्र कुमार थाना करमा सोनभद्र ने गिरफ्तार किया।

धार्मिक रीति-रिवाजों से 127 जोड़े हुए एकदूजे के

सोनभद्र। मुख्य मंत्री सामूहिक विवाह योजना ''के अन्तर्गत शुक्रवार को सोनभद्र के डायट परिसर परिसर में धूम-धाम के साथ धार्मिक रीति-रिवाजों से 127 जोड़ों की सरकारी खर्चे पर शादी सम्पन्न हुई। प्रदेश की लोकप्रिय सरकार के मंशा के मुताबिक मुख्य मंत्री जी सामूहिक विवाह योजना के अन्तर्गत सोनभद्र जिले के डायट परिसर में 127 जोड़ों की शादी सम्पन्न हुई। शादी समारोह की सारी जिम्मेदारी जिलाधिकारी श्री अभिषेक सिंह ने पूरे टीम के साथ संभाले हुए थे। कार्यक्रम में मा0 विधायक घोरावल डॉ0 अनिल कुमार मौर्या, सांसद प्रतिनिधि कुलदीप पटेल सहित समाजसेवी जनप्रतिनिधि, सरकारी अधिकारी व कार्मिकगण, धार्मिक पूजा, जयमाल, सिन्दूरदान, शादी के सात फेरे कराकर शादी सम्पन्न करायी। शादी समारोह में भोज का भी आयोजन किया गया। शादी समारोह की तैयारी वर व वधु पक्ष द्वारा धार्मिक रीति-रिवाज के साथ की गयी। बाकायदे बारात आयी, बारात का स्वागत किया गया, वर व वधु पक्ष के लोगों का सेवा सत्कार किया गया। मुख्य मंत्री सामूहिक विवाह योजना' के अन्तर्गत सरकारी खर्चे पर मा0 जनप्रतिनिधियों की मौजदूगी में 127 जोड़ों की शादी करायी गयी। उन्हें सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी दी गयी। शादी के कन्या को 35 हजार रूपये बैंक खाते के माध्यम से आन्तरिक की जायेगी, 10 हजार रूपये का सामग्री (बिछिया, कपड़ा, पायल चांदी के तथा 07 बर्तन), 6 हजार रूपये कार्यक्रम आयोजन हेतु भोजन, फर्नीचर, पेयजल, पण्डाल, पूजन सामग्री एवं अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं की गयी थी। मुख्य मंत्री सामूहिक विवाह योजना '' में नव वर-वधू को अन्य उपहार भी दिये गये जैसे- एक जोड़ी बिछिया चॉदी की, एक जोड़ी पायल चांदी की, एक गद्दा, एक कम्बल, दो बेडशीट, दो तकिया, एक बक्सा, एक की पैड मोबाइल, एक टेबल फैन, एक तीन लीटर का कुकर, एक डीनर शेट स्टील का, एक श्रृंगारदान, एक लेडीज घड़ी, एक दीवाल घड़ी, एक कलश, एक साड़ी कढ़ाईदार, पैंक व शर्ट का कपड़ा, चुनरी, भांवर हेतु गुलाबी भेटा आदि सामान भेंट किया गया। डायट परिसर शादी समारोह के रूप में तब्दील था। घराती व बाराती के पक्ष के जो नागरिक मौके पर पहुंचे सभी का सत्कार किया गया और लजीज पकवान भी खिलाये गये। शंख ध्वनि से शादी समारोह श्री गणेश किया गया और पंचांग पूजन धार्मिक रीति-रिवाज से किया गया। शादी समारोह को सम्बोधित करते हुए जनप्रतिनिधियों ने कहा कि भारत व प्रदेश सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाओं पात्रों को लाभान्वित किया जाय। इसके लिए योजनाओं का प्रचार-प्रसार कर लोगों को जागरूक किया जाय,

फार्मेसी की छात्राओं को दी गयी कानूनी जानकारी

सेमिनार

- वी फाउंडेशन द्वारा आयोजित किया वृहद सेमिनार

उन्नाव

वीमेन एम्पोवेर्मेंट वी फाउंडेशन के तत्वावधान में सोहरामऊ स्थित आईपीएसआर ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन के ऑडिटोरियम में महिलाओं को कानूनी जागरूकता के लिए वृहद संगोष्ठी आयोजित हुई।

मुख्य वक्ता व फाउंडेशन के संस्थापक पूर्व डीआईजी रतन कुमार श्रीवास्तव, उपाध्यक्ष व वरिष्ठ पत्रकार अनिल सिंदूर, संस्थान के संस्थापक बद्रीविशाल तिवारी, सोहरामऊ एसओ सुरेश चंद्र पटेल, मुख्य समन्वयक रामशंकर वर्मा ने माँ सरस्वती का पूजन अर्चन कर दीप प्रज्वल्लन कर शुरुआत की। छात्राओं ने वाणी वंदना का गान किया। संस्थान के चेयरमैन श्री तिवारी ने मंचासीन अतिथियों सहित समन्वयकों डॉ आशीष श्रीवास्तव, डॉ मनीष सिंह सेंगर, श्रीमती तबस्सुम नफीस, डॉ शशिरंजना, श्रीमती नीना दीक्षित और सेमिनार में विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित मिशन शक्ति ब्रांड एम्बेसडर और राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित डॉ स्नेहिल पांडेय न्याय विभाग से अधिवक्ता कमलेश दीक्षित आदि को बुके भेंट कर स्वागत किया। मुख्य वक्ता श्री श्रीवास्तव ने सेमिनार शीर्षक ष्कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न की रोकथाम अधिनियम 2013 पर विस्तार से बताते हुए कहा कि महिलाएं अपने कार्यस्थल पर कई तरह के उत्पीड़न का शिकार होती रहती हैं और कानूनी अधिनियम की जानकारी न होने के कारण न्याय से वंचित रह जाती हैं।

ऐसी स्थिति में यदि पीड़ित महिला अपनी गुहार नही लगा पा रही या उसको थाने स्तर से समाधान नही मिल रहा तो वह स्वयं या उसका कोई परिजन भी न्यायालय में इस अधिनियम का सहारा लेकर न्याय प्राप्त कर सकती है। कार्यस्थल पर उत्पीड़न में शारीरिक स्पर्श या इस दिशा में और आगे बढ़ना, यौन स्वीकृति की मांग या अनुरोध, कामरंजित टिप्पड़ियाँ, कामोत्तेजक सामग्री का प्रदर्शन, यौन संबंधी कोई अशोभनीय शारीरिक, मौखिक या सांकेतिक आचरण आदि शामिल हैं। ऐसे प्रकरणों में एक आंतरिक कमेटी का भी गठन किया गया है जिसके माध्यम से पीड़िता बिना सामने आए अप्रत्यक्ष रूप से न्याय प्राप्त कर सकती है और निस्तारण अधिकतम 3 माह में सुनिश्चित किये जाने की बाध्यता है। श्री तिवारी ने अतिथियों और सभी कोऑर्डिनेटर को प्रतीक चिन्ह भेंटकर सम्मानित करते हुए सभी के प्रति आभार जताया और छात्राओं और महिलाओं को अनुशासित रहने और कर्तव्यों के निर्वाहन का संदेश दिया।

सेमिनार का बड़ा ही उत्कृष्ट संचालन कोऑर्डिनेटर डॉ मनीष सिंह सेंगर ने किया। प्राचार्या श्रीमती पूनम सिंह सिस्टम एडमिन विनोद वर्मा शिक्षिका संगीता सिंह प्रियंका मिश्रा शिक्षक मयंक बाजपेई आदि सहित बड़ी संख्या में फार्मेसी और डीएलएड की छात्राओं ने लीगल अवेरनेस प्राप्त की।

'आप' कार्यालय का विधायक ने किया उद्घाटन

उन्नाव, ।

शुक्रवार को आम आदमी पार्टी का निर्मलनगर सहजनी स्थित कार्यालय का हुआ उद्घाटन। जहां उद्घाटन करने पहुंचे उक्त पार्टी के जनकपुरी दिल्ली के विधायक राजेश ऋषि ने सहजनी स्थित विधानसभा कार्यालय का उद्घाटन किया।

उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि दिल्ली में जिस तरह से आम आदमी पार्टी ने ईमानदारी के बल पर जनता को मुफ्त बिजली 200 यूनिट, पानी 70 लीटर प्रतिदिन, सारी चिकित्सीय जांच, सारी दवाइयां मुफ्त मिल रही है। उसी प्रकार उत्तर प्रदेश की जनता को यह सारी सुविधाएं मिलेंगी। इस दौरान बहुजन समाज पार्टी के पूर्व अध्यक्ष किशोरीलाल सुरेंद्र बहादुर, अमित मुबीन रहबर आलम गुलाबचंद आदि को श्री ऋषि ने टोपी पहनाकर आप पार्टी की सदस्यता दिलाई। इस मौके पर महेंद्र सिंह हरिमोहन निगम पंकज मुकेश तिवारी गज्जू सिसोदिया विनय सिंह रमन श्रीवास्तव श्याम सिंह यादव राघवेंद्र बाजपेई आदि लोग उपस्थित रहे।

वरिष्ठ कांग्रेस नेता सेराज हुसैन बने कांग्रेस अल्पसंख्यक विभाग के प्रदेश सचिव

सोनभद्र ।

वरिष्ठ कांग्रेस नेता मोहम्मद सेराज हुसैन को उत्तर प्रदेश कांग्रेस अल्पसंख्यक विभाग के प्रदेश सचिव व मिर्जापुर भदोही के प्रभारी प्रदेश चेयरमैन शाहनवाज आलम द्वारा नियुक्त किए जाने पर सोनभद्र कांग्रेस जनों में खुशी देखी जा रही है। खबर मिलते ही पार्टी कार्यकर्ता पदाधिकारी उनके समर्थकों का बधाई का ताता लगा हुआ है। श्री हुसैन पिछले कई सालों से संगठन मे कई पदों पर कार्य कर चुके हैं हुसैन युवक कांग्रेस के नगर शाहगंज उपाध्यक्ष शाहगंज अध्यक्ष जिला सचिव अल्पसंख्यक विभाग के जिला चेयरमैन विंध्याचल मंडल का चेयरमैन व जिला कांग्रेस कमेटी सोनभद्र के कमेटी में तीन बार महासचिव भी रह चुके हैं इनके मनोनयन से पार्टी को मजबूतीमिलेगी लोगों ने बताया कि श्री हुसैन का संगठन में एक अलग पहचान है बराबर जनता की समस्याओं को लेकर भ्रष्टाचार को लेकर अधिकारियों के खिलाफ गरीब जनता की आवाजों को हमेशा संघर्ष करते हैं ऐसे व्यक्ति को जिम्मेदारी सौंपने से की उम्मीद जताई जा रही है कि संगठन को मजबूती के साथ साथ आम जनमानस भी खुश है।

हुसैन ने कहा मिर्जापुर भदोही का दौरा 9 फरवरी से करेंगे जमीनी कार्यकर्ताओं को मेरा प्रयास रहेगा उनको कांग्रेश से जुड़कर संगठन को मजबूती दिलाने में पीछे नहीं हटेंगे।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को किया नमन, अर्पित की श्रद्धांजलि

सोनभद्र ।

जिलाधिकारी अभिषेक सिंह ने 'चौरी-चौरा शताब्दी शुभारंभ समारोह' के जिला स्तरीय कार्यक्रम शहीद उद्यान परासी दूबे में सायंकाल को गौरव स्तम्भ के पास पुलिस बैण्ड के साथ राष्ट्रीय गीत धून को बजाते हुए वीर शहीदों को याद किया गया।

इस दौरान गौरव स्तम्भ के पास जिलाधिकारी ने दीप प्रज्जवलित किया और स्तम्भ के चारों तरफ दीपक जलाकर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को नमन व सुमन अर्पित कर सच्ची श्रद्धांजलि दी। इस मौके पर जिलाधिकारी अभिषेक सिंह के अलावा मुख्य विकास अधिकारी डॉ0 अमित पाल शर्मा, अपर जिलाधिकारी योगेन्द्र बहादुर सिंह, जिला विकास अधिकारी रामबाबू त्रिपाठी, उप जिलाधिकारी सदर डॉ0 कृपा शंकर पाण्डेय सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

डीएम ने बैंकों द्वारा अधिक संख्या में ऋण आवेदन अस्वीकृत किये जाने पर जतायी नाराजगी

उन्नाव ।

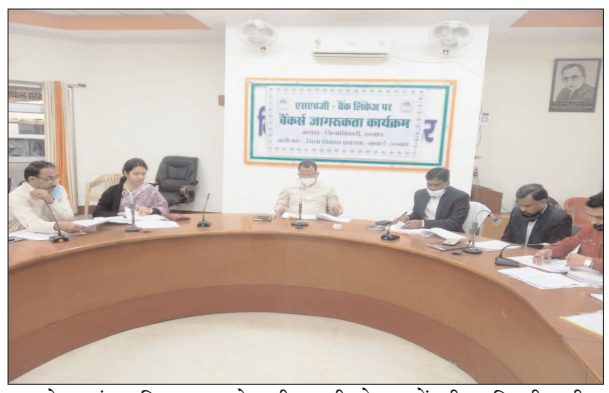

जिला विकास प्रबन्धन नाबार्ड द्वारा आयोजित बैंकर्स जागरूकता कार्यक्रम जिलाधिकारी रवीन्द्र कुमार की अध्यक्षता में विकास भवन सभागार में कल देर सांय सम्पन्न हुआ। जिसमें जिलास्तरीय परामर्श समिति की बैठक में प्रमुख रूप से अग्रणी जिला प्रबन्धक बैंक ऑफइण्डिया एवं समस्त बैंको के जिला समन्वयक एवं अन्य सरकारी विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ वार्षिक ऋण योजना 2020-21 के सापेक्ष दिसम्बर 2020 तक की प्रगति पर चर्चा की गयी।

बैंकवार ऋण जमा अनुपात की समीक्षा, बैंकवार व्यवसायिक आंकड़े की अद्यतन स्थिति, कृषि, एम0एस0एम0ई0, अन्य प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र एवं प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र की प्रगति, फसली ऋण एवं किसान/पशुपालन क्रेडिट कार्ड योजना, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, पण्डित दीनदयाल योजना, उद्योग केन्द्र, खादी और ग्रामोद्योग आयोग, खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड के अन्तर्गत चलायी जा रही योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की गयी तथा राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन एवं समस्त बैंक की ऑनलाइन आरसी विभिन्न सरकारी योजनाओं में लम्बित आवेदनपत्रों, 2022 तक किसानों की आय का दोहरीकरण पर विस्तार से जिलाधिकारी द्वारा चर्चा की गयी। बैठक में जिलाधिकारी को बैंको से सम्बन्धित विभिन्न योजनाओं की प्रगति पर नाबार्ड की डीडीएम सुश्री ऋचा बाजपई ने बताया कि वार्षिक ऋण योजना 2019-20 का वार्षिक ऋण योजना में कृषि एवं लघु उद्योग क्षेत्र में लक्ष्य के सापेक्ष प्रगति लगभग 60 प्रतिशत है।

जिलाधिकारी ने नाराजगी व्यक्त करते हुये अग्रणी जिला प्रबन्धक एवं उपस्थित बैंकर्स से वार्षिक ऋण योजना के कम प्रगति पर असंतोष व्यक्त करते हुये निर्देश दिय कि अगले 2 माह में वार्षिक ऋण योजना का लक्ष्य पूरा करे तथा अधिक से अधिक जरूरतमंदों को बैंक ऋण उपलब्ध कराकर जनपद के विकास में अपना सहयोग करते हुये वार्षिक ऋण योजना के लक्ष्यों को शत-प्रतिशत प्राप्त करे।

जनविरोधी है कृषि कानून : जन अधिकार पार्टी

सोनभद्र ।

जन अधिकार पार्टी के घोरावल विधानसभा के तिलौली कला ग्राम पंचायत में चलो गांव की ओर अभियान के तहत जाप के प्रदेश महिला उपाध्यक्ष उमा कुशवाहा ने महिलाओं को जन अधिकार पार्टी के नीतियों नई शिक्षा नीति किसान विरोधी बिल नया बजट आदि के विषय में लोगों को बताया क्या जिला शिक्षा नीति आई है।

वह देश की आने वाली पीढ़ियों को गुलाम बनाने के लिए है तथा कृषि कानून किसानों को बर्बाद कर उनके जमीनों को हथियाने बड़े उद्योगपतियों के हाथों गिरवी रखने वाली है जो नया बजट आया है उस समय किसानों के लिए मजदूरों के लिए और छोटे व्यापारियों के लिए कुछ नहीं है सिर्फ और सिर्फ अमीरों के लिए है इससे आने वाले वक्त में देश बर्बाद हो सकता है इसलिए इस सरकार के नीतियों एवं कुशासन से महिलाओं के साथ किसानों के ऊपर जन अधिकार पार्टी के घोरावल विधानसभा तिलौली ग्राम पंचायत में चलो बुथ की ओर कार्यक्रम के तहत महिलाओं को जागरूक किया गया। इस अवसर पर मुख्य रूप से जिला अध्यक्ष आदित्य मौर्य डॉ. विनोद कुमार मौर्य जिला संगठन मंत्री मंडल प्रभारी समृद्धि कुशवाहा किरण कुशवाहा मंडल अध्यक्ष मिर्जापुर जिला महासचिव नीतू मौर्य महिला प्रकोष्ठ विधानसभा अध्यक्ष उर्मिला देवी आदि उपस्थित रहे।

पुलिस का सहयोग करने के लिए किया गया प्रेरित

सोनभद्र

जनपद में नक्सली संचरण पर प्रभावी रोकथाम हेतु अपर पुलिस अधीक्षक आपरेशन् द्वारा थाना घोरावल पुलिस के साथ थाना घोरावल क्षेत्रान्तर्गत ग्राम ढेलो कंधारी में सघन काम्बिंग की गयी व स्थानीय लोगों के साथ जनचौपाल आयोजित कर उनकी समस्याओं के बारे में जानकारी की गयी

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक तथा मुद्रक विनीता तोमर द्वारा ए.वी.बी. रेप्रोग्राफिक्स ए-59, तालकटोरा इंडस्ट्रियल एरिया, लखनऊ से मुद्रित, सी-5/2, सपना इन्कलेव, सेक्टर 18 वृन्दावन योजना, रायबरेली रोड, लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक विनीता तोमर*
RNI.: UPHIN/1999/01690 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे। मो. 9415349400. email- vvtimes.news@gmail.com

फर्जी ईडीएम कर रहे एनआईसी में बड़े-बड़े खेल

आरोप

- विभागों की गोपनीयता की जा रही है भंग, सभी प्रमुख विभागों की आईडी पासवर्ड रखते हैं अपने पास
- प्रभात द्विवेदी फर्जी तरीके से यूआईएन नंबर जनरेट कर कर रहे अवैध धन वसूली जबकि यूआईएन नंबर देने का अधिकार असलहा लिपिक को ही होता है

रायबरेली।

सरकार द्वारा आज के आधुनिक युग में सभी चीजें जहां ऑनलाइन की जा रही है वहीं सरकार की मंशा है कि विभागों से जुड़ी हुई सभी चीजें ऑनलाइन कर दी जाए जिससे कि पारदर्शिता बनी रहे और भ्रष्टाचार को कम किया जा सके स जिले में एनआईसी में कार्यरत प्रभात द्विवेदी जो विप्रो कंपनी के द्वारा यहां रखे गए हैं।

इनकी पोस्टिंग यहां पर नेटवर्क इंजीनियर के तौर पर है मगर अधिकारियों को गुमराह करके अपने आप को ईडीएम की पोस्ट पर बताते हैं स जिन पर यह आरोप लग रहा है कि इनके द्वारा एनआईसी में गलत कार्य किए जाते हैं चाहे वह ऑनलाइन टेंडर हो या जेम पोर्टल के जरिए के टेंडर डालमे मे हेराफेरी करते हैं इसके अतिरिक्त लेखपालों की आईडी ब्लॉक कर के आय प्रमाण पत्र भी इनके द्वारा गलत तरीके से जारी किए जाते हैं।

क्या कहते हैं विभाग के कर्मचारी

वही जब असलहो को जारी किए जा रहे यूआईएन नंबर के बारे में शस्त्र कार्यालय में संपर्क किया गया तो वहां पर तैनात लिपिक समीर श्रीवास्तव का कहना है कि यह हमारे विभाग का कार्य हैं मगर नंबर अभी तक एनआईसी से प्रभात द्विवेदी के द्वारा ही जारी किए जा रहे हैं।

इन्होंने अधिकारियों को गुमराह करके अपने आपको ईडीएम बता रखा है जबकि जिले में इडीएम की कोई पोस्ट ही नहीं है यह सिर्फ एक नेटवर्क इंजीनियर के पद पर कार्य कर रहे हैं स असलहा ऑफिस में भी इनके द्वारा गलत तरीके से यूआईएन नंबर जनरेट किया जाता है जबकि इसका अधिकार वहां के लिपिक के पास होना चाहिए।

> रायबरेली में ईडीएम की कोई पोस्ट नहीं है प्रभात द्विवेदी वहां पर नेटवर्क इंजीनियर है अगर इनके द्वारा गलत तरीके से कार्य किए जा रहे हैं उसकी जांच कराकर कार्रवाई की जाएगी।
> **कमलेश अग्निहोत्री**
> **प्रोजेक्ट मैनेजर विप्रो**

इलेक्शन ऑफिस में वोटर लिस्ट में भी इनके द्वारा छेड़छाड़ की जाती है इसके भी आरोप इनके ऊपर लगे हैं।

ट्रस्ट की सम्पत्ति में खड़ंजा निर्माण कराने पर सर्वराहकार ने सौंपा ज्ञापन

फ्तेहपुर।

बहुआ विकास खण्ड के ग्राम बरबट परगना मुत्तौर में स्थित श्री ठाकुर राधाकृष्ण मंदिर की जमीन पर जहां कुछ ग्रामीणों द्वारा अवैध कब्जा किया जा रहा है वहीं ट्रस्ट की सम्पत्ति में खड़ंजा निर्माण साजिशन करा दिया गया। जिससे क्षुब्ध ट्रस्ट की सर्वराहकार ने जिलाधिकारी को शिकायती पत्र सौंपकर अवैध कब्जे से सुरक्षा करवाये जाने की मांग की।

जिलाधिकारी को दिये गये शिकायती पत्र में ग्राम बरवट स्थित श्री ठाकुर राधाकृष्ण मंदिर की सर्वराहकार शशि हितकारी पत्नी स्व0 सुबोध सहाय हितकारी ने बताया कि वह मंदिर की मुख्य ट्रस्टी हैं। मंदिर की भूमि पर गांव के पंचायत मित्र पंकज तोमर व उसके साथ कुछ असामाजिक प्रकृति के ग्रामीणों ने कच्ची दीवार गिराकर अतिक्रमण करने की प्रयास किया था। जिस पर उन्होने 13 जनवरी को एक प्रार्थना पत्र दिया था। इसके पूर्व भी कई प्रार्थना पत्र दिये जा चुके हैं लेकिन आज तक कोई कार्रवाई सुनिश्चित नहीं की गयी बल्कि इसी बीच ट्रस्ट की आबादी आराजी में खड़ंजा रोड बनवा दी गयी। इसके पूर्व ग्रामीण विद्यालय द्वारा अतिक्रमण कराकर निर्माण भी करा लिया गया है।

उन्होने जिलाधिकारी से मांग किया कि इस मामले की तहसील स्तरीय जांच कराकर राजस्व व पुलिस की संयुक्त टीम गठित करके सम्बन्धित मंदिर ट्रस्ट की आबादी भूमि चिन्हांकित/सीमांकित करा दी जाये। जिससे वह मंदिर ट्रस्ट की भूमि को अलग कर लें। इसके साथ ही दोषीजनों के विरूद्ध कार्रवाई कर मंदिर ट्रस्ट की सम्पत्ति पर हो रहे अवैध कब्जे से सुरक्षा की जाये।

सदर विधायक ने 65 दिव्यांगों को ट्राईसाइकिल व सहायक उपकरण बांटे

फ्तेहपुर।

दिव्यांग जन सशक्तिकरण विभाग द्वारा कृतिम अंग व सहायक उपकरण वितरण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें सहायक उपकरण में रूप में 65 दिव्यांगजनो में ट्राइसाईकिल व कृतिम अंगों का वितरण किया गया।

शनिवार को आईटीआई परिसर में जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा अयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सदर विधायक विक्रम सिंह एवं विशिष्ट अतिथि जिलाधिकारी अपूर्वा दुबे व मुख्य विकास अधिकारी सत्य प्रकाश द्वारा दिव्यांगजनों को सहायक उपकरण सौंपे गये। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि सदर विधायक विक्रम सिंह ने बताया कि सबका साथ सबका विकास के तहत कार्य केंद्र एव प्रदेश सरकार द्वारा निरंतर समाज के सभी वर्गों व निःशक्तों के लिये कार्य किये जा रहे हैं। कल्याणकारी योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है। कृतिम अंग व सहायक उपकरण मिलने से दिव्यांगजन भी रोजगार से जुड़ने के साथ ही समाज की मुख्य धारा में शामिल हो सकेंगे। जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारी राजेश कुमार सोनकर ने बताया कि आनलाइन आवेदन करने वाले दिव्यांगों को सहायक उपकरण वितिरत करने का कार्य किया गया है। उन्होंने दिव्यांगजनो से ट्राइसाकिल व कृतिम अंग योजना एव पेंशन योजना का लाभ लेने के लिये आनलाइन आवेदन करने का आह्वान किया। काफी समय से कृतिम अंग व सहायक उपकरण मिलने की प्रतीक्षा कर रहे दिव्यांगजनो को उनकी मन की मुराद के रूप में कृतिम अंग व ट्राईसाइकिल मिलते ही चेहरे खिल उठे।

अधिवक्ताओं ने सिटी मजिस्ट्रेट को सौंपा ज्ञापन

रायबरेली

राष्ट्रीय संयुक्त अधिवक्ता मंच की रायबरेली जिला ईकाई द्वारा सिटी मजिस्ट्रेट युवराज सिंह को प्रधानमंत्री को सम्बोधित एक ज्ञापन सौंपा जिसमे अधिवक्ता हितो के लिए कड़े कानून बनाएं जाने की मांग करते हुए अधिवक्ता सुरक्षा कानून के साथ.साथ कई मांगे रखी है।

ज्ञापन के माध्यम से जिलाध्यक्ष अशोक यादव एडवोकेट ने कहा कि अधिवक्ता समाज लोगों के हितों के लिए हमेशा संघर्ष करता चला रहा है लेकिन आए दिन सो रहे अधिवक्ताओं पर प्राणघातक हम लोग के कारण अधिवक्ता समाज में अपने दायित्वों के निर्वहन करने में भयभीत भी हो रहा है संविधान का प्रमुख अंग होने के नाते अधिवक्ताओं के हितों को सर्वोपरि रखते हुए अधिवक्ता सुरक्षा कानून के साथ-साथ पेंशन व्यवस्था व बीमा आदि की ब्यवस्था किये जाने की बात कही है जिला अध्यक्ष अशोक यादव की अगुवाई में दर्जन वकीलों ने कलेक्ट्रेट पहुंचकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को संबंधित ज्ञापन सिटी मजिस्ट्रेट युवराज सिंह को सौंपा। इस मौके पर दीपक तिवारी एडवोकेट, महेंद्र मौर्य एडवोकेट,आशीष चौधरी एडवोकेट, अंजनी कुमार एडवोकेट, हरिसरण एडवोकेट, राजेश कुमार एडवोकेट, अमित सिंह एडवोकेट, चंद्रशेखर एडवोकेट सहित दर्जनों अधिवक्ता उपस्थित रहे।

शिक्षकों ने प्रधान अध्यापकों को किया ऑनलाइन प्रशिक्षित

कार्यक्रम

- आनलाइन प्रशिक्षण के माध्यम से अध्यापकों को समर्थ एप की दी गई विस्तृत जानकारी

रायबरेली

बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा शुक्रवार को नगर क्षेत्र के साथ साथ ऊंचाहार सताव हरचंदपुर महराजगंज ब्लाक में प्रधान अध्यापकों को सामेकित शिक्षा में कार्यरत विशेष शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम कराया गया। ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के जरिये विशेष शिक्षकों की टीम ने प्रधान अध्यापकों जिन्हें नोडल टीचर बनाया गया है उन्हें दिव्यांग बच्चो की समावेशी शिक्षा की विभिन्न गतिविधियों के बारे में अवगत कराया गया। साथ ही समर्थ एप के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी।

बेलीगंज स्कूल में नगर क्षेत्र के विशेष शिक्षिका सुमन देवी जय शुक्ला व आशा मिश्रा ने संयुक्त रूप से जानकारी देते हुए बताया गया कि यह कार्य खण्ड शिक्षा अधिकारी अनुराधा मौर्य व सामेकित शिक्षा की जिला समन्वयक शुभा त्रिपाठी के दिशा निर्देशन में शहरी क्षेत्र के कुल 39 नोडल टीचरों को समावेशी शिक्षा के कार्य दायित्वों के बारे जानकारी देनाए दिव्यांग बच्चो को सामान्य बच्चों के समकक्ष जोड़ना शिक्षा प्रधान करनाए दिव्यांगता की पहचान के बारे में भी अवगत कराया गया।

किसी मंदिर से कम नहीं हैं शहीदों के स्मारक : वाईपी सिंह

आयोजन

- चौरीचौरा शताब्दी वर्ष पर आयोजित किया गया कवि सम्मेलन

रायबरेली

चौरीचौरा के शताब्दी वर्ष के अवसर पर लालगंज उपजिलाधिकारी विनय कुमार की ओर से काव्यसन्ध्या का आयोजन किया गया।मुख्य अतिथि सरेनी विधायक धीरेन्द्र सिंह रहे।साथ ही नवागन्तुक पुलिस उपाधीक्षक भी मौजूद रहे। उपस्थित कवियों ने शानदार कविता पाठ करके काव्यसन्ध्या को खूबसूरत बना दिया।वाणी पुत्रों में डॉ विनय भदौरिया (संयोजक), डॉ देवी बक्श सिंह बैस (अध्यक्ष), डॉ प्रतीत त्रिपाठी,डॉ शैलेश प्रताप सिंह, सतीश कुमार सिंह, राजकरन सिंह, सुनील सरगम, निर्मल श्रीवास्तव, शिवतोष संघर्षी, कुमार मयंक, उदय बाजपेई व वाई.पी.सिंह(संचालक) ने मुख्यरूप से काव्य पाठ किया।लालगंज के प्रतिष्ठित लोगों में रमेश सिंह किसान नेता,बच्चा पांडेय,आशुतोष शुक्ला, धर्मेन्द्र सिंह प्रदेश प्रवक्ता करणी सेना,राजेश फौजी,सुरेश सिंह,आशीष सिंह सहित काफी लोग उपस्थित रहे।

संक्षिप्त समाचार

शार्ट सर्किट से घर में लगी आग

डलमऊ-रायबरेली। डलमऊ क्षेत्र के सराय दिलावर ग्राम सभा में लगे ट्रांसफार्मर में हुए शॉर्ट सर्किट से कल रात एक गरीब का आशियाना जलकर खाक हो गया घर के अंदर रखी सारी गृहस्ती एवं खाने पीने का सामान पूरी तरह जल गया अचानक हुई शॉर्ट सर्किट से कल्लू पुत्र चिम्मन के घर पर रखें छप्पर में आग लग गई खरपतवार से बने छप्पर के कारण पूरे घर को अपनी चपेट में ले लिया और घर के अंदर रखा बेड गृहस्थी का सम्मान व खाने पीने का सामान पूरी तरह जलकर खाक हो गया ग्राम प्रधान आशीष सोनी ने बताया कि शॉर्ट सर्किट की वजह से पीड़ित के घर में आग लग गई जिससे पीड़ित का भारी नुकसान हो गया है शॉर्ट सर्किट से बिजली विभाग की लापरवाही भी दिखाई पड़ती है ट्रांसफार्मर पूरी तरह खुला हुआ है और ज्यादा ऊंचाई पर ना रखा होने की वजह से कभी भी कोई बड़ी दुर्घटना घट सकती है।

भागवत कथा आज से

ओयल खीरी। नगर क्षेत्र के सुविख्यात बलदेव प्रसाद धर्मशाला में विगत कई वर्षों से परंपरागत होने वाली भगवत कथा का शुभारंभ कलश यात्रा के उपरांत शुरू हुए हवन पूजन कार्यक्रम के बाद व्यास गद्दी से पंडित शालिग्राम के द्वारा शुरू की गई भगवत कथा धीरे.धीरे आगे बढ़ चली जिसमें अमृतवाणी सुनने के लिए अनेकों भगवत कथा प्रेमी आयोजन स्थल पर मौजूद रहकर कथा वाचक ओं के मुखारविंद से निकलने वाले अमृत वचन को ध्यानपूर्वक सुनते रहे तथा कथा के उपरांत विगत वर्षों में हुई भगवत कथा तथा वर्तमान समय में आगे बढ़ने वाली भागवत कथा के प्रसंगों को लेकर विभिन्न प्रकार की चर्चा करते हुए देखे और सुने गए यह आयोजन आगामी 11 फरवरी को पूर्णाहुति के साथ संपन्न होगा नगर क्षेत्र में प्रचार प्रसार माध्यमों से उक्त आयोजन की व्यापक चर्चाएं करा दी गई हैं जिसके अंतर्गत अनुमान लगाया जाता है कि वर्षों की भांति इस वर्ष भी बड़ी संख्या में भगवत कथा प्रेमियों का आगमन होता रहेगा। उक्त आयोजन नगर क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है।

विधायक ने रॉयल हवेली का किया उद्घाटन

बाराबंकी। शहर के लखपेड़ाबाग स्थित रॉयल हवेली पैलेस ऑफ रॉयल किंग का उद्घघाटन मुख्य अतिथि सदर विधायक धर्मराज सिंह उर्फ सुरेश यादव द्वारा फीता काट कर किया गया। इस अवसर पर विधायक धर्मराज ने अपने संबोधन में कहा कि युवाओं को स्वरोजगार अपनाकर स्वयं को अपने पैरो पर खड़ा होना चाहिए जिससे आज की युवा पीढ़ी को रोजगार से जुड़कर अपनी जीविका चलाने में आसानी होगी और देश की तरक्की हो सकेगी। विधायक धर्मराज ने कहा कि देश और प्रदेश की सरकार को लघु और कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए आगे आना चाहिए जो कि बेरोजगारी और गावो से पलायन रोकने के लिए ज़रूरी है सरकार को लघु और कुटीर उद्योगों का ना केवल स्थापित करना चाहिए बल्कि उन्हें आर्थिक और तकनीकी रूप से सक्षम बनाया जाना चाहिए जिससे हर गांव में कुटीर उद्योगों को स्थापित किया जा सके। विधायक धर्मराज ने कहा कि प्रधानमंत्री अपने को छोटा व्यापारी कहकर प्रचार करते है छोटे और कुटीर उद्योगों को लेकर उनकी सरकार का जो बर्ताव है उससे यह धारणा पुष्ट होती है कि सरकार की रुचि सिर्फ और सिर्फ बड़े पूंजीपतियों में है। विधायक धर्मराज ने कहा कि अखिलेश यादव के नेतृत्व में पूर्व की सपा सरकार के कार्यकाल में लागू की गई उद्योग नीति से युवाओं में नई ऊर्जा का संचार हुआ था।

आंबापुर व्यापार मण्डल के संतलाल बने अध्यक्ष

फ्तेहपुर। आंबापुर के स्थानीय व्यापारियों के साथ उद्योग व्यापार मण्डल के संस्थापक अध्यक्ष किशन मेहरोत्रा ने बैठक करते संगठन को मजबूत बनाने की दिशा में आंबापुर व्यापार मण्डल का गठन किया। जिसमें सन्तलाल अध्यक्ष, राजेश गुप्ता महामंत्री, कोषाध्यक्ष डा0 अवधेश, प्रवक्ता नीरज सोनी, मीडिया प्रभारी महेन्द्र लोधी, उपाध्यक्ष डा0 धर्मेन्द्र, गगन सिंह, मो0 आलम, मो0 इस्माइल, मंत्री अखिलेश, अमित, छत्रपाल, नरेन्द्र, संगठन मंत्री कमलेश, विजय पाल, डा0 हरिश्चंद्र, कौशल किशोर, मो0 रेहान, फूलचन्द्र, संरक्षक मण्डल में मथुरा प्रसाद, अरुण कुमार लोधी के अलावा कार्यकरणी सदस्यों में दुर्गा प्रसाद, पप्पू, रिंकू, राजकुमार लोधी, हारून, मो0 फईम, डा0 अर्जुन, मो0 रईस, संजय, शुभम, राजकुमार, कामता प्रसाद, शमशाद, अनूप, दिनेश शामिल किया गया। सभी को पुष्पहार पहनाकर बधाई व शुभकामनाएं दी। संस्थापक अध्यक्ष श्री मेहरोत्रा ने कहा कि व्यापारियों का उत्पीड़न किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। संगठन व्यापारियों की सुरक्षा का कवच बनेगा। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष अनिल वर्मा, कोषाध्यक्ष प्रेमदत उमराव, महामंत्री मनोज मिश्रा, प्रवक्ता मंटू मिश्रा सहित तमाम व्यापारी उपस्थित रहे।

लूट का खुलासा करने पर एसपी का सम्मान

बाराबंकी ।

बीते दिनों टिकैतनगर के एक व्यापारी से हुई लाखों की लूट का कम समय में खुलासा करने पर व्यापारियों ने एसपी बाराबंकी यमुना प्रसाद का सम्मान किया।

शुक्रवार सुबह जन व्यापारी उद्योग व्यापार मण्डल के प्रदेश महामंत्री रोहिताश्व दीक्षित के नेतृत्व में दर्जनों व्यापारियों ने पुलिस अधीक्षक यमुना प्रसाद से मुलाकात कर टिकैतनगर में व्यापारी के साथ हुई लूट का कम समय में अनावरण करने पर एसपी का सम्मान किया।इस मौके पर रोहिताश्व दीक्षित ने कहा कि व्यापारी के साथ हुई लूट की इस घटना से व्यापारी काफी दुखी थे।लेकिन पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए काफी कम समय में उसका अनावरण कर व्यापारियों का दिल जीत लिया है।एसपी यमुना प्रसाद ने कहा कि सभी व्यापारी अपने प्रतिष्ठान के सामने अतिक्रमण न करने दें। इसके साथ ही व्यापारी अपने प्रतिष्ठान व उसके सामने सीसीटीवी कैमरे जरूर लगवाए। पुलिस बिना थके लोगों की सुरक्षा के लिए हमेशा समर्पित रहती है।उन्होंने भरोसा दिलाया कि व्यापारी समाज निडर होकर अपना व्यापार संचालित करें।

सुरक्षित जीवन की गारंटी देते हैं यातायात के नियम: एआरटीओ

कार्यक्रम

- राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह के तहत आयोजित हुई सड़क सुरक्षा कार्यशाला

लखीमपुर खीरी

शुक्रवार को जिला मुख्यालय पर स्थित गुरु नानक इंटर कॉलेज में परिवहन विभाग ने एआरटीओ प्रवर्तन रमेश कुमार चौबे के नेतृत्व में सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यशाला आयोजित हुई।

कार्यशाला में मौजूद छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए एआरटीओ रमेश कुमार चौबे ने बच्चों को यातायात का पाठ पढ़ाया। उन्होंने कहा कि सड़क पर सुरक्षित जीवन की गारंटी देते हैं यातायात के नियम। यातायात नियमों से न केवल अपना जीवन बचा सकते हैं बल्कि सामने वाले को भी सुरक्षित जीवन मुहैया करा सकते हैं।

उन्होंने ट्रेफिक सिगनल्स सहित सड़क सुरक्षा चिन्हों की बारीकी से जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि यातायात नियमों की जानकारी एवं उसका अनुपालन सड़क दुर्घटनाओं में कमी ला सकता है। इसलिए यहां प्राप्त की गई जानकारी को अपने परिचित मित्रों एवं रिश्तेदारों से साझा करें। स्वयं के साथ.साथ उन्हें भी यातायात नियमो की महत्वता को समझाएं। कार्यक्रम का संचालन गुरूनानक इंटर कालेज लखीमपुर.खीरी के प्रधानाचार्य इसविंदर सिंह अजमानी एवं उप प्रधानाचार्य निर्मल सिंह ने किया।

इस कार्यशाला में यात्री कर एवं माल कर अधिकारी राम कश्यप यातायात उपनिरीक्षक सूर्यमणि यादव सहित मनोज सक्सेना शैलेन्द्र सिंह व एनसीसी के छात्र-छात्रा मौजूद रहे।

चोरी के षड़यंत्र का पर्दाफाश, चार चोर सामान समेत गिरफ्तार

फ्तेहपुर।

कानपुर नगर के थाना बर्रा के करर्ही में बीमे की रकम पाने के लालच में चोरी के रचे गये षड़यंत्र का जनपद पुलिस ने पर्दाफाश करते हुए चार चोरों को सामान समेत गिरफ्तार करने में कामयाबी हासिल की। सभी अभियुक्तों को कार्रवाई कर पुलिस ने जेल भेज दिया।

पुलिस लाइन के सभागार में पत्रकारों से बातचीत करते हुए पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल ने बताया कि चोरी की रोकथाम हेतु चलाये जा रहे अभियान के तहत पुलिस उपाधीक्षक जाफरगंज के नेतृत्व में जाफरगंज थाने की पुलिस टीम ने तीन वांछित अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया। जिनके पास से सामान भी बरामद हुआ। एसपी ने बताया कि कानपुर नगर के थाना बर्रा के करर्ही में स्थित दुकान मालिक ने बीमे की रकम पाने की लालच में चोरों के साथ मिलकर चोरी का षड़यंत्र रच कर बनावटी चोरी की घटना को अंजाम दिया था। कुछ सामान दुकान से हटा दिया गया था जो बरामद कर लिया गया है। पकड़े गये वांछितों में राजन शर्मा पुत्र राजू शर्मा, पंकज कुमार पुत्र वीरेन्द्र कुमार निवासीगण योगेन्द्र विहार खांडेपुर थाना नौबस्ता जनपद कानपुर, अभिषेक साहू पुत्र स्व0 रामलखन निवासी जरौली फेज 2 बिहारी पुरवा थाना बर्रा जनपद कानपुर नगर व सूरज कुमार पुत्र रामपाल निवासी 71 बी-5 बर्रा करर्ही थाना बर्रा जनपद कानपुर नगर शामिल हैं। गिरफ्तारी करने वाली टीम में प्रभारी निरीक्षक जाफरगंज राजीव कुमार सिंह के अलावा उपनिरीक्षक शहंशाह हुसैन, समी अशरफशेख, कांस्टेबल जय ओम सिंह, विजय सिंह व सरवन यादव शामिल रहे।

बैठक को लेकर किया विचार-विमर्श

फ्तेहपुर। आगामी सात फरवरी को रानी कालोनी स्थित यादव भवन में होने वाली बैठक को लेकर यादव महासभा के पदाधिकारियों ने बैठक कर विचार-विमर्श किया। निर्णय लिया गया कि जल्द ही जनपद में संगठन मजबूती के साथ खड़ा किया जायेगा। अखिल भारत वर्षीय यादव महासभा के जिलाध्यक्ष चौधरी राजेश यादव की अध्यक्षता में खागा बाईपास चौराहा स्थित नगर कार्यालय में समाज के लोगों से विचार विमर्श किया गया। बताया कि आगामी 7 फरवरी को यादव महासभा की पहली बैठक रानी कॉलोनी स्थित यादव महासभा के भवन में होगी। जिसमें संगठन को लेकर चर्चा होगी और जल्द ही संगठन पूरे जनपद में मजबूती से खड़ा किया जाएगा। लोगों से विचार-विमर्श कर संगठन को आगे बढ़ाया जाएगा। बताया कि प्रदेश सचिव जगनायक सिंह यादव, पूर्व जिलाध्यक्ष महेंद्र सिंह यादव, बाबू फूल सिंह यादव एडवोकेट, केतकी सिंह यादव, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष रमेश यादव समेत समाज के लोगों से मुलाकात कर संगठन को मजबूत करेंगे। इस मौके पर भूप सिंह यादव, नर सिंह यादव, प्रकाश यादव, फूल सिंह यादव, प्रधान मुन्ना यादव, मुलायम सिंह यादव एडवोकेट के अलावा ध्यान सिंह यादव, संजय यादव, सुरेश यादव, कुल्लू, मनीष यादव, परीक्षित यादव, अतुल यादव आदि मौजूद रहे।

किसानों की समस्याओं को लेकर भाकियू ने दिया धरना

फ्तेहपुर। जिले के किसानों की विभिन्न समस्याओं के साथ-साथ तीन नये कृषि कानूनों को वापस लिये जाने की मांग को लेकर शनिवार को भारतीय किसान यूनियन के पदाधिकारियों ने नहर कालोनी में धरना दिया। तत्पश्चात उप जिलाधिकारी के माध्यम से प्रधानमंत्री को पांच सूत्रीय ज्ञापन भेजकर सभी मांगों को पूरा किये जाने की आवाज उठायी।

भारतीय किसान यूनियन के तहसील अध्यक्ष दीपक गुप्ता की अगुवई में पदाधिकारियों ने नहर कालोनी में धरना दिया। धरने को सम्बोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि जिले का किसान तमाम समस्याओं से जूझ रहा है लेकिन शासन एवं प्रशासन द्वारा उनकी एक नहीं सुनी जा रही है।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
विश्व विजेता टाइम्स

भारत में दोहरा शतक जमाने वाले रुट आईपीएल नीलामी में नहीं उतरेंगे

नई दिल्ली।

भारत की जमीन पर अपने 100वें टेस्ट में शानदार दोहरा शतक जमाने वाले इंग्लैंड के कप्तान जो रुट 18 फरवरी को चेन्नई में होने वाली आईपीएल नीलामी में नहीं उतरेंगे।

इंग्लैंड को भारत के खिलाफ टेस्ट सीरीज में पहले दो टेस्ट चेन्नई में खेलने हैं और आईपीएल के 14वें सत्र की नीलामी 18 फरवरी को चेन्नई में होनी है।

रुट ने चेन्नई में खेले जा रहे पहले टेस्ट में 218 रन की शानदार पारी खेली लेकिन उन्होंने लगातार दूसरी बार आईपीएल की नीलामी के लिए खुद को पंजीकृत नहीं कराया है।

ऑस्ट्रेलिया के बाएं हाथ के तेज गेंदबाज मिशेल स्टार्क इस बार भी नीलामी में शामिल नहीं हुए हैं। स्टार्क ने भी खुद को नीलामी के लिए पंजीकृत नहीं कराया है। स्टार्क आखिरी बार आईपीएल में 2015 में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के लिए खेले थे और उन्होंने 13 मैचों में 20 विकेट लिए थे।

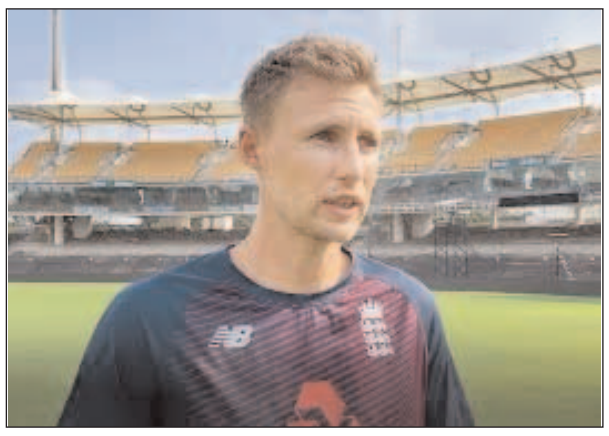

दुनिया के शीर्ष आलराउंडरों में से एक बंगलादेश के शाकिब अल हसन इस बार नीलामी का हिस्सा होंगे। वह एक साल का प्रतिबन्ध पूरा कर बंगलादेश की टीम में लौट चुके हैं। शाकिब उन 11 खिलाड़ियों में शामिल है जिनका आधार मूल्य दो करोड़ रुपये है। इस आधार मूल्य के अन्य खिलाड़ियों में केदार जाधव, हरभजन सिंह, ग्लेन मैक्सवेल, स्टीवन स्मिथ, सैम बिलिंग्स, लियाम प्लंकेट, जैसन रॉय,मार्क वुड और कॉलिन इंग्राम शामिल हैं।

विश्व के नंबर एक टी 20 बल्लेबाज डेविड मलान का आधार मूल्य डेढ़ करोड़ रुपये है। मलान अब तक आईपीएल में नहीं खेले हैं। मलान को खरीदने के लिए आईपीएल नीलामी में काफी मारामारी मचेगी।

टेस्ट बल्लेबाज का ठप्पा पाने वाले हनुमा विहारी और मार्नस लाबुशेन का आधार मूल्य एक करोड़ रुपये हैं जबकि विशुद्ध टेस्ट बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा 50 लाख रुपये के आधार मूल्य के साथ नीलामी में उतरेंगे।

रुट का रिकॉर्ड दोहरा शतक, इंग्लैंड का पहाड़नुमा स्कोर

चेन्नई।

कप्तान जो रुट (218) के रिकॉर्ड दोहरे शतक और बेन स्टोक्स की 82 रन की आक्रामक अर्धशतकीय पारी की बदौलत इंग्लैंड ने भारत के खिलाफ यहां एमए चिंदबरम स्टेडियम में पहले टेस्ट के दूसरे दिन शनिवार को आठ विकेट पर 555 रन का पहाड़नुमा स्कोर बना लिया।

इंग्लैंड ने दूसरे दिन तीन विकेट पर 263 रन से अपनी पारी को आगे बढ़ाया और दिन भर भारतीय गेंदबाजों को अपनी पारी समेटने का कोई मौका नहीं दिया। पहले दिन की तरह मैच का दूसरा दिन भी पूरी तरह रुट के नाम रहा। रुट ने 128 रन से आगे खेलना शुरू किया और 377 गेंदों में 19 चौकों और दो छक्कों की मदद से 218 रन बनाकर आउट हुए। रुट ने छक्का मारकर अपना दोहरा शतक पूरा किया। रुट ने दोहरे शतक के साथ 100वें टेस्ट में सर्वाधिक निजी स्कोर बनाने का पाकिस्तान के इंजमाम उल हक़ का रिकॉर्ड तोड़ दिया और वह इसके साथ ही 100वें टेस्ट में दोहरा शतक बनाने वाले पहले बल्लेबाज बन गए। इंजमाम ने मार्च 2005 में अपने 100वें मैच में बेंगलुरु में भारत के खिलाफ 184 रन बनाये थे। रुट का यह पांचवां और पिछले तीन टेस्टों में दूसरा दोहरा शतक था। रुट ने इस दौरे पर आने से पहले श्रीलंका के खिलाफ पहले टेस्ट में 228 और दूसरे टेस्ट में 186 रन बनाये थे। सुबह रुट के साथ बेन स्टोक्स

खेलने उतरे। स्टोक्स ने 118 गेंदों पर 82 रन की आक्रामक पारी में 10 चौके और तीन छक्के लगाए। इंग्लैंड का तीसरा विकेट कल आखिरी ओवर में गिरा था और उसी के साथ ही दिन का खेल समाप्त हो गया था। रुट और स्टोक्स ने चौथे विकेट के लिए 124 रन की साझेदारी की। रुट ने इससे पहले डोमिनिक सिब्ले के साथ दूसरे विकेट के लिए 200 रन की साझेदारी की थी। लेफ्ट आर्म स्पिनर शाहबाज नदीम ने स्टोक्स को चेतेश्वर पुजारा के हाथों कैच कराकर इस साझेदारी को तोड़ा। स्टोक्स का विकेट 387 के स्कोर पर गिरा। रुट ने फिर ओली पोप के साथ पांचवें विकेट के लिए 76 रन जोड़े। पोप को ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने पगबाधा किया। पोप ने 89 गेंदों पर 34 रन में तीन चौके लगाए। पोप का विकेट 473 के स्कोर पर गिरा। पोप के आउट होने के चार रन बाद नदीम ने रुट को पगबाधा कर भारत को सबसे बड़ी सफलता दिलाई। रुट 477 के स्कोर पर आउट हुए। लेकिन तब तक वह रिकॉर्ड दोहरा शतक बनाकर इंग्लैंड को विशाल स्कोर की तरफ अग्रसर कर चुके थे। रुट ने आउट हो जाने के बावजूद पारी घोषित नहीं की और टीम ने खेलना जारी रखा। इंग्लैंड ने 500 रन पूरे कर लिए। दिन की समाप्ति में 11 ओवर बचे थे और कप्तान विराट कोहली ने इशांत शर्मा को गेंद थमाई जो अब तक 23 ओवर में कोई विकेट नहीं ले पाए थे। इशांत ने अपने 24वें ओवर की दूसरी गेंद पर जोस बटलर को और तीसरी गेंद पर जोफ्रा आर्चर को बोल्ड कर दिया। बटलर ने 51 गेंदों पर 30 रन में पांच चौके लगाए। इशांत इन दो विकेटों के साथ 299 विकेट पर पहुंच गए लेकिन शेष समय में 300 विकेट पूरे नहीं कर पाए। इसके लिए उन्हें तीसरे दिन की सुबह का इंतजार करना होगा। बटलर और आर्चर के विकेट 525 के स्कोर पर गिरे लेकिन भारतीय गेंदबाज अंतिम बल्लेबाजों को नहीं समेट पाए। रोहित शर्मा ने आसान सा कैच टपकाया। स्टंप्स के समय डोमिनिक बेस 84 गेंदों में पांच चौकों की मदद से 28 रन और जैक लीच 28 गेंदों में छह रन बनाकर क्रीज पर थे। भारतीय गेंदबाजों का प्रदर्शन लगातार दूसरे दिन निराशाजनक रहा। भारतीय गेंदबाजों ने 37 अतिरिक्त रन दिए जिसमे से 19 रन तो नो बॉल से थे। भारत की तरफ से इशांत ने 27 ओवर में 52 रन पर दो विकेट, जसप्रीत बुमराह ने 31 ओवर में 81 रन पर दो विकेट, अश्विन ने 50 ओवर में 132 रन पर दो विकेट और नदीम ने 44 ओवर में 167 रन पर दो विकेट लिए। वाशिंगटन सुन्दर को 26 ओवर में 98 रन देकर कोई विकेट नहीं मिला। रोहित शर्मा ने भी दो ओवर डाले।

खाद्य तेलों में घट-बढ़, दालों में टिकाव, गुड़-चीनी स्थिर

नई दिल्ली ।

विदेशों में खाद्य तेलों में मिश्रित रुख के बीच दिल्ली थोक जिंस बाजार में भी शनिवार को खाद्य तेलों की कीमतों में घट-बढ़ रही जबकि दाल-दलहन के दामों में टिकाव देखा गया। इस दौरान चीनी और गुड़ में स्थिरता बनी रही जबकि गेंहू और आटे की कीमतें भी स्थिर रहीं।

तेल-तिलहन : अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में पॉम ऑयल का अप्रैल वायदा 101 रिंगिट बढ़कर 3,489 रिंगिट प्रति टन पर पहुँच गया। मार्च का अमेरिकी सोया तेल वायदा 0.19 सेंट घटकर 44.75 सेंट प्रति पौंड बोला गया। स्थानीय बाजार में मांग में मिश्रित रुख के मद्देनजर कारोबार के बीच मूंगफली तेल, सरसों तेल, वनस्पति तेल और सोया तेल की कीमतें अपरिवर्तित रहीं जबकि सूरजमुखी तेल की कीमत में कमी आयी वहीं पॉम ऑयल की कीमत में वृद्धि दर्ज की गयी।

गुड़-चीनी : मीठे के बाजार में चीनी की कीमत में कोई बदलाव नहीं

हुआ। गुड़ का भाव भी स्थिर रहा।

दाल-दलहन : दलहनों में चना दाल, उड़द दाल, मूंग दाल, मसूर दाल और अरहर दाल की कीमतें अपरिवर्तित रहीं।

अनाज : अनाजों में गेहूँ और चावल की कीमतें गत दिवस के स्तर पर ही पड़ी रहीं।

दाल-दलहनः चना 4,275-4,375, दाल चना 5,325-5,525, मसूर काली 6,550-6,850, मूंग दाल 9,000-9,300, उड़द दाल 9,250-9,550, अरहर दाल 8,850-9,150 रुपये प्रति क्विंटल रही।

अनाज (भाव प्रति क्विंटल) गेहूं दड़ा 1,980-2000 रुपये और चावल : 2,700-2,800 रुपये प्रति क्विंटल रहा।

चीनी-गुड़ : चीनी एस 3,300-3,350, चीनी एम. 3,390-3,490, मिल डिलीवरी 3,220-3,320 और गुड़ 2,850- 2,950 रुपये प्रति क्विंटल बोले गये।

खाद्य तेल : सरसों तेल 14,652 रुपये, मूंगफली तेल 17,435 रुपये, सूरजमुखी 13,626 रुपये, सोया रिफाइंड 13,626 रुपये, पाम ऑयल 10,402 रुपये, वनस्पति 11,319 रुपये प्रति क्विंटल रहा।

मोमिनुल का शतक, बंगलादेश को जीत की उम्मीद

चट्टोग्राम, । कप्तान मोमिनुल हक़ (115) के शानदार शतक से बंगलादेश को वेस्ट इंडीज के खिलाफ पहले क्रिकेट टेस्ट में जीत की उम्मीद दिखाई देने लगी है। बंगलादेश ने चौथे दिन शनिवार को अपनी दूसरी पारी आठ विकेट पर 223 रन पर घोषित कर वेस्ट इंडीज के सामने जीत के लिए 395 रन का मुश्किल लक्ष्य रखा जिसका पीछा करते हुए विंडीज ने दिन का खेल समाप्त होने तक तीन विकेट खोकर 110 रन बना लिए हैं। विंडीज को मैच के आखिरी दिन जीत के लिए 285 रन की जरूरत है जबकि बंगलादेश को सात विकेट की जरूरत है।

बंगलादेश को पहली पारी में 171 रन की महत्वपूर्ण बढ़त मिली थी। बंगलादेश ने तीन विकेट पर 47 रन से आगे खेलना शुरु किया था।

कप्तान मोमिनुल हक ने 31 और मुशफिकुर रहमान ने 10 रन से अपनी पारी को आगे बढ़ाया। मोमिनुल ने 182 गेंदों पर 10 चौकों की मदद से 115 रन बनाये। विकेटकीपर लिटन दास ने 112 गेंदों में पांच चौकों की मदद से 69 रन का योगदान दिया। वेस्टइंडीज की तरफ से 140 किलो वजनी ऑफ स्पिनर रहकीम कोर्नवाल ने 81रन देकर तीन विकेट और जोमेल वारिकेन ने 57 रन पर तीन विकेट लिए।

लक्ष्य का पीछा करते हुए विंडीज के कप्तान क्रैग ब्रेथवेट 20, जान कैम्पबेल 23 और शेयने मोस्ली 12 रन बनाकर आउट हुए। स्टंप्स के समय एनक्रूमाह ब्रोनर 15 और काइल मेयर्स 37 रन बनाकर क्रीज पर थे। विंडीज के तीनों विकेट ऑफ स्पिनर मेहदी हसन ने लिए।

पेट्रोल-डीजल के दाम स्थिर

नई दिल्ली।

पेट्रोल और डीजल के दाम शनिवार को स्थिर रहे। देश में पेट्रोल की कीमतें इस समय रिकॉर्ड स्तर पर हैं। दिल्ली को छोड़कर अन्य शहरों में डीजल के दाम भी ऐतिहासिक उच्चतम स्तर पर हैं।

घरेलू बाजार में सबसे बड़ी तेल विपणन कंपनी इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन के अनुसार, राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में पेट्रोल की कीमत में पिछले दिवस की तुलना में कोई बदलाव नहीं हुआ और वह 86.95 रुपये प्रति लीटर पर रही। मुंबई में पेट्रोल 93.49 रुपये रहा जबकि कोलकाता में इसकी कीमत 88.30 रुपये प्रति लीटर रही। चेन्नई में एक लीटर पेट्रोल 89.39 रुपये का बिका। पेट्रोल मुंबई में पहली बार 93 रुपये और चेन्नई में पहली बार 89 रुपये प्रति लीटर के पार पहुँचा है। डीजल की कीमत दिल्ली में 77.13 रुपये प्रति लीटर रही। डीजल की कीमत मुंबई में 83.99 रुपये, चेन्नई में 82.33 रुपये और कोलकाता में 80.71 रुपये प्रति लीटर पर स्थिर बनी रही।

रूस का खिताबी मुकाबला इटली से

मेलबोर्न डेनिल मेदवेदेव ने जर्मनी के एलेक्जेंडर ज्वेरेव को तीन सेटों के संघर्ष में शनिवार को 3-6, 6-3, 7-5 से हराकर रूस को पहली बार एटीपी कप टेनिस टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंचा दिया।

रूस ने जर्मनी को 2-1 से पराजित किया। रूस के आंद्रेई रुब्लेव ने इससे पहले जर्मनी के जान लेनार्ड स्ट्रफ को 3-6, 6-1, 6-2 से हराकर रूस को 1-0 की बढ़त दिलाई थी। जर्मनी को इस मुकाबले का एकमात्र अंक युगल मैच में जीत से मिला। रूस का रविवार को होने वाले फाइनल में इटली से मुकाबला होगा। इटली ने स्पेन को 2-0 से पराजित किया।इटली के मातियो बारेटिनी ने स्पेन के रॉबर्टो बतिस्ता अगुत को 6-3, 7-5 से हराकर इटली को 2-0 की अपराजेय बढ़त दिलाई। स्पेन की टीम पिछले वर्ष फाइनल में पहुंची थी लेकिन विश्व के नंबर दो खिलाड़ी राफेल नडाल के पीठ की परेशानी के कारण मुकाबले से हट जाने से उसकी इस बार चुनौती कमजोर पड़ गयी थी। इटली के फाबियो फोगनिनी ने इससे पहले स्पेन के पाब्लो कारेनो बुस्ता को 6-2, 1-6, 6-4 से हराया था।

रोहन जेटली ने किया उद्घाटन, सोनेट क्लब की रोमांचक जीत

नई दिल्ली

पहले हरकोर्ट बटलर स्कूल अंडर-15 क्रिकेट टूर्नामेंट का उद्घाटन दिल्ली एवं जिला क्रिकेट संघ (डीडीसीए) के अध्यक्ष रोहन जेटली ने शनिवार को किया। टूर्नामेंट में पहला मैच सोनेट क्रिकेट क्लब और रविंद्र क्रिकेट अकेडमी के बीच खेला गया जिसमें सोनेट ने दो विकेट से जीत हासिल की।

रविंद्र क्रिकेट अकादमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 34 ओवर में 122 रन बनाये। सिद्धार्थ जून ने 32 रन बनाए जबकि सोनेट की तरफ़ से यशवर्धन शर्मा ने 12 रन देकर तीन विकेट लिए। जवाब में सोनेट क्लब ने लक्ष्य 26 ओवर में आठ विकेट पर 123 रन बनाकर हासिल कर लिया। कुणाल ने 32 रनों की पारी खेली। रविंद्र की तरफ़ से कनिष्क घई ने 21 रन देकर तीन विकेट लिए। यशवर्धन शर्मा को ओनली स्पोर्ट्स मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार हरकोर्ट बटलर स्कूल के प्रिन्सिपल ढाका जी ने प्रदान किया। इससे पूर्व टूर्नामेंट का उद्घाटन डीडीसीए के अध्यक्ष रोहन जेटली ने किया। इस अवसर पर विनोद तिहारा, सीके खन्ना, दिनेश शर्मा उर्फ बल्ली, सूर्य प्रकाश शर्मा, महेश भाटी और करन हरित उपस्थित थे। इस अवसर उन्होंने अकेडमी का भी उद्घाटन किया।

ईस्ट बंगाल को हराकर प्लेऑफ के आसार मजबूत करना चाहेगा जमशेदपुर

फातोरद

रविवार को जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में होने वाले हीरो इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) के अपने 16वें मुकाबले में जमशेदपुर एफसी खेलने उतरेगी तो उसके जेहन में सिर्फ एससी ईस्ट बंगाल के खिलाफ जीत ही होगी। जमशेदपुर और उसके मुख्य कोच ओवेन कायले के लिए यह समीकरण बहुत सरल है। वे दो सम्भावित प्लेऑफ स्थानों से चार अंक दूर हैं और इस गैप को भरने के लिए उनके पास पांच मैचों का मौका है।

जमशेदपुर की टीम अच्छा कर रही थी लेकिन पांच मैचों में जीत नहीं मिल पाने के कारण उसका प्लेऑफ का अभियान थमता सा दिखा। अपने पिछले मैच में ओडिशा एफसी पर मिली जीत के साथ जमशेदपुर ने इस नुकसान की भरपाई की और मुख्यधारा में लौटी।

कोच कायले मानते हैं कि अगर उनकी टीम को टॉप-4 में रहना है और प्लेऑफ खेलना है तो उसे जीत का लय बनाए रखना होगा। उन्होंने कहा, ''हमारे खिलाड़ियों ने खूब मेहनत की है। अब उन्हें एक बार में एक मैच के बारे में सोचना होगा और मैच जीतने के लिए सकारात्मक बने रहना होगा। हमें यही करना होगा।''

कायले इस बात को लेकर खुश होंगे कि उन्हें डिफेंस को लेकर कोई चिंता करने की जरूरत नहीं क्योंकि इस सीजन में उनकी टीम का डिफेंस काफी मजबूत रहा है। इस टीम ने अब तक इस सीजन में तीन लगातार क्लीन शीट हासिल किए हैं। इससे पहले के तीन मैचों में हालांकि इस टीम को आठ गोल खाने पड़े थे।

डिफेंस तो ठीक है लेकिन इस टीम के अटैक को मेहनत करनी होगी। ओडिशा के खिलाफ जिस गोल से जमशेदपुर को जीत मिली थी, वह चार मैचों के बाद ओपन प्ले से उसका पहला गोल था। पिछली बार जब दोनों टीमें भिड़ी थीं तब ईस्ट बंगाल ने 24वें मिनट से ही 10 खिलाड़ियों के साथ खेलते हुए जमशेदपुर को गोल करने का मौका नहीं दिया था और वह मुकाबला गोलरहित बराबरी पर छूटा था।

अब हालांकि ईस्ट बंगाल के लिए हालात बदल चुके हैं। यह टीम मुश्किल में है। रविवार को अगर उसे हार मिलती है तो उसके प्लेऑफ में जाने की उम्मीदें लगभग समाप्त हो जाएंगी। यह टीम पांच मैचों से जीत नहीं हासिल कर सकी है। साथ ही यह अपने बीते चार मैचों में से तीन में गोल नहीं कर सकी है।

साथ ही साथ उसके मुख्य कोच रॉबी फॉलर भी निलंबित हैं और वह अगले मैच में भी टीम के साथ नहीं होंगे। उनकी गैरमौजूदगी में हालांकि सहायक कोच टोनी ग्रैंट ने अपनी टीम को अच्छे से सम्भाला है। ग्रैंट ने कहा, ''मुझे नहीं लगता कि यह पिच पर कठिन है। जब आप सब कुछ का विश्लेषण करते हैं, तो पता चलता है कि टीम को आईएसएल में अंतिम समय में जगह मिली थी। हमारे पास दो सप्ताह का ही प्री-सीजन था। मुझे लगता है कि इन सबके बावजूद टीम ने जबरदस्त प्रदर्शन किया है।''

ग्रैंट ने कहा, ''हम केरल से एक अंक पीछे हैं। केरल कई सालों से लीग में है। हमने अब तक जिस तरह का प्रदर्शन किया है और साहस दिखाया है उसके लिए सभी कर्मचारी और सभी खिलाड़ी श्रेय के हकदार हैं।''

स्कूल गेम्स फेडरेशन के चुनाव रद्द, दोबारा कराने का आदेश

नई दिल्ली।

सरकार ने भारतीय स्कूल गेम्स फेडरेशन (एसजीएफआई) के चुनावों को राष्ट्रीय खेल संहिता के प्रावधानों के उल्लंघन के आरोप में रद्द कर दिया है और इन चुनावों को दोबारा कराने का आदेश दिया है।

युवा और खेल मामलों के मंत्रालय ने पांच फरवरी को एसजीएफआई अध्यक्ष सुशील कुमार और महासचिव राजेश मिश्रा को भेजे पत्र में कहा है कि 29 दिसंबर 2020 को नागापट्टिनम (तमिलनाडु) में हुए चुनाव अवैध घोषित किए जाते हैं जिनमें अध्यक्ष की अनुमति और सलाह के बिना निर्वाचन अधिकारी नियुक्त किया गया था। मंत्रालय ने एफजीएफए को राष्ट्रीय खेल संहिता 2011 के दिशानिर्देशों के अनुसार

फिर से चुनाव कराने का निर्देश जारी किया है।

उल्लेखनीय है कि इन चुनावों के बारे में एसजीएफआई के अध्यक्ष सुशील कुमार को कोई जानकारी नहीं थी और सभी पदाधिकारी निर्विरोध चुन लिए गए थे। महासचिव राजेश मिश्रा ने सुशील की जानकारी के बिना अपनी पसंद का निर्वाचन अधिकारी नियुक्त कर दिया था और चुनाव करा लिए थे जबकि राष्ट्रीय खेल संहिता के अनुसार निर्वाचन अधिकारी नियुक्त करने का अधिकार संबद्ध फेडरेशन के अध्यक्ष के पास होता है। यह वही राजेश मिश्रा हैं जिन पर दो बार के ओलम्पिक पदक विजेता पहलवान सुशील कुमार ने आरोप लगाया था कि मिश्रा ने एसजीएफआई के नियमों को बदलने के लिए उनके जाली हस्ताक्षर किये थे और उन्हें कोई जानकारी नहीं दी थी।

29 दिसम्बर को हुए चुनावों में अंडमान के वी रंजीत कुमार अध्यक्ष, मध्य प्रदेश के आलोक खरे महासचिव और विद्या भारती के मुख्तेह सिंह बादेशा कोषाध्यक्ष बनाए गए जबकि राजेश मिश्रा खुद सीईओ बन बैठे।

सुशील ने चुनावों को रद्द किये जाने के फैसले का स्वागत करते हुए राजेश मिश्रा को ही इस सारे फसाद की जड़ बताया। सुशील ने कहा कि वह पिछले कई महीनों से मिश्रा के फर्जीवाड़े के बारे में आवाज़ उठाते रहे हैं लेकिन तब किसी ने ध्यान नहीं दिया।उन्होंने कहा कि इस आदमी ने देश विदेश में भारतीय खेलों और खिलाड़ियों को बदनाम किया है ।

ओलम्पिक पदक विजेता पहलवान ने साथ ही कहा कि उन्हें इस बात का गहरा दुख है कि मिश्रा ने उनकी शराफ़त और सीधेपन के साथ विश्वासघात किया।

उन्होंने कहा कि वह मिश्रा के खिलाफ हर कड़े कदम उठाएंगे और उसने उनके साथ जो जालसाजी की है उसके लिए सजा दिलाएंगे। सुशील ने कहा कि खेल मंत्रालय ने चुनावों को रद्द करने का सही फैसला लिया है और इस फैसले से अभिभावकों और खिलाड़ियों का एसजीएफआई पर विश्वास लौटेगा।

सुशील ने कहा कि सरकार ना सिर्फ़ फिर से साफ सुथरे चुनाव कराए बल्कि उन सभी गुनहगारों को कड़ी से कड़ी सज़ा भी दे जिन्होंने खेल और खिलाड़ियों के साथ विश्वासघात किया है।

रुट ने तोड़ा इंजमाम का रिकॉर्ड

चेन्नई,। इंग्लैंड के कप्तान जो रुट ने 100वें टेस्ट में सर्वाधिक निजी स्कोर बनाने का पाकिस्तान के इंजमाम उल हक़ का रिकॉर्ड तोड़ दिया है और वह 100वें टेस्ट में दोहरा शतक बनाने वाले पहले बल्लेबाज बन गए हैं।

इंजमाम ने मार्च 2005 में अपने 100वें मैच में बेंगलुरु में भारत के खिलाफ 184 रन बनाये थे और रुट ने भारत के खिलाफ चेन्नई में पहले टेस्ट के दूसरे दिन शनिवार को इंजमाम का यह रिकॉर्ड तोड़ दिया। रुट ने छक्का मारकर दोहरा शतक पूरा किया। उनका यह पांचवां और पिछले तीन टेस्टों में दूसरा दोहरा शतक है। रुट ने इस दौरे पर आने से पहले श्रीलंका के खिलाफ पहले टेस्ट में 228 और दूसरे टेस्ट में 186 रन बनाये थे। इस टेस्ट में रुट 377 गेंदों में 218 रन बनाकर आउट हुए।

रुट 100वें टेस्ट में शतक बनाने की उपलब्धि हासिल करने वाले टेस्ट इतिहास के नौवें बल्लेबाज बने हैं। रुट दुनिया के एकमात्र ऐसे खिलाड़ी बने हैं जिन्होंने अपने 98वें, 99वें और 100वें टेस्ट में शतक बनाया है। वह 100 वें टेस्ट में दोहरा शतक बनाने वाले पहले बल्लेबाज बने हैं।

चीन सर्वाधिक आक्रामक प्रतिद्वन्द्वी: बाइडन

वाशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने चीन को सर्वाधिक 'आक्रामक प्रतिद्वंद्वी' करार देते हुए कहा है कि उनका प्रशासन बीजिंग द्वारा पेश की जाने वाली चुनौतियों से न सिर्फ सीधे तौर पर निपटेगा, बल्कि जब अमेरिका के हितों की बात होगी तब वह उसके साथ काम करने से भी नहीं हिचकेगा. बाइडन ने एक उभरते और कहीं अधिक आक्रामक चीन के अपनी विदेश नीति के लिये सबसे बड़ी चुनौती होने का जिक्र करते हुए बृहस्पतिवार को इस बात पर जोर दिया कि बीजिंग द्वारा पैदा की गई रणनीतिक प्रतिस्पर्धा का जवाब देने के लिए सहयोगी देशों की जरूरत है।

बाइडन ने यहां विदेश विभाग के कर्मचारियों को उनके 'फॉगी बॉटम' मुख्यालय में संबोधित करते हुए कहा, श्हम चीन द्वारा आर्थिक नियमों का उल्लंघन किये जाने तथा मानवाधिकारों, बौद्धिक संपदा और वैश्विक शासन पर उसके कुठाराघात करने का मुकाबला करेंगे। उन्होंने कहा, हम अपने सर्वाधिक गंभीर प्रतिस्पर्धी, चीन द्वारा अपनी समृद्धि, सुरक्षा और लाकतांत्रिक मूल्यों को पेश की गई चुनौतियों से सीधे तौर पर निपटेंगे।

गौरतलब है कि चीन-अमेरिका संबंध दोनों देशों और विश्व के लिए मायने रखते हैं। हाल के समय में दोनों देशों के बीच संबंधों में व्यापार, जासूसी और कोरोना वायरस महामारी को लेकर खटास आ गई है. बाइडन ने कहा कि जब अमेरिका के हितों की बात होगी तब उनका प्रशासन चीन के साथ मिल कर काम करने को भी तैयार है. चीन को लेकर उनके प्रशासन की नीति कैसी रहेगी इसके संकेत देते हुए उन्होंने कहा, लेकिन अमेरिका के हित की बात आती है तो हम बीजिंग के साथ मिलकर काम करने को भी तैयार हैं. हम अपने सहयोगियों तथा भागीदारों के साथ काम करके, अंतरराष्ट्रीय संस्थानों में अपनी भूमिका को नया रूप देकर, हमारी विश्वसनीयता एवं नैतिक अधिकार को पुनः प्राप्त करते हुए, देश के अंदर स्थिति बेहतर बनाने के लिए काम करेंगे।

दिल्ली के सिंघु, गाजीपुर और टिकरी बॉर्डर पर आज रात 12 बजे तक बंद रहेगी इंटरनेट सेवा, गृह मंत्रालय ने जारी किया आदेश

नई दिल्ली। शनिवार को हरियाणा, पंजाब समेत देश के कई राज्यों में किसान संगठनों द्वारा तीन घंटे का चक्का जाम किया गया। इसी बीच, गृह मंत्रालय ने दिल्ली के सिंघु, गांजीपुर और टिकरी बॉर्डर पर इंटरनेट सेवाओं को एक बार फिर निलंबित करने का आदेश दे दिया है। यह इंटरनेट रात 12 बजे तक बंद रहेगा। इन इलाकों में किसान कृषि कानूनों के विरोध में प्रदर्शन कर रहे हैं। शनिवार को किसान संगठनों द्वारा किए गए चक्का जाम दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक बुलाया गया था और अब इसका समय खत्म हो चुका है। हालांकि, किसानों द्वारा किए गए चक्का जाम का असर कुछ खास नहीं रहा। दिल्ली एनसीआर में चक्का जाम को लेकर दिल्ली पुलिस पूरी तरह से अलर्ट रही। दिल्ली पुलिस के पीआरओ ने बताया कि जहां से भी हमारे पास इनपुट आया कि कुछ समूह या लोग चक्का जाम के दौरान कुछ छिटपुट घटनाओं को अंजाम दे सकते हैं, तो उसके लिए पहले से ही उन जगहों पर खास इंतजाम किए गए थे। कुछ लोग शहीदी पार्क पहुंचे हुए थे। वहां मौजूद उन लोगों को सड़क हटा दिया गया और ट्रैफिक को फिर से सुचारू रूप से चालू कर दिया गया।

बता दें कि चक्का जाम के दौरान दिल्ली के 12 मेट्रो स्टेशनों को किया गया था और कुछ मेट्रो स्टेशनों को ऐहतियातन बंद कर दिया गया था। निगरानी के लिए ड्रोन भी उड़ाए गए थे। वहीं, आज गाजीपुर में प्रदर्शनकारी किसानो को संबोधित करते हुए राकेश टिकैत ने कहा कि वे कृषि कानूनों के निरस्त होने तक घर वापस नहीं लौटेंगे और सरकार को उनकी मांगे माननी ही पड़ेंगी। गौरतलब है कि तीन कृषि कानूनों को रद किए जाने की मांग को लेकर किसान संगठन पिछले दो महीनों से अधिक समय से दिल्ली-एनसीआर के कई बॉर्डर में विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। वहीं, केंद्र सरकार और किसान संगठनों के बीच भी ग्यारवें दौर की वार्ता हो चुकी है, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला है।

तीन महीने में सौ से ज्यादा हमलों का जिम्मेदार पाक संगठन

संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि पिछले साल सिर्फ तीन महीने में हुए 100 से ज्यादा आतंकी हमलों के लिए जिम्मेदार आतंकी संगठन तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) ने कई छोटे आतंकवादी समूहों को अफगानिस्तान में फिर से एकजुट करने का काम किया है। इससे अफगानिस्तान और क्षेत्र में खतरा बढ़ने का अंदेशा है। इन छोटे-छोटे आतंकवादी समूहों को अलकायदा संचालित कर रहा था। एनालिटिकल सपोर्ट ऐंड सैंक्शंस टीम' की 27वीं रिपोर्ट में कहा गया है कि टीटीपी ने अफगानिस्तान में छोटे-छोटे आतंकी समूहों को कथित रुप फिर से एक करने का काम किया है, जिसका संचालन अलकायदा कर रहा था। रिपोर्ट में कहा गया है कि इससे अफगानिस्तान, पाकिस्तान और क्षेत्र में खतरा बढ़ने का अंदेशा है। यह भी कहा गया कि जुलाई और अगस्त में पांच समूहों ने टीटीपी के प्रति निष्ठा का प्रण लिया था, जिसमें शेहरयार महसूद समूह, जमात-उल-अहरार, हिज्ब-उल-अहरार, अमजद फारूकी समूह और उस्मान सैफुल्लाह समूह (जिसे पहले लश्कर-ए-झांगवी के नाम से जाना जाता था) शामिल है. रिपोर्ट के मुताबिक, इससे टीटीपी की ताकत बढ़ी है और नतीजतन क्षेत्र में हमले बढ़े हैं। टीटीपी में लड़ाकों की संख्या 2,500 से 6,000 है।

खबरें एक नजर में

आंध्र प्रदेश पंचायत चुनाव: सनकी कहना नहीं आया रास, निर्वाचन आयोग ने कहा- मंत्री रेड्डी को घर में नजरबंद रखें

आंध्र प्रदेश राज्य निर्वाचन आयोग ने एक दुर्लभ घटनाक्रम में शनिवार को प्रदेश के पुलिस महानिदेशक को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि राज्य के मंत्री पी रामचंद्र रेड्डी 21 फरवरी तक अपने घर में ही नजरबंद रहें। आयोग के खिलाफ कथित टिप्पणियों की वजह से उनपर यह कार्रवाई की गई है। राज्य में पंचायत चुनाव नौ फरवरी से शुरू होगा और मतदान चार चरणों में 21 फरवरी तक चलेगा। राज्य निर्वाचन आयुक्त रमेश कुमार ने अपने आदेश में कहा कि आयोग ने उपचारात्मक कार्रवाई के लिए विभिन्न विकल्पों व परिप्रेक्ष्यों पर सावधानीपूर्वक विचार किया और संविधान के अनुच्छेद 243के में प्रदत्त शक्तियों का इस्तेमाल करते हुए पुलिस महानिदेशक को पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास मंत्री को ग्राम पंचायत चुनाव खत्म होने तक घर में ही नजरबंद रखने का निर्देश दिया।

बंगाल में चुनावी बजट: बच्चे-बूढ़े और जवान पर ममता का फोकस

राज्य में चुनाव नजदीक आने के साथ पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शुक्रवार को विधानसभा में 2.99 लाख करोड़ रुपये का अंतरिम बजट पेश किया। इस दौरान उन्होंने मुफ्त राशन और मदर किचन जैसी कई घोषणाएं कीं जिनमें किसानों के लिए वार्षिक सहायता राशि बढ़ाना भी शामिल है। अप्रैल से शुरू होने वाले वित्त वर्ष में कुछ महीने के लिए पेश अंतरिम बजट पर अगले दो दिनों तक चर्चा होगी और फिर यह सदन से पारित होगा। हालांकि जानकारों का कहना है कि घोषणाओं को देखकर इसे चुनाव से पहले लुभाने वाला बजट कहना ज्यादा उचित होगा। विधानसभा सत्र के दौरान बनर्जी ने कहा कि उनकी सरकार ने राज्य के सर्वांगीण विकास के लिए अथक काम किया है, जबकि उसे केंद्र सरकार से आवश्यक सहयोग नहीं मिला है। उन्होंने कहा कि हमने एससी/एसटी समुदायों के लिए 20 लाख घर बनाने और कच्चे मकानों को पक्का करने का निर्णय किया है।

पीएम मोदी के भाषण से तय होगी कृषि सुधार की दिशा, सोमवार को राज्यसभा में देंगे चर्चा का जवाब

नई दिल्ली। कृषि सुधार के तीनों नए कानूनों को लेकर किसान संगठनों का आंदोलन खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है। यह आंदोलन अब सड़क के रास्ते राजनीतिक दलों के मार्फत संसद पहुंच गया है। संसद के भीतर भी इन कानूनों को लेकर सरकार और विपक्ष के बीच सियासी रस्साकशी चल रही है। राष्ट्रपति के अभिभाषण पर शुरू हुई चर्चा के केंद्र में किसान आंदोलन और कृषि कानून ही हैं। राज्यसभा में इस मुद्दे पर जमकर चर्चा हुई, लेकिन लोकसभा में अब भी बहस शुरू करने को लेकर गतिरोध बना हुआ है। अब सबकी नजर सोमवार को राज्यसभा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भाषण पर होगी। इस दिन वे राष्ट्रपति के अभिभाषण पर हुई चर्चा का जवाब देंगे। उनके भाषण से कृषि सुधार की दिशा तय होगी।

सभी की नजर होंगी मोदी पर, पीएम राज्यसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर देंगे चर्चा का जवाब: राज्यसभा में चर्चा के आखिरी दिन शुक्रवार को केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र तोमर विपक्ष पर जमकर बरसे। हैरानी भरे अंदाज में उन्होंने विपक्षी नेताओं से पूछा कि कानून की खामियां तो उन्हें बताई जाएं। सिर्फ कानून को काला बता देने भर से बात नहीं बनेगी। विपक्षी वक्ताओं के भाषण में कानून में कमियों के बारे में कुछ नहीं कहे जाने पर उन्हें आड़े हाथों लिया। सदन में चर्चा पूरी हो चुकी है। सोमवार को प्रधानमंत्री जवाब देने वाले हैं। सभी की नजर प्रधानमंत्री के भाषण पर होगी कि कृषि क्षेत्र के सुधारों पर वे क्या बोलते हैं?

नए कृषि कानूनों को लेकर किसान संगठन दिल्ली की सीमा पर मोर्चा जमाए बैठे हैं: नए कृषि कानूनों को लेकर पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसान संगठन दिल्ली की सीमा पर मोर्चा जमाए बैठे हैं। दो महीने से अधिक हो चुका है। इस दौरान सरकार से उनकी 12 दौर की वार्ता भी हो गई, लेकिन उनकी जिद के चक्कर में समस्या का समाधान नहीं निकल सका है। आंदोलनकारी किसान नेता जहां इन कानूनों को रद करने की जिद पर अड़े हुए हैं, वहीं सरकार उनसे एतराज वाले प्रविधानों का ब्योरा मांग रही है।

उइगुर महिलाओं पर खबर को लेकर चीन बौखलाया

बीजिंग। चीन ने शिनजियांग क्षेत्र में उइगुर और अन्य मुस्लिमों के लिए बनाए गए शिविरों में महिलाओं से कथित सामूहिक बलात्कार और उत्पीड़न पर खबर के लिए ब्रिटिश प्रसारक बीबीसी की आलोचना की। चीन ने ब्रिटेन में अपने सरकारी प्रसारक सीजीटीएन का लाइसेंस रद्द किए जाने की भी निंदा की। चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता वांग वेनबिन ने जासूसी के आरोपों पर तीन चीनी पत्रकारों को निष्कासित किए जाने के ब्रिटेन के कदम पर भी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की. श्डेली टेलीग्राफश् अखबार के मुताबिक, ब्रिटेन ने पत्रकार के नाम पर पिछले साल जासूसी करने वाले तीन चीनी नागरिकों को निष्कासित कर दिया है. अखबार में आयी खबर के मुताबिक तीनों बीजिंग के सुरक्षा मंत्रालय के लिए खुफिया अधिकारी के तौर पर काम कर रहे थे।

बीबीसी की वीडियो रिपोर्ट में शिनजियांग में विशेष शिविरों में उइगुर मुस्लिम महिलाओं से सुनियोजित तरीके से दुष्कर्म और प्रताड़ना के आरोप लगाए गए। रिपोर्ट में एक पीड़िता ने कहा कि महिलाओं को हर रात शिविरों से बाहर निकाल कर नकाबपोश चीनी लोग दुष्कर्म करते हैं। चीन के विदेश मंत्रालय ने आरोपों से इनकार करते हुए बीबीसी पर फर्जी खबर देने का आरोप लगाया। प्रवक्ता वांग वेनबिन ने कहा कि महिलाओं से यौन उत्पीड़न की घटनाएं नहीं हुई. बीबीसी की वेबसाइट पर आयी रिपोर्ट के मुताबिक रिहा होने के बाद क्षेत्र से भागकर अब अमेरिका में रह रहीं एक महिला ने कहा कि उन्हें कई बार प्रताड़ित किया गया और सामूहिक दुष्कर्म का सामना करना पड़ा। शिनजियांग की एक महिला पर रिपोर्ट में कहा गया है कि उन्हें निर्वस्त्र किया गया और उनके साथ सामूहिक दुष्कर्म किया गया। शिनजियांग में चीन की नीतियों के बारे में जानकार एड्रियन जेंस ने कहा,''अत्याचार शुरू होने के बाद से मैंने सबसे खौफनाक सबूत देखे हैं।'' उन्होंने कहा, ''यौन उत्पीड़न और प्रताड़ना के बारे में विस्तृत साक्ष्य दिए गए हैं. हमें जितना अंदाजा था यह उससे भी भयंकर है।

सरकारी या पंचायती जमीन पर अवैध कब्जा को नियमित करने का दावा नहीं किया जा सकता : सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि सरकारी या पंचायती जमीन पर अवैध कब्जा करने वाले लोग इसे नियमित करने का दावा नहीं कर सकते। जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ और एमआर शाह की पीठ ने कहा कि सरकारी या पंचायती जमीन पर अवैध कब्जे को नियमित करना केवल राज्य सरकार की नीति और नियमों में निर्धारित शर्तों के अनुसार हो सकता है। उन्होंने यह बात हरियाणा के सोनीपत जिले में गोहाना तहसील के सरसाद गांव के निवासियों द्वारा दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए कही, जिन्होंने पंचायती जमीन पर कब्जा जमाकर घरों का निर्माण किया है। पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट ने प्राधिकरण द्वारा पारित आदेश को चुनौती देने वाली एक रिट याचिका को खारिज कर दिया। सुप्रीम कोर्ट ने सक्षम प्राधिकारी के साथ-साथ हाई कोर्ट के फैसले को भी इस दृष्टि से जायज ठहराया कि संबंधित याचिकाकर्ताओं ने अधिकतम 200 वर्ग गज तक के क्षेत्र से अधिक क्षेत्र पर कब्जा कर रखा है, वे नियम 12 (4) के तहत लाभ के हकदार नहीं हैं।

म्यांमार में सशस्त्र हमले में 12 की मौत

नेपीडॉ। म्यांमार में सेना के तख्तापलट के बाद एक सशस्त्र हमले में 12 लोगों की मौत हो गई। यह हमला म्यांमार के स्व-शासित क्षेत्र के पूर्व प्रमुख निकाय सदस्य के काफ्लि पर हुआ. मारे जाने वालों में 9 आम नागरिक और तीन पुलिसकर्मी हैं. चीन की समाचार एजेंसी शिन्हुआ के मुताबिक, यह काफ्लिा यू खिन मॉन्ग लुईन का था जो कि म्यांमार के स्व-शासित क्षेत्र कोकांग के सेंट्रल एग्जीक्यूटिव कमेटी के पूर्व सदस्य हैं. काफ्लि पर म्यांमार नेशनल डेमोक्रेटिक अलायंस आर्मी के 20 सदस्यों ने हमला किया। खबर के मुताबिक, हमले में नौ आम नागरिक और तीन पुलिसकर्मियों की मौत हो गई है. जबकि 8 आम नागरिक और पांच पुलिसवाले घायल हुए हैं. इस बीच सेना ने सशस्त्र बलों के खिलाफ चलाए जाने वाले अभियान पर 28 फरवरी तक रोक लगा दी है।

बता दें कि म्यांमार में 1 फरवरी को सेना ने लोकतांत्रिक तरीके से चुनी गुई सरकार के नेताओं को हिरासत में ले लिया और देश की सत्ता को कब्जे में ले लिया. सेना ने बाद में यह घोषणा की थी कि तख्तापलट देश के लिए जरूरी था और अब एक साल बाद चुनाव कराए जाएंगे। तख्ता पलट के बाद ही विरोध प्रदर्शन जारी है।

बॉलीवुड एक्ट्रेस एवलिन शर्मा जल्द करेंगी शादी, शॉपिंग भी कर दी शुरू

अपने क्यूट अंदाज से ऑडियंस का दिल जीतने वालीं बॉलीवुड एक्ट्रेस एवलिन शर्मा जल्दी ही शादी के बंधन में बंधने वाली हैं। जी हां, ये खबर एकदम सच है। आपको बता दें कि 2019 में एवलिन ने ऑस्ट्रेलिया के डॉ. तुषान भिंडी से सगाई कर ली थी, और उसके बाद से वो उनके साथ सिडनी में ही हैं। ऐसे में अब जल्दी ही दोनों शादी करने जा रहे हैं। दरअसल हाल ही में एवलिन ने फैंस को खुशखबरी देने का सोचा है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक एवलिन ने कहा, श्तुषान और मैंने एक बड़ी शादी की प्लानिंग की थी जो कि इंडिया में होनी थी लेकिन कोरोना के चलते अब इस पर विचार करना पड़ रहा है। हमने इस बात का फैसला लिया है कि शादी में हम दोनों का होना सबसे ज्यादा जरूरी है। कोविड की वजह से प्लान्स बदल गए हैं, और अब हम हमारे परिवार और दोस्तों की मौजूदगी में ही शादी करेंगे और हमें आशा है कि ये जल्द होगी। बातचीत में एवलिन ने आगे कहा, एक बार फिर जब विश्व सभी चीजों के लिए खुल जाएगा, तब हम एक बड़ी पार्टी इंडिया में देंगे और हमारे सभी दोस्तों और परिवार के लोगों को बुलाएंगे। मैंने अपनी शादी के कपड़े खरीदने शुरू कर दिए है और मैं आपको बता सकती हूं कि ये जल्द होने वाली है।

जब रिया चक्रवर्ती से फोटोग्राफर्स ने किया ये सवाल, एक्ट्रेस का जवाब बना चर्चा का विषय

दिवंगत अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की डेथ के बाद से अब तक रिया चक्रवर्ती विवादों के जाल में बुरी तरह फंसी रही हैं। हालांकि जेल से जमानत मिल जाने के बाद अब रिया ने अपने जीवन में इतने उतार-चढ़ावों के बाद पीछे का सबकुछ भुलाकर जिंदगी में आगे बढने का फैसला किया है। वैसे पिछले कई दिनों से रिया को अब लंबे वक्त बाद बाहर टहलते हुए देखा गया है। इस बीच हाल ही में रिया को उनके जिम के बाहर निकलते हुए स्पॉट किया गया है। जिसका वीडियो अब सोशल मीडिया पर काफी तेजी से वायरल हो रहा है। दरअसल रिया को जिम से बाहर आते हुए मीडिया ने अपने कैमरों में कैद कर लिया था। फिर क्या था उन्हें देखकर वहां मौजूद फोटोग्राफर रिया की फोटोज और वीडियो क्लिक करने लग गए। साथ ही फोटोग्राफर ने रिया से एक सवाल भी किया तब से यह सवाल और उसपर रिया का रिएक्शन लोगों के बीच चर्चा का विषय बना हुआ है। सुशांत की मौत के बाद काफी लंबे वक्त बाद नजर आई रिया चक्रवती इन दिनों अपनी फिजिकल और मेंटल फिटनेस पर ज्यादा ध्यान दे रही हैं। रिया हाल ही में अपने जिम सेशन्स के बाद रवाना होती दिखाई दी। इस दौरान तस्वीरें ले रहे फोटोग्राफर ने रिया से जब सवाल किया कैसे हो आप तो इसके जवाब में रिया ने कहा ठीक हो रही हूं अब। सिर्फ इतना कहते हुए रिया अपनी गाड़ी में जाकर बैठ गई और फट से कार का दरवाजा बंद कर लिया। वहीं अभिनेत्री का ये वीडियो सोशल मीडिया पर बड़ी तेजी से वायरल हो रहा है। अदाकारा की लुक की बात की जाए तो रिया ने ब्लैक कलर का टॉप पहना हुआ था और ग्रे कलर की टाइट्स पहनी हुई थीं। वहीं कोरोना से बचाव का पूरा ध्यान रखते हुए रिया ने काफी कूल यूनिक मास्क पहना हुआ था। खुले बालों के साथ उन्होंने एक स्लिंग बैग भी कैरी किया हुआ था साथ ही उनके हाथ में पानी की बोतल थी। गौरतबल है इससे पहले रिया चक्रवर्ती अपने भाई शौविक चक्रवर्ती के साथ भी दिखाई दे चुकी हैं। जाहिर है कि बीता साल रिया के लिए बेहद मुश्किलों भरा रहा था। दरअसल रिया के ऊपर सुशांत के कत्ल के आरोप लगाए गए थे। इन सबके चलते रिया को जेल भी जाना पड़ा था। वहीं अब रिया ने इन सभी परेशानियों से उभरने का फैसला ले लिया है और फिलहाल अभिनेत्री उस ट्रॉमा निकलने की पूरी-पूरी कोशिश कर रही हैं।

फैन ने कपिल शर्मा के बेटे के नाम को लेकर किया सवाल, कॉमेडी किंग ने दिया रिएक्शन

कॉमेडी के किंग कपिल शर्मा हाल ही में अपने दूसरे बच्चे के पापा बने हैं। बीती एक फरवरी को कपिल शर्मा की वाइफ गिन्नी चतरथ ने अपने बेटे को जन्म दिया है। इस बात की जानकारी कपिल ने अपने फैंस को सोशल मीडिया के जरिए दी थी। इसके बाद से ही कपिल के करीबियों और उनके फैंस का बधाईयां देने का सिलसिला शुरू हो गया था। हाल ही में कपिल ने चाहने वालों ने उनसे एक और दिलचस्प सवाल पूछ लिया है जो अब खूब सुर्खियों में बना हुआ है। दूसरी बार पिता बनने की खुशी कपिल ने खुद से ट्विटर के माध्यम बताई थी। इस दौरान उन्होंने लिखा था- नमस्कार,आज सुबह हमें भगवान के आशीर्वाद के रूप में एक बेटा मिला है,भगवान की कृपा से बच्चा और मां दोनों स्वस्थ हैं,आप सभी के प्यार और दुआओं के लिए शुक्रिया। गिन्नी और कपिल। इस एक ट्वीट के बाद कपिल ने दो दिन बाद फिर से ट्वीट करके अपने सभी चाहने वालों और दोस्तों का आभार जताया। कपिल ने अपने और पत्नी गिन्नी की तरफ से ट्वीट करके लिखा हमारे नन्हें बेटे के लिए आप सभी के प्यार और आशीर्वाद के लिए धन्यवाद। अब कपिल की यह पोस्ट खूब तेजी से वायरल हो रही है साथ ही लोगों ने इस पर खूब प्यार भी दिखाया था। बता दें कपिल के बेटे का जन्म की खुशखबरी मिल जाने के बाद फैंस अब उनके बेटे का नाम जानने के लिए काफी ज्यादा बेताब हैं। इस बीच एक यूजर ने कपिल से मजेदार सवाल पूछ ही लिया। इस पर कपिल का जवाब भी कुछ कम नहीं था। दरअसल यूजर ने सवाल में कपिल के बेटे का नाम पूछा है और इसके जवाब में कपिल ने ट्वीट के माध्यम बताया। कपिल ने लिखा धन्यवाद लेकिन अभी नामकरण नहीं हुआ है। तो इससे अब साफ है कि अभी तक कपिल और गिन्नी ने अपने बेटे का नामकरण नहीं करवाया है। मगर कपिल के फैंस उनके बेटे का नाम जानने के लिए काफी ज्यादा उत्सुक हैं और बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।

काजल अग्रवाल के वैक्स स्टैच्यू से नहीं हट रही पति गौतम किचलू की नजर

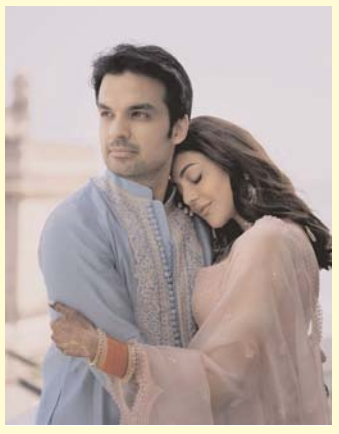

फेमस एक्ट्रेस काजल अग्रवाल ने कुछ महीने पहले ही शादी की हैं। तभी से काजल सुर्खियों में हैं। लेकिन अब काजल एक बार फिर लाइमलाइट में आ गई है और इस बार इसका कारण बना है उनका एक सोशल मीडिया पोस्ट। दरअसल, हाल ही में काजल ने सोशल मीडिया पर एक तस्वीर शेयर की है। इस तस्वीर में काजल के पति गौतम किचलू एक नहीं बल्कि दो- दो काजल के साथ नजर आ रहे हैं। काजल अग्रवाल सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं। ऐसे में काजल कई तस्वीरें और वीडियो भी शेयर करती रहती हैं। हाल ही में काजल ने जो तस्वीर शेयर की है उसमें उनके पति गौतम किचलू के साथ काजल भी नजर आ रही हैं। तस्वीर में एक काजल नहीं बल्कि दो-दो काजल हैं। वो इसलिए क्योंकि इस तस्वीर में एक है काजल अग्रवाल और एक है उनका वैक्स स्टैच्यू। काजल ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट के जरिए एक तस्वीर शेयर की है। इस तस्वीर में गौतम अग्रवाल काजल के वैक्स स्टैच्यू और असली काजल दोनों के बीच खड़े हैं। लेकिन गौतम की नजर है कि काजल के चेहरे से हट ही नहीं रही। इस तस्वीर के साथ काजल ने लिखा, एक साल पहले ये वैक्स स्टैच्यू लॉन्च हुआ था। गौतम किचलू को पूरी दुनिया में लॉन्च होने से पहले देखने को मिला। उन्होंने 4 तारीख को कुछ घंटों के लिए सिंगापुर के लिए उड़ान भरी, ताकि वो मेरे सबसे बड़े पल के लिए वहां पहुंच सकें और 5 की सुबह उन्हें अपने वर्क कमिटमेंट के लिए जर्मनी पहुंचना था। कौन जानता था कि महामारी इस तरह से जीवन बदल देगी। बात करें काजल के वैक्स स्टैच्यू की तो एक्ट्रेस के वैक्स स्टेच्यू को वन शोल्डर डिटेलिंग वाला सिक्वन गाउन पहनाया गया है। ये हूबहू काजल अग्रवाल की तरह ही नजर आ रहा है।

सर्दियों में लें गर्मा-गर्म चीज एंड वेजिटेबल सूप पीने का मजा

सर्दियों में हरी सब्जियों ज्यादा मिलती है। ऐसे में ठंड से बचने व हैल्दी रहने के लिए चीज एंड वेजिटेबल सूप बनाकर पीना बेस्ट आइडिया है। यह सूप बच्चे हो या बड़े हर किसी को पसंद आएगा। तो आइए जानते हैं इसे बनाने की रेसिपी...

सामग्री: आलू- 1 कप (कटे हुए), ब्रोकली- 1 कप (कटी हुई), गाजर- 1 कप (कटी हुई), काली मिर्च- स्वादानुसार, मक्खन- 2 बड़े चम्मच, वेजिटेबल स्टॉक- 2 कप, बीन्स- 1 कप (कटा हुआ), मोजरेला चीज- 1/2 कप, फ्रेश क्रीम- 1/2 कप, मैदा- 4 कप, हरा धनिया- 2 बड़े चम्मच(कटा हुआ), नमक- स्वादानुसार, पनीर क्यूब्स- 5 बड़े चम्मच (गार्निश के लिए)

विधि:

1. सबसे पहले पैन में मक्खन पिघला लें।
2. अब इसमें मैदा डालकर सुनहरा होने तक भूनें।
3. सभी सब्जिया डालकर 3-4 मिनट तक फ्राई करें।
4. अब इसमें वेजिटेबल स्टॉक डालकर 15-20 मिनट तक सब्जियों को नरम होने तक पकाएं।
5. सब्जियों के पकने पर इस पर मोजरेला चीज डालकर मेल्ट करें।
6. फिर इसमें हरा धनिया, काली मिर्च, फ्रेश क्रीम और नमक डालकर 5 मिनट तक पकने के लिए रख दें।
7. तैयार सूप को बाउल में निकाल कर पनीर क्यूब्स से गार्निश करके गर्मा-गर्म सर्व करें।

रोजाना खाएं ये सुपर फूड्स, आसपास भी नहीं फटकेगा कैंसर

डब्लूएचओ के आंकड़ों के मुताबिक, पिछले 5 सालों से करीब 22 लाख से ज्यादा लोग अलग-अलग तरह के कैंसर से जूझ रहे हैं और यह आंकड़ा बढ़ता ही जा रहा है। भारतीय महिलाओं में होने वाला सबसे आम कैंसर, ब्रेस्ट व सर्वाइकल है। कैंसर का सीधा कनैक्शन आपके लाइफस्टाइल हैं जिसमें डाइट का सबसे अहम रोल है। खाने की कई चीजें कैंसर बढ़ाने के लिए जिम्मेदार है।

अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड व प्रोसेस्ड फूड इनका सबसे बड़ा कारण

1. शोध के अनुसार, अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड यानि पैकेट में आने वाली बंद चीजें जैसे ब्रेड,मिठाइयां नमकीन स्नैक्स चिप्स, कैंडी, सोडा, शुगर ड्रिंक्स, बंद पैकेट में बिकने वाला प्रोसेस्ड मीट, फास्ट फूड बर्गर, वो चीजें जिसमें शुगर, तेल या फैट ज्यादा हो ।
2. शराब सिगरेट और तंबाकू का सेवन करने से भी कैंसर का खतरा बढ़ता है। इनमे ऐसे कैमिकल पाए जाते हैं जो व्यक्ति के डीएनए को डैमेट कर शारीरिक क्षमता पर बुरा असर डालते हैं।

मोटापा भी कहीं ना कहीं कैंसर का खतरा बढ़ाता है। जिन लोगों का वजन ज्यादा होता है उन्हें टाइप-2 डायबिटीज, हृदय रोग और कैंसर का आदि का खतरा अधिक रहता है।

कुछ सुपरफूड्स जिन्हें खाकर आप कैंसर से बचे रह सकते हैं।

लहसुन, टमाटर, गाजर, पालक, साबुत अनाज, हल्दी, करेला, ग्रीनटी, बेरीज, स्ट्रॉबेरी ब्लैक रसबेरी, कमल ककड़ी, अनार, ब्रोकोली, अलसी के बीज आदि कैंसर को जन्म देने सैल्स का खात्मा करते हैं इन्हें अपनी डाइट में शामिल करना ना भूलें।

याद रखें कि हैल्दी लाइफस्टाइल के जरिए ही आप इस बीमारी को मात दे सकते हैं।